अणुव्रत

अहिंसक-नैतिक चेतना का प्रतिनिधि पाक्षिक

वर्ष : 57 अंक : 03 ■ 01-15 दिसम्बर, 2011

संपादक
महेन्द्र जैन

प्रबन्ध संपादक
प्रदीप संचेती

सम्पर्क सूत्र
अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, 210,
दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली--110002
दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963
e-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

संपादक-सम्पर्क
अर्हम्, 118, कैलाशपुरी
टोंक रोड़, जयपुर-302018
मो.: 09828158454
e-mail : mahendrajain3@rediffmail.com

सदस्यता शुल्क :

वार्षिक	: रु. 300
त्रैवार्षिक	: रु. 700
दस वार्षिक	: रु. 2000

विज्ञापन सहयोग :

आवरण पृष्ठ चतुर्थ 'रंगीन'	: रु. 20,000
आवरण पृष्ठ 2 व 3 'रंगीन'	: रु. 10,000
साधारण पृष्ठ 'पूरा'	: रु. 5,000
साधारण पृष्ठ 'आधा'	: रु. 3,000

इस अंक में.....

■ **दिशा-बोध**
-- धर्मयुक्त हो हमारा व्यवहार — *आचार्य महाश्रमण* — 3

■ **जीवन-दर्शन**
-- गीता में अनासक्त योग — *आचार्य महाप्रज्ञ* — 5

■ **अणुव्रत की बात**
-- आचार्य तुलसी और पं. जवाहरलाल नेहरू की विशेष वार्ता — *साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा* — 8

■ **मन्थन**
-- संस्कृति एवं मानव-मूल्यों का अर्थशास्त्र — *डॉ. राजेश कुमार व्यास* — 11
-- ध्यान से फलित होती है प्रामाणिकता — *मुनि किशनलाल* — 14
-- क्या हम वास्तव में शिक्षित हो पाये हैं? — *सीताराम गुप्ता* — 16

■ **प्रेरणा के प्रतिमान**
-- तकनीक और तकदीर के सिकन्दर : स्टीव जॉब्स — *अणुव्रत डेस्क* — 18

■ **जीने की कला**
-- कुछ क्षण स्वयं के साथ जीएं — *डॉ. साध्वी परमयशा* — 21
-- समय की पहरेदारी : जीवन की रखवाली — *साध्वी स्वर्णरेखा* — 23

■ **कहानी**
-- हार-जीत — *मधुबाला शर्मा* — 25

■ **बाल-वाटिका**
-- राजा शेरसिंह का न्याय (कहानी) — *सत्यनारायण भटनागर* — 27

■ **काव्य**
-- अहिंसा खूब भायेगी — *अब्दुल जब्बार* — 29

■ **व्यंग्य**
-- जीवन का एक सुखी दिन — *श्रीलाल शुक्ल* — 30

■ **विविध**
-- राष्ट्र चिन्तन — 15
-- अणुव्रत-लेखकों का सम्मान — 22
-- झाँकी हिन्दुस्तान की — 28
-- पाठक-दृष्टि — 29
-- समाचार-सार — 31
-- अणुव्रत गति-प्रगति — 33-40

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से सम्पादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

सद्प्रवृत्ति है जीवन की सुन्दरता....

जीवन-रथ के दो पहिए हैं—प्रवृत्ति और निवृत्ति। कर्म और अकर्म। इष्ट का स्वीकार, अनिष्ट का अस्वीकार। व्यक्ति जीवनभर प्रवृत्ति करता है। कभी अच्छी, कभी बुरी। यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रवृत्ति ही जीवन है। जैसा मन को भाता है, वह वैसा ही करता है, जो नहीं सुहाता उसे छोड़ देता है। धर्मशास्त्र निवृत्तिधर्म अपनाने का मार्ग बताते हैं, संसार और शरीर की सारी प्रवृत्तियों का त्याग करते हुए मुक्ति की ओर बढ़ना श्रेयस्कर माना गया है; किन्तु इससे भी पहले प्रवृत्तिधर्म की अनिवार्यता को स्वीकार किया गया है। और, यह भी सही है कि बिना कर्म के अकर्म की दिशा में बढ़ना असम्भव है, अतः कर्म अवश्य करते रहना चाहिए।

प्रवृत्ति दो प्रकार की हो सकती है— उद्देश्यप्रधान और उद्देश्यहीन। हितकर-अहितकर। अनिवार्य-अनावश्यक। प्रवृत्तियों के आधार हैं—हमारे मनोभाव, इच्छाएं, परिवेश और प्रसंग। सत् और असत् प्रवृत्तियों का निर्धारण हम स्वयं भलीभांति कर सकते हैं। हमें अपने कर्म और कर्त्तव्य के बारे में हर घड़ी जागरूकता रखनी होगी, अन्यथा न केवल हमारे स्वयं के लिए अपितु अपने परिवार, समाज और देश के लिए भी हम अपनी असद् प्रवृत्तियों से संकट उत्पन्न कर सकते हैं। जीवन की सुन्दरता खो सकते हैं। निराशा और कुंठाओं से घिरकर अमानवीय प्रवृत्तियों में लिप्त हो सकते हैं। उद्देश्य के साथ की जाने प्रवृत्ति ही निवृत्ति का आधार होती है। सद्प्रवृत्ति ही जीवन की सुन्दरता है।

सत् और असत् के संघर्ष से घबराकर अपने कर्तव्य से विमुख होना कोई अच्छी बात नहीं है, अपितु अपनी दृष्टि, वृत्ति और प्रवृत्ति को उद्देश्यप्रधान बनाना अधिक आवश्यक है। कर्मयोगी श्रीकृष्ण ने गीता में इससे भी बढ़कर एक बात और कही है कि हम अपने कर्तव्यों का पालन पूर्ण निष्काम भाव से करें। न कर्म में और न उसके फल में आसक्ति रखें। निवृत्ति का अर्थ भी यही है कि कर्म के फल की आसक्ति से निवृत्त रहें। जीवन में प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों का संतुलन आवश्यक है। जिस प्रकार कर्म करने का महत्त्व है उसी प्रकार 'क्या नहीं करना' तथा 'कब नहीं करना' का विवेक भी आवश्यक है।

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय मनीषा का दिव्य ग्रन्थ है। एक अनुपम जीवन-ग्रन्थ है जो हमें पलायन से पुरुषार्थ की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। गीता जयन्ती (मार्गशीर्ष शुक्ल 11 – 6 दिसम्बर) पर परम दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ का लेख 'गीता में अनासक्त योग' अणुव्रत के इस अंक की विशेष उपलब्धि है।

पिछले दिनों कम्प्यूटर-क्रान्ति के महान् वैज्ञानिक स्टीव जॉब्स का निधन हो गया। उनके जन्म से उनके अन्तिम समय तक की कहानी सचमुच रोमांचक है। कठिनाइयों पर विजय पाते हुए, भाग्य को अपने पुरुषार्थ से परास्त करते हुए, कैंसर की प्राणलेवा बीमारी में भी अनवरत कर्म करते हुए, दुनिया को बहुत कुछ देकर पूरे आत्मस्थ भाव से वे दुनिया से विदा हो गये। तकनीक और तकदीर के सिकन्दर - स्टीव जाब्स की कहानी भी हमारे पाठकों को अवश्य प्रेरणादायी लगेगी।

अणुव्रत आन्दोलन असत् प्रवृत्तियों से निवृत्त होकर श्रेष्ठ मानव बनने का व्यावहारिक दिशा-बोध देता है। प्रबुद्ध जनों और राष्ट्र नायकों ने इसको मानव धर्म की संज्ञा दी है, साथ ही राष्ट्र-विकास के कारगर उपाय के रूप में मान्य किया है। आज से 60 वर्ष पूर्व हमारे राष्ट्रनिर्माता पं. जवाहरलाल नेहरू एवं अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी की प्रथम बार भेंट हुयी। दोनों महापुरुषों ने अणुव्रत को व्यापक बनाने पर गहन चिन्तन किया। इस अंक में उस ऐतिहासिक वार्तालाप की संक्षिप्त झलक प्रस्तुत है। इसके साथ-साथ अन्य चिन्तनपरक आलेख, रोचक कहानियाँ आदि लेकर यह अंक आपके हाथों में पहुँच रहा है।

'अणुव्रत' आपका प्रिय पत्र ही नहीं प्रिय-अभिन्न बने, यह हमारा विनम्र प्रयास है; पर यह तभी सम्भव हो सकता है जब आप भी अपने विचार हमें अवगत कराते रहें,

महेन्द्र जैन

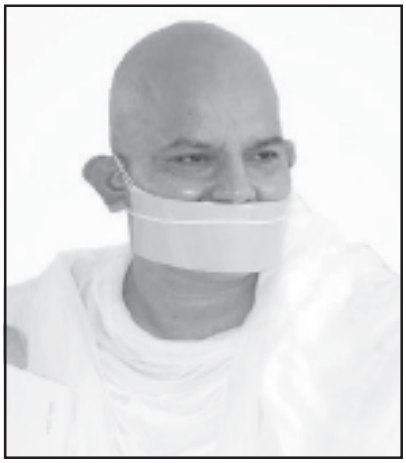

धर्मयुक्त हो हमारा व्यवहार

● आचार्य महाश्रमण ●

आर्हत वाङ्मय का एक सुन्दर सूक्त है–**धम्मज्जियं च ववहारं**–आदमी को धर्मयुक्त व्यवहार करना चाहिए। जो व्यवहार मनीषियों या महान् लोगों द्वारा आचीर्ण है, उसको करने वाला व्यक्ति कभी गर्हा (अहंकार) को प्राप्त नहीं होता। जहां सामूहिक जीवन होता है वहां व्यवहार भी आवश्यक होता है। संस्कृत शब्दकोश में दो शब्दों का प्रयोग किया गया है– समज और समाज। कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र ने इन दोनों शब्दों का अन्तर बताते हुए लिखा है–'समजस्तु पशूनां स्यात् समाजस्त्वन्यदेहिनाम्।' पशुओं के समूह को समज कहा गया और मनुष्यों के समूह को समाज कहा गया। जहां समज है वहां व्यवहार जैसी सम्भवतः कोई बात नहीं होती; किन्तु जहां समाज है वहां परस्पर व्यवहार निभाना अनिवार्य हो जाता है।

हम व्यवहार के धरातल पर देखें, मजदूर का काम मालिक से चलता है और मालिक का काम मजदूर से चलता है। मालिक को मजदूर से श्रम मिलता है और मजदूर को मालिक से वेतन मिलता है। व्यक्ति भोजन करता है। वह रोटी खाता है। यदि चिन्तन किया जाए तो पता चलता है कि एक रोटी को तैयार करने में कितने व्यक्तियों का समय और श्रम लगता है तब वह रोटी खाने योग्य बनती है। सबसे पहले किसान ने खेती की। वर्षा, धूप व प्रकृति ने सहयोग किया। अनाज उत्पन्न हुआ फिर उसकी कटाई हुई। किसी के द्वारा वह अनाज मण्डी में लाया गया। व्यापारी ने उसे बेचा। ग्राहक ने अनाज खरीदा। किसी ने अनाज पीसा। किसी ने उसकी रोटी बनाई। तब वह किसी के खाने के काम आती है। आदमी कपड़ा पहनता है। उस कपड़े के निर्माण में, यानी कपास से कपड़ा बनने तक की प्रक्रिया में कितने ही व्यक्तियों का श्रम लगता है, तब वह किसी के पहनने के काम आता है। इसका अर्थ यह हुआ कि आदमी का जीवन सापेक्षता पर आधारित है। जहां एक-दूसरे के सहयोग से काम चलता है वहां आदमी में यह चेतना जाग्रत हो कि हमारा व्यवहार धर्मार्जित हो, धर्मयुक्त हो ताकि शान्ति व अमन-चैन के साथ वह अपना जीवनयापन कर सके।

जहां पारस्परिक व्यवहार मृदुता व हितैषितापूर्ण होता है, वही धर्मार्जित व्यवहार हो सकता है, किन्तु जहां कठोर व्यवहार होता है, वहां धर्मार्जित व्यवहार को बनाये रखने में बाधा उत्पन्न हो सकती है। इसलिए धर्मार्जित व्यवहार के लिए तीन सूत्र बहुत महत्त्वपूर्ण हैं–

1. अनाग्रही चेतना का विकास
2. परार्थ चेतना का विकास
3. हित चेतना का विकास

अनाग्रही चेतना का विकास

धर्मयुक्त व्यवहार के लिए अनाग्रह की चेतना का विकास बहुत आवश्यक होता है। किन्तु; कहीं-कहीं आग्रह भी काम का होता है। जैसे– एक साधु का यह नियम होता है कि वह कभी सावद्य कार्य नहीं करता। इसके प्रति तो उसका आग्रह होना ही चाहिए कि चाहे कुछ भी हो जाए, पर मैं कभी पापकारी कार्य नहीं करूँगा। इस आग्रह की तुलना श्रद्धा, निष्ठा और नियम के प्रति कट्टरता के साथ की जा सकती है; किन्तु वह कट्टरता वांछनीय नहीं होती जिसके द्वारा हिंसा आदि को महत्त्व दिया जाता है। आदमी एक बात को सत्य मानकर स्वीकार करता है, पर जब वह असत्य प्रतीत होने लगे तो उसे छोड़ने में संकोच भी नहीं होना चाहिए।

घर-परिवार में खान-पान सम्बन्धी आग्रह भी चलता है। एक व्यक्ति यह आग्रह करे कि अमुक प्रकार का भोजन ही बनाना होगा, तो परिवार में अशान्ति हो जाती है। घर में वह अकेला तो है नहीं, सबकी रुचि का ध्यान रखना होता है। कभी एक व्यक्ति की रुचि का खाना बन सकता है तो कभी दूसरे की रुचि का खाना भी बन सकता है। इन बातों में अनाग्रह होना चाहिए। कभी-कभी आदमी बिना कारण ही आग्रह कर लेता है। एक किसान ने कहा– 'यदि कोई व्यक्ति पचास और पचास का जोड़ सौ सिद्ध कर दे तो मैं उसे अपनी भैंस दे दूंगा।' किसान की पत्नी ने घबराकर कहा– 'कैसी पागलपन की बात करते हो?' किसान ने कहा– 'घबराने की जरूरत नहीं है। पचास और पचास सौ ही होते हैं यह तो मैं भी जानता हूं, किन्तु मैं किसी के सामने 'हाँ' करूंगा तभी तो भैंस लेगा। मैं तो 'ना' ही करता रहूंगा कि पचास और पचास सौ होते ही नहीं हैं, फिर वह भैंस कैसे लेगा?' जो इस प्रकार का मिथ्या आग्रह करता है वह कभी सत्य का नवनीत

प्राप्त नहीं कर सकता। उसे तो केवल खट्टी छाछ ही मिलती है। यह खट्टी छाछ धर्मार्जित व्यवहार की बाधक भी बन सकती है। इस बाधा को दूर करने के लिए व्यक्ति आग्रह वृत्ति को छोड़े और अनाग्रह की चेतना का विकास करे।

परार्थ चेतना का विकास

सबका भला हो, कल्याण हो, शुभ हो– जहां इस प्रकार का चिन्तन किया जाता है वहां शान्तिपूर्ण अस्तित्व कायम रह सकता है; किन्तु जहां केवल अपने स्वार्थ के लिए कार्य किया जाता है, वहां शान्त सहवास में बाधा उत्पन्न हो जाती है। सभी सम्बन्धों को गौण करके जो स्वार्थदृष्टि को प्रमुखता देता है वह शांति को भंग करने वाला और पग-पग पर विषमता को उत्पन्न करने वाला होता है। इस स्वार्थी दुनिया में जिससे स्वार्थ सिद्ध होता है, उसके लिए नियम कुछ अलग होते हैं और जिससे स्वार्थ सिद्ध नहीं होता, उसके लिए नियम कुछ भिन्न होते हैं। किन्तु; जहां स्वार्थ गौण होता है, वहां सबके लिए समान नियम होते हैं, क्योंकि वहां सबके प्रति विश्वास होता है। वे व्यक्ति महान् होते हैं, जो स्वार्थ से ऊपर उठकर परार्थ के लिए सोचते हैं, कार्य करते हैं। राजर्षि भर्तृहरि ने 'नीति-शतकम्' में इन्हीं तथ्यों को स्पष्ट करते हुए लिखा है :

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः
स्वार्थं परित्यज्य ये,
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः
स्वार्थाविरोधेन ये।
तऽमी मानुषराक्षसाः परहितं
स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं
ते के न जानीमहे।।

कुछ सज्जन पुरुष ऐसे होते हैं, जो अपना हित छोड़कर दूसरों का कार्यसाधन करते हैं। जो अपने हित की रक्षा करते हुए दूसरों के लिए उद्योग करते हैं, वे साधारण लोग हैं। जो स्वार्थ के लिए परहित को नष्ट करते हैं, वे नर-पिशाच हैं; किन्तु जो बिना कारण दूसरों के हित को नष्ट करते हैं, वे कौन हैं? स्वार्थ से परमार्थ की दिशा में बढ़ने के लिए आवश्यक है– परार्थ चेतना का विकास। जहां दूसरे के हित की चिन्ता होती है वहीं शान्त सहवास होता है।

हित चेतना का विकास

यह विश्व बहुत बड़ा है। इस विशाल विश्व के सभी प्राणियों का हित-कार्य साधा जा सके, यह असम्भव लगता है; किन्तु कम-से-कम अपने साथ रहने वालों का हित करने का प्रयास किया जा सकता है। जब यह हितैषिता की भावना प्रगाढ़ बनती है तो शान्त सहवास रह सकता है। जहां अनेक व्यक्ति साथ रहते हैं, किन्तु एक-दूसरे का सहयोग नहीं करते, वहां अशांति हो जाती है।

एक आचार्य के अनेक शिष्य थे। उनमें से कोई एक शिष्य बीमार हो गया। बीमार व्यक्ति को सेवा और सहानुभूति की आवश्यकता होती है। सेवा और सहानुभूति के अभाव में व्यक्ति का मन विचलित हो जाता है। वह मुनि सम्भवतः किसी गम्भीर/छूत की बीमारी से आक्रांत था, इसलिए अन्य साधुओं ने उसकी उपेक्षा करनी शुरू कर दी। उसके पास उठना-बैठना, जाना-आना, बातचीत करना कम कर दिया। उस रुग्ण मुनि का मन अस्थिर हो गया। उसने सोचा– कुछ ठीक हो जाऊं, फिर इस संघ से अलग हो जाऊंगा। जब आचार्य को इस स्थिति का पता चला तो वे तत्काल उस मुनि के पास आए और पूछा– 'वत्स! क्या बात है?' शिष्य–'गुरुदेव! मैं बीमार हो गया। ये सन्त लोग न मेरी विशेष सेवा करते हैं, न मेरे पास बैठते हैं, न बातचीत करते हैं और न मेरे साथ आहार करते हैं। मेरा मन असमाधिस्थ हो गया है। मैं साधु-संस्था से मुक्त होना चाहता हूं। आचार्य ने सोचा, एक शिष्य सेवा-सहयोग और आत्मीयता के अभाव में संघ से अलग हो, यह मेरे लिए चिन्तन का विषय है। गुरु ने कहा– 'वत्स! आज मैं तुम्हारे साथ आहार करूंगा।' यह सुनकर रुग्ण मुनि ने सोचा, जब संघ के सर्वेसर्वा आचार्य मेरे साथ आहार करने के लिए तैयार हैं, इससे बड़ी और बात क्या होगी? अन्य साधुओं को भी बोधपाठ मिल गया। सबका व्यवहार बदल गया। जहां एक व्यक्ति दूसरे के हित की चिन्ता न करे, सुखःदुःख में कोई सहयोग न करे तो फिर एकात्मता भी नहीं रह सकती और आत्मीयता भी समाप्त हो जाती है।

धर्मार्जित व्यवहार के लिए अनाग्रह, परार्थ और हित-चेतना का विकास होना जरूरी है। जहां ये तीनों बातें होती हैं वहां सम्बन्ध अच्छे रह सकते हैं, व्यवहार अच्छा हो सकता है और व्यक्ति शांति के साथ जी सकता है।

तीन नकारात्मक शब्द हैं– अनावेश, अनासक्ति और अनाग्रह। आदमी के लिए यह वांछनीय है कि वह हर परिस्थिति में अनावेश रहने का अभ्यास करे। किंतु, मैं देखता हूं, कि आदमी को कभी-कभी इतना तेज आवेश आता है कि वह अपना आपा खो देता है। विवेक लुप्त हो जाता है और सामने कौन है, यह बात भी अर्थहीन हो जाती है। आदमी को इस दुर्बलता से बचना चाहिए। कठोर बात कहना कोई बुरी बात नहीं होती और अनुशासन की दृष्टि से कभी-कभी कड़वी बात कहीं भी जा सकती है, किंतु कठोर बात भी शांत मन से कहनी चाहिए। बात कहते समय भीतर में आवेश आ जाए तो मानना चाहिए कि जीवन की और कार्य-दक्षता की यह पहली विफलता है। धार्मिक जगत में तो अनावेश का बहुत महत्त्व है। व्यावहारिक जगत में भी अनावेश का महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक परिवार में अनेक लोग साथ रहते हैं, यदि वे आवेशशील हों तो परिवार नरक बन जाएगा। आवेश न करना जीवन की सफलता का एक महत्त्वपूर्ण सूत्र है।

आचार्य महाश्रमण

गीता जयन्ती - मार्गशीर्ष शुक्ल11 (6 दिसम्बर) पर विशेष :

गीता में अनासक्त योग

● आचार्य महाप्रज्ञ ●

''गीता में किसी एक मत का आग्रह नहीं है। उसमें जैन दर्शन के सिद्धांत भी हैं, बौद्ध धर्म के सिद्धांत भी हैं, वैदिक धर्म के सिद्धांत भी हैं। हर किसी को लगेगा कि यह मेरा अपना ग्रंथ है, सत्यांशों का प्रतिपादन करने वाला एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें अध्यात्म के बहुत सारे रहस्य छिपे पड़े हैं।''

सत्य को देश और काल से बांधा नहीं जा सकता। सत्य त्रैकालिक होता है और त्रैकालिक वही होता है, जो देशातीत और कालातीत होता है। जो देश और काल से अविच्छिन्न होता है, एक सीमा में होता है, उसे सत्य नहीं कहा जा सकता। उसे सत्य का सामयिक रूप कहा जा सकता है अथवा सत्याभास कहा जा सकता है।

हम सत्य की मीमांसा करें। वहां कोई भेद नहीं होता। किस संप्रदाय का है, किस मत का है, किसका है ये सारी बातें गौण हो जाती हैं। सत्य सत्य होता है और सबके लिए होता है। हिन्दुस्तान में और विश्व में भी अनेक धर्म-संप्रदाय रहे हैं, जिन्होंने धर्म की अपने-अपने ढंग से व्याख्या की है। धर्म तो कोई दो नहीं होता, अनेक नहीं होता। सत्य भी कोई दो नहीं होता। सत्य सबके लिए एक होता है।

आकाश एक है, एक ही महानगर में हजारों-लाखों घर बन गए, आकाश को बांध लिया। एक आदमी यह मान ले कि मेरे घर में तो आकाश है, दूसरे के घर में नहीं है तो वह मिथ्या-दृष्टिकोण हो जाएगा। आकाश सबके लिए समान है। जिसने जितना उसको घेरा है, वह उतना ही उसको व्याख्यायित करता है। ऐसा ही सत्य का स्वरूप है।

हम भारतीय धर्मों को देखें। वैदिक परंपरा और श्रमण परंपरा दोनों के ग्रंथों का अध्ययन करना जरूरी है। वैदिकों का एक प्रमुख ग्रन्थ है 'गीता'। जैनों का एक प्रमुख ग्रंथ है 'उत्तराध्ययन'। बौद्धों का एक प्रमुख ग्रंथ है 'धम्मपद'। एक सामान्य व्यक्ति धम्मपद, उत्तराध्ययन और गीता इन तीनों का तुलनात्मक अध्ययन कर लेता है तो उसमें सांप्रदायिक उन्माद नहीं आता।

दो तत्त्व हैं धर्म और दर्शन। दर्शन का सिद्धांत भिन्न-भिन्न होता है, किन्तु जहां आचारशास्त्र और धर्म का प्रश्न है, वहां बहुत सारी बातें मिल जाती हैं। गीता में अहिंसा, सत्य, अस्तेय आदि की महिमा बतलाई गई है। जैन धर्म और बौद्ध धर्म में भी उसे आचरणीय माना गया है।

दोनों ओर समस्या

एक बहुत जटिल प्रश्न रहा समाज के सामने या धार्मिक लोगों के सामने। बहुत बड़ी चर्चा इस विषय पर होती रही है कि प्रवृत्ति धर्म अच्छा है या निवृत्ति धर्म? हम कहें कि प्रवृत्ति अच्छी है तो भी समस्या है और कहें कि निवृत्ति अच्छी है तो भी समस्या है। कोरी प्रवृत्ति होगी तो समस्या अधिक उलझ जाएगी। जरूरी है प्रवृत्ति और निवृत्ति का संतुलन। हर प्रवृत्ति के साथ समस्या होती है। गीता का एक बहुत सुंदर पद है

सर्वारंभा हि दोषेन, धूमेनाग्निरिवावृता।

सब आरंभ, सब प्रवृत्तियां दोष सहित हैं। कोई भी प्रवृत्ति ऐसी नहीं है, जिसके पीछे कोई दोष न हो। बहुत सुन्दर उदाहरण दिया है जैसे अग्नि के साथ धुआं निकलता है, वैसे ही आरंभ के साथ, प्रवृत्ति के साथ दोष भी आता है। क्या इसका मतलब यह है कि प्रवृत्ति न करें? यदि प्रवृत्ति को छोड़ दें तो भूखा रहना पड़ेगा। रोटी कहां से आएगी? खेती नहीं हो तो रोटी कहां से आएगी? अगर कुआं नहीं है तो पानी कहां से आएगा? हम प्रवृत्ति को छोड़ नहीं सकते। अगर कपड़ा नहीं बनता है तो आदमी पहनेगा क्या? मकान नहीं बनाता है तो रहेगा कहां? प्रवृत्ति करनी ही पड़ती है जीवन चलाने के लिए, और प्रवृत्ति है सदोष तो फिर क्या करें? क्या प्रवृत्ति न करें?

गीता में कहा गया है **न हि देहभृतां शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः** देहधारी का अकर्म से काम नहीं चलेगा इसलिए कर्म से निवृत्ति मत करो। दूसरी ओर कहा गया प्रवृत्ति सदोष है। आदमी उलझ गया कि क्या करे? दोनों ओर समस्या। प्रवृत्ति में भी समस्या और निवृत्ति में भी समस्या। कर्म में भी समस्या और अकर्म में भी समस्या।

आसक्ति कैसे छूटे?

इस समस्या का बहुत सुंदर समाधान गीताकार ने दिया है प्रवृत्ति करो, काम करो, किन्तु उसमें लिप्त मत बनो, आसक्त मत बनो। यह आचारशास्त्र का एक अच्छा मार्गदर्शन है। आसक्ति होना अलग बात है और कर्म होना अलग बात है। कर्म में आसक्ति होना एक घटना है और कर्म में

अनासक्त रहना, बिल्कुल दूसरी घटना है।

प्रवृत्ति के लिए या जीवन के लिए पांच चीजें हमारे काम में आती हैं रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श। सारा जगत् पंचात्मक है। कहीं भी देखो, या तो शब्द है, रूप है, रस है, स्पर्श है अथवा कोई गंध है। इस समग्र प्रवृत्ति के संदर्भ में अनासक्ति का जो सूत्र दिया है, उसका सुंदर चित्रण इस श्लोक में है

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोप्यस्य, परं दृष्ट्वा निवर्तते।।

प्रश्न आया कि आसक्ति कैसे छूटे? हमारी पांच इंद्रियां हैं और पांच इंद्रियों के पांच विषय। आंख का विषय रूप, कान का विषय शब्द, नाक का विषय गंध, जीभ का विषय रस और त्वचा का विषय स्पर्श। इनकी आसक्ति कैसे छूट सकती है?

महल दिमाग में न रहे

एक संन्यासी अच्छा साधक था। उसकी ख्याति चारों ओर फैली हुई थी। राजा ने जंगल में संन्यासी के दर्शन किए और प्रार्थना की 'प्रभो! महारानी भी आपके दर्शन करना चाहती है, पर हमारी मर्यादा है कि वह प्रासाद से बाहर आ नहीं सकतीं इसलिए आप अंतःपुर में पधारें और महारानी को दर्शन दें।'

संन्यासी ने प्रार्थना स्वीकार कर ली। महारानी को दर्शन दिए, कुछ धर्मोपदेश दिया। राजा बोला 'महाराज! आप आ ही गए हैं तो कुछ दिन यहां ठहरिए।'

संन्यासी ने बात मान ली। वह वहां ठहर गया। एक मास बीत गया। राजा ने सोचा यह तो यहां जम गया है, स्थान छोड़ ही नहीं रहा है। क्या करें? एक दिन राजा बोला 'महाराज! आपको जंगल में रहना अच्छा लगता है, मैं वहां जा रहा हूं, आप भी चलेंगे?' संन्यासी बोला 'अवश्य।'

राजा और संन्यासी जंगल में उसी स्थान पर जा पहुंचे, जहां पेड़ के नीचे संन्यासी बैठता था। संन्यासी अपने स्थान पर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद राजा बोला 'महाराज! मैं तो जा रहा हूं, आप भी मेरे साथ चलेंगे?'

संन्यासी बोला 'अब नहीं जाऊंगा। अब यहीं रहूंगा।'

राजा बोला 'महाराज! मन में एक प्रश्न उभर रहा है। मैं महल में रहता हूं, आप भी महल में रहे। आपमें और मुझमें अंतर क्या रहा?' संन्यासी बहुत गंभीर होकर बोला 'राजन्! इतना ही फर्क है कि मैं महल में रहा और तुम्हारे दिमाग में महल रहता है। इतना-सा अंतर है!'

आप कल्पना करें कि यह कितना बड़ा अंतर है।

अंतर है आवश्यकता और आसक्ति में

महल में रहना जीवन की उपयोगिता है क्योंकि जीवन-यात्रा को चलाना है। दिमाग में महल का रहना आसक्ति है। रोटी खाना, इसका अर्थ है जीवन को चलाना। रोटी का दिमाग में घुस जाना आसक्ति है। जब आम की ऋतु होती है, अनेक लोग आम खाते हैं। एक दिन भी आम नहीं मिलता है तो बड़ी मुश्किल हो जाती है। यह आसक्ति है।

वस्तु का उपयोग करना, यह है जीवन की आवश्यकता और वस्तु का दिमाग में प्रवेश कर जाना, यह है आसक्ति। कपड़ा पहनना है तो वही कपड़ा चाहिए, जो सबसे बढ़िया है। यह चिंतन आसक्ति से उपजता है। उपयोगिता का चिंतन यह है कि तन को आवृत करना है तो जो मिला उसी से आवृत कर लिया।

वस्तु को छोड़ना कठिन है। आसक्ति को छोड़ना कठिनतर और कठिनतम है। बहुत जटिल है कि वह पदार्थ मन से निकल जाए और उसकी आसक्ति छूट जाए।

परम को देखें

प्रश्न है अनासक्ति आए कैसे? हम अनासक्ति की चर्चा तो करते हैं किन्तु आसक्ति छूटे कैसे? गीताकार ने इसका सुंदर समाधान इसी श्लोक में दे दिया

रसवर्जं रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते।

आसक्ति छूटने का एक सुंदर उपाय है परम को देखें। पदार्थ को देखेंगे तो आपकी आसक्ति नहीं छूटेगी, किन्तु आसक्ति बढ़ेगी। आप परम को देखें, जहां आत्मा या परमात्मा है उस ओर देखने लग जाएं, पदार्थ की आसक्ति छूट जाएगी। बढ़िया चीज मिल जाती है तो छोटी चीज की आसक्ति छूट जाती है। जब तक उत्कृष्ट नहीं मिले, तब तक अनुत्कृष्ट में भी आसक्ति बनी रहती है। उत्कृष्ट मिल जाए तो अनुत्कृष्ट की आसक्ति छूट जाती है।

विश्रुत कथा है संन्यासी ने भक्त को वह पारस पत्थर दिया, जिससे लोहा सोना बन जाए। किन्तु भक्त ने यह कहते हुए उसे लौटा दिया 'यह पत्थर मुझे नहीं चाहिए, मुझे तो वह पत्थर दो, जिसे पाकर आपने इसे फेंक दिया।'

वहां होता है आसक्ति का जन्म

रांका और उसकी पत्नी बांका दोनों बड़े साधक थे। एक बार जंगल में जा रहे थे। रास्ते में एक स्थान पर सोना और जवाहरात पड़े थे। रांका ने देखा पत्नी थोड़ी पीछे आ रही है। मन ललचा न जाए। उसने उस पर धूल डाल दी। बांका ने देख लिया। वह बोली 'पतिदेव! अभी तक आपकी आसक्ति छूटी नहीं। आपने धूल पर धूल क्यों डाली? आपने सोचा कि बांका उठा लेगी। मेरे लिए तो यह सोना और यह धूल समान है।'

जब परम दर्शन की बात आती है तब आसक्ति पदार्थ के प्रति होती ही नहीं यह अनुभूत सच है। पूज्य गुरुदेव तुलसी के साथ और स्वतंत्र रूप से भी हमने बहुत यात्राएं कीं। बड़े-बड़े भवनों में रहे, राज्यपाल की कोठी में रहे, राष्ट्रपति भवन में रहे, प्रधानमंत्री के निवास-स्थान में रहे, मुख्यमंत्रियों के आवासों में रहे, बड़े-बड़े उद्योगपतियों के घरों में रहे और झोंपड़ियों में भी रहे, पर कहीं भी मूर्च्छा नहीं बनी। इसलिए नहीं बनी कि हमारे मन में यह चिंतन स्पष्ट रहता यह हमारा नहीं है, मेरा नहीं है। जहां मेरा है, वहां आसक्ति का जन्म होता है।

जन्म से है आसक्ति का संस्कार

आसक्ति-जन्म के दो स्रोत हैं मैं और मेरा। जहां मेरा नहीं है, वहां आसक्ति

पैदा नहीं होती। जो उसमें लिप्त रहता है, उसको पता ही नहीं चलता। यह साधना का सुंदर सूत्र है तुम आत्मदर्शन में लगो, अनुभव करो इस दुनिया में केवल पदार्थ ही नहीं है, पदार्थ से परे भी है। पदार्थ आसक्ति पैदा करेगा। जहां-जहां पदार्थ है, वहां-वहां आसक्ति पैदा होगी। जहां पदार्थातीत स्थिति का अनुभव है, वहां आसक्ति का चक्र टूटेगा। अगर उसका अनुभव नहीं है तो आसक्ति बढ़ती जाएगी।

मनोविज्ञान ने मौलिक मनोवृत्तियों के अनेक वर्गीकरण किए। आखिर एक निष्कर्ष पर पहुंचे। मूल मनोवृत्ति एक ही है, वह है अधिकार की भावना, संग्रह की भावना, परिग्रह की भावना। व्यक्ति हर वस्तु पर अपना अधिकार करना चाहता है। यह चाह आसक्ति पैदा करती है। वस्तु का काम है आसक्ति पैदा करना। आज बच्चों में टी.वी. के प्रति कितनी आसक्ति बढ़ी है। आठ-आठ घंटा, दस-दस घंटा टी.वी. देखते हैं। उससे आंखें खराब होती हैं, अध्ययन में हानि होती है, गंभीरता नहीं आती। इस आसक्ति का कारण क्या है? शब्द, रूप और रस का काम है आसक्ति पैदा करना, अपनी ओर खींचना। जब तक यह परम दर्शन की बात नहीं आएगी, आसक्ति के चक्र को तोड़ा नहीं जा सकेगा। जब तक यह पदार्थवादी दृष्टिकोण रहेगा, भौतिकता का दृष्टिकोण रहेगा, आसक्ति बढ़ती जाएगी। जिस दिन परम-दर्शन की बात आएगी, सोने में भी गंध आने लग जाएगी।

बुद्धि से परे

प्रश्न हुआ परम क्या है? इसकी भी सुंदर व्याख्या उपलब्ध है

इंद्रियाणि पराण्याहु, इन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिः, यो बुद्धेः परतस्तु सः।।

– इंद्रियां हैं। इंद्रियों से आगे है मन। मन से आगे है बुद्धि। जो बुद्धि से परे है, वह हमारा परम है इंद्रियातीत, मनोतीत और बुद्धि से अतीत। उसे इंद्रियों से नहीं देखा जा सकता। वह मन का विषय भी नहीं बनता, बुद्धि का विषय भी नहीं बनता। वह बनता है अतीन्द्रिय-चेतना का विषय। इस प्रकार अध्यात्म की दृष्टि से गीता का अध्ययन करें तो उसमें बहुत सूत्र मिलेंगे। किन्तु मुझे लगता है कि गीता को पढ़ने वाले लोग भी गीता में जो अध्यात्म के अनुभव हैं, उन पर कम ध्यान देते हैं।

अपेक्षित है प्रयोगात्मक शिविर

एक बार हम लोग अहमदाबाद में थे। कुछ गीतापाठी हमारे पास आए और बोले 'हम आपका गीता पर प्रवचन कराना चाहते हैं।' मैंने कहा 'आप चाहें तो केवल प्रवचन नहीं, गीता पर एक प्रयोगात्मक शिविर करें। किस प्रकार चेतना का रूपांतरण किया जाए, इस पर एक शिविर हो।' गीता में इतने अच्छे प्रयोग हैं, किन्तु स्थिति यह है कि प्रयोग कोई करता नहीं। केवल प्रचवन चलता है। प्रवचन अच्छी बात है; किन्तु उसमें जो प्रयोग हैं, किस प्रकार प्राण में अपान की आहुति दी जाए? किस प्रकार मन की चंचलता को कम किया जाए? किस प्रकार काम-क्रोध से निवृत्त हुआ जाए? ये जो गीता में आचारशास्त्र और अध्यात्म-शास्त्र के विषय हैं, उन पर कभी प्रयोगात्मक शिविर होना चाहिए।

अध्यात्म का सबसे बड़ा रहस्य है अनासक्ति। आपका पदार्थ के साथ संबंध कहां जुड़ता है? जिस दिन आपने यह मान लिया – यह पदार्थ मेरा है, उस दिन आपने आसक्ति का बीज बो दिया। पदार्थ तो पदार्थ है। वह आपका कहां है? पदार्थ की दुनिया अलग है और चेतना की दुनिया अलग।

उस समय हमारा यात्रा का क्रम निश्चित हो चुका था, इसलिए शिविर नहीं हो सका। जैसे प्रेक्षाध्यान के प्रयोगात्मक शिविर होते हैं, वैसे ही गीता के आधार पर प्रयोगात्मक शिविर चले, एक सप्ताह तक प्रयोग करें तो पता चलेगा कि आसक्ति क्या है? आसक्ति को कैसे छोड़ा जा सकता है? अनासक्ति को कैसे विकसित किया जा सकता है?

छिपे हैं अध्यात्म के रहस्य

गीता में कुछ महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सच्चाईयां हैं। जहां सत्य है, वह हमारा है। हम भेद नहीं करते। क्योंकि हमें अनेकांत का दर्शन मिला है। उसका हार्द है कि सर्वत्र अच्छाइयां हैं, तुम अच्छाई को पकड़ना सीखो। सत्यांश सब जगह हैं। पूर्ण सत्य तो हमारी चेतना जागृत होगी, तब मिलेगा। किन्तु शब्द में जो सत्यांश है, सापेक्षता है, उसको पकड़ो। इससे न तो विवाद बढ़ेगा, न सांप्रदायिक उन्माद बढ़ेगा, न कोई मिथ्या दृष्टिकोण बनेगा। इस दृष्टि से मैं देखता हूं तो मुझे लगता है कि गीता एक उत्कृष्ट ग्रन्थ है।

पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने मुझे कई बार कहा 'तुम गीता पर भाष्य लिखो।' मैं लिख नहीं सका। ऐसा व्यस्तताओं के कारण हुआ। मैं आचारांग सूत्र का संस्कृत में भाष्य लिख चुका हूं और वह प्रकाश में भी आ गया है। इच्छा है गीता पर भी कभी भाष्य लिखूं। गीता में किसी एक मत का आग्रह नहीं है। उसमें जैन दर्शन के सिद्धांत भी हैं, बौद्ध धर्म के सिद्धांत भी हैं, वैदिक धर्म के सिद्धांत भी हैं। हर किसी को लगेगा कि यह मेरा अपना ग्रंथ है, सत्यांशों का प्रतिपादन करने वाला एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें अध्यात्म के बहुत सारे रहस्य छिपे पड़े हैं।

आप यह न मानें कि जिस मकान में रहता हूं, वह मेरा घर है। अपना घर तो अपनी आत्मा और अपनी चेतना ही है। जिस घर को आप अपना मान रहे हैं, वह ईंटों का, पत्थरों का, सीमेंट का बना हुआ है। आपका कहां है? वह तो पराया घर है, जिसको आपने अपना मान लिया। जहां से आपने अपना माना, वहीं से आसक्ति का क्रम शुरू हो गया। इसका गीता में बहुत सुंदर चित्रण है, यदि कोई उस रहस्य को समझ सके। यह अनासक्ति का दर्शन जीवन व्यवहार में आए तो मनुष्य को अनेक समस्याओं से मुक्ति का मंत्र उपलब्ध हो सकता है। ■

आचार्य तुलसी और पं. जवाहरलाल नेहरू की विशेष वार्ता

● साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ●

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन 1947 में किया। दिल्ली चातुर्मास के बाद प्रस्थान से पूर्व, देश के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से नवम्बर 1951 में उनके निवास स्थान त्रिमूर्ति भवन में अणुव्रत व तत्कालीन समस्याओं पर पहला संवाद हुआ। उस ऐतिहासिक मिलन-वार्ता को संक्षिप्त प्रस्तुति दे रही हैं महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाश्री। - सं.

राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जितने बड़े विद्वान थे, उतने ही दृष्टिसम्पन्न थे। अध्यात्म और धर्म के प्रति उनके मन में प्रगाढ़ आस्था थी। देश की जनता का नैतिक स्तर उन्नत हो, यह उनकी भावना थी। आचार्य तुलसी के साथ उनके सम्पर्क और अणुव्रत के असाम्प्रदायिक स्वरूप की जानकारी के बाद यह बात उनकी समझ में आ गई थी कि अणुव्रत का अभियान नितान्त एक नैतिक अभियान है। यह देश के हित में है और मानवता के हित में है। उनकी इच्छा थी कि इस अभियान को व्यवस्थित रूप से पूरे देश में चलाया जाए। इसके लिए वे प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के साथ आचार्यश्री का मिलन आवश्यक समझते थे।

एक दिन बातचीत के मध्य उन्होंने कहा – 'आचार्यजी! पण्डित नेहरू से आप मिले या नहीं?'

आचार्यश्री ने राष्ट्रपति से कहा – नहीं, पण्डितजी से हमारा कोई परिचय नहीं है। उनके बारे में हमने सुना है कि धर्म और धर्मगुरुओं में उनकी कोई रुचि नहीं है। वे न धर्म की चर्चा करते हैं और न धर्मगुरुओं से मिलते हैं। न हमने उनसे मिलने का प्रयास किया और न उनकी ओर से हमें कोई संवाद मिला। आप हमारे काम में रस लेते हैं, इसलिए आपसे मिलकर हमें प्रसन्नता होती है।

राष्ट्रपति – आचार्यश्री! पण्डितजी के बारे में आपकी ऐसी धारणा हो सकती है, पर वे बहुत अच्छे विचारों के व्यक्ति हैं। उनसे आपका मिलना आवश्यक है। आप अणुव्रत का जो काम कर रहे हैं, वह उनके ध्यान में आ जाए तो आपको काम करने में सुविधा रहेगी। मैं चाहता हूं कि आप एक बार उनसे अवश्य मिलें।

आचार्यश्री – आप आवश्यक समझते हैं तो हमें पण्डितजी से मिलने में कोई आपत्ति नहीं है। इसमें माध्यम आपको ही बनना होगा; क्योंकि उनके साथ हमारा कोई परिचय नहीं है।

राष्ट्रपति – ठीक है, मैं आपके और उनके बीच सम्पर्क स्थापित कर दूंगा।

राष्ट्रपति महोदय ने आचार्यश्री का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री को पत्र लिखा– 'प्रिय प्रधानमंत्रीजी! आचार्य तुलसी से आपका मिलना देश के हित में होगा। अभी वे दिल्ली में आए हुए हैं। संभव हो तो इस पर विचार करें।'

प्रधानमंत्री को राष्ट्रपति का पत्र मिला। उन्होंने उसके उत्तर में लिखा– 'प्रिय राष्ट्रपतिजी! मुझे आचार्य तुलसी से मिलकर प्रसन्नता होगी। मैं इन दिनों बहुत व्यस्त हूं। इसलिए आचार्यजी यदि प्रधानमंत्री निवास पर दर्शन दें तो बड़ी कृपा होगी।'

राष्ट्रपति के निजी सचिव चक्रधरशरण बाबू नया बाजार स्थित अणुव्रत भवन आए। उन्होंने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के बीच हुए पत्र-व्यवहार की जानकारी देते हुए कहा – 'राष्ट्रपति महोदय की इच्छा है कि आप प्रधानमंत्री-निवास पधारें। प्रधानमंत्री ने आपके साथ भेंट के लिए कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा के दिन सायंकालीन सात बजे का समय निश्चित किया है।' चक्रधर बाबू की बात सुनकर आचार्यश्री बोले– हम लोग पदयात्री हैं। पदयात्रा करते हुए हम गांव-गांव, नगर-नगर और घर-घर जाते रहते हैं। इसी क्रम में हम प्रधानमंत्री-निवास भी जा सकते हैं। किन्तु, प्रधानमंत्री ने जो समय दिया है वह हमारे अनुकूल नहीं है। कार्तिकी पूर्णिमा को हमारा चातुर्मास सम्पन्न हो रहा है, इसलिए हम आवास-स्थल छोड़कर नई दिल्ली नहीं जा सकते। दूसरी बात–रात्रि के समय हम बाहर नहीं जाते। इसलिए सात बजे पहुंचना भी संभव नहीं। रातभर प्रधानमंत्री की कोठी पर रहना भी कठिन है। अतः मिलन का कोई दूसरा समय निर्धारित करना होगा।

चक्रधर बाबू ने आचार्यश्री से हुई पूरी बात की जानकारी राष्ट्रपति महोदय को दे दी। राष्ट्रपति ने पुनः प्रधानमंत्री से सम्पर्क किया। उनसे दूसरा समय मांगा गया तो वे बोले–आचार्यजी को जिस दिन जिस समय यहां आने की सुविधा हो, वही समय रखा जा सकता है। चातुर्मास के बाद दिल्ली में अधिक समय ठहरने की संभावना नहीं थी, इसलिए मिगसर कृष्णा प्रतिपदा के दिन मध्याह्न में ढाई बजे का समय निश्चित किया गया।

प्रधानमंत्री की कोठी के बाहर प्रधानमंत्री

के निकटस्थ व्यक्तियों ने आचार्यश्री का स्वागत किया। उनके सेक्रेटरी मदनलालजी आचार्यश्री को कोठी में ले गए। साधुओं और दो चार व्यक्तियों के अतिरिक्त शेष लोग कोठी से बाहर ही रहे। कोठी में मदनलालजी ने बैठने के लिए कमरा दिखाया, उसमें कालीन बिछा था और कुर्सियां लगी हुई थीं। आचार्यश्री ने कहा – 'कालीन पर तो हम नहीं बैठ सकेंगे।' इस पर उन्होंने बाहर बरामदे का स्थान दिखलाया। आचार्यश्री बरामदे में उपयुक्त स्थान देख ही रहे थे कि प्रधानमंत्री पण्डित नेहरूजी आ गए। भारतीय संस्कृति के अनुसार दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन किया। उस दिन आचार्यश्री और पण्डित नेहरू के बीच हुए संवाद का कुछ अंश यहां प्रस्तुत है :

प्रधानमंत्री – 'आचार्यजी! आप यहां बैठने की कृपा करें।' स्थान उपयुक्त था पर वहां कुछ चींटियां थीं। उन्हें देखकर आचार्यश्री ने कहा– 'यहां तो चींटियां हैं।' आचार्यश्री अपनी बात पूरी करें उससे पहले ही प्रधानमंत्री बोल उठे– 'आप यहां बैठ नहीं पाएंगे दूसरा स्थान देख लेते हैं।'

प्रधानमंत्री ने एक कुर्सी की गद्दी अपने हाथ में ले ली और आचार्यश्री के साथ-साथ चले। बरामदे के दूसरे छोर पर साफ-सुथरा स्थान था। वहां साधुओं ने छोटा-सा काष्ठ-पट्ट बिछा दिया, उस पर आचार्यश्री बैठ गए और उनके पास साधु बैठ गए। प्रधानमंत्री ने अपने हाथ से गद्दी बिछाई और आचार्यश्री के सामने बैठ गए। उनकी इस सहजता और विनम्रता का सभी के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। प्रधानमंत्री ने गृहमंत्री कैलाशनाथ काटजू, यू.पी. के मुख्यमंत्री गोविन्दवल्लभ पंत और अपनी प्रियदर्शिनी पुत्री इन्दिरागांधी को वहीं बुला लिया। पंतजी वृद्ध थे, उन्हें नीचे बैठने में असुविधा हो रही थी। प्रधानमंत्री उनकी ओर उन्मुख होकर बोले – पंतजी! आपको नीचे बैठने में कष्ट होगा, आप कुर्सी पर बैठ जाइये। पंतजी ने कहा– नहीं मैं नीचे ही बैठूंगा।

(देश के प्रधानमंत्री से मिलने का आचार्यश्री का यह पहला प्रसंग था। प्रधानमंत्री भी किसी धर्मसंघ के आचार्य से पहली बार मिल रहे थे। दोनों ओर उत्सुकता थी। पर बात शुरू करने की समस्या थी। दो क्षण सब मौन रहे। आखिर मौन को प्रधानमंत्री ने तोड़ा।)

प्रधानमंत्री – अच्छा, आचार्यजी! बोलिए आप क्या चाहते हैं?

आचार्यश्री – हम तो कुछ नहीं चाहते।

(बात प्रारंभ होने से पहले ही समाप्त हो गई। वहां बैठे सब लोग आचार्यश्री की ओर देखने लगे। स्वयं प्रधानमंत्री को भी इस प्रकार के उत्तर की आशा नहीं थी। बातचीत का सूत्र पुनः उनकी ओर से जोड़ा गया।)

प्रधानमंत्री – फिर आपका यहां आने का उद्देश्य क्या है?

आचार्यश्री – आपके साथ हमारा कोई परिचय नहीं है। राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू को हम जानते हैं। हम उनसे मिले थे। उन्होंने प्रेरणा दी कि हम आपसे अवश्य मिलें। वैसे हम गत वर्ष गर्मी के दिनों में यहां आए थे। उस समय आपसे मिलने का प्रसंग ही नहीं बना। आपको शायद ज्ञात नहीं होगा कि हम कुछ वर्षों से एक नैतिक अभियान चला रहे हैं। आप यह भी जानते हैं कि देश आजाद हुआ तब उसमें देशवासियों को बहुत बड़ा बलिदान करना पड़ा था। अब नैतिक गिरावट की संभावना प्रबल हो उठी है। हमने सोचा– हमारे पास पांच सौ पदयात्री साधु-साध्वियों की फौज है। आप देश के नैतिक उत्थान में इस फौज का उपयोग करना चाहें तो वह तैयार है। यह बात आपको बताने के लिए हम यहां आए हैं।

प्रधानमंत्री – यह तो बहुत काम की बात है। आपने अब तक अपनी बात हम तक पहुंचाई क्यों नहीं?

आचार्यश्री – पण्डितजी! आपके बारे में सुना था कि आपकी धर्म के विषय में रुचि नहीं है। आप जानते हैं कि हम धर्म के आदमी हैं। इस कारण हमने कभी आपसे मिलने का प्रयास ही नहीं किया। इधर में हमने आपके कुछ वक्तव्य पढ़े। उनमें यत्र-तत्र अध्यात्म की चर्चा है। उससे लगा कि आपकी अरुचि धर्म से नहीं, सम्प्रदायों से है। साम्प्रदायिक क्रियाकाण्डों में आपका रुझान नहीं है, पर अध्यात्म को समाज और देश के लिए आप उपयोगी मानते हैं। अणुव्रत यही कहता है कि व्यक्ति-व्यक्ति चरित्रनिष्ठ बने। उसकी चरित्रनिष्ठा का प्रभाव समाज और राष्ट्र पर हो तो देश के गिरते हुए नैतिक स्तर को ऊंचा उठाया जा सकता है। इस उद्देश्य से हम अणुव्रत का काम कर रहे हैं।

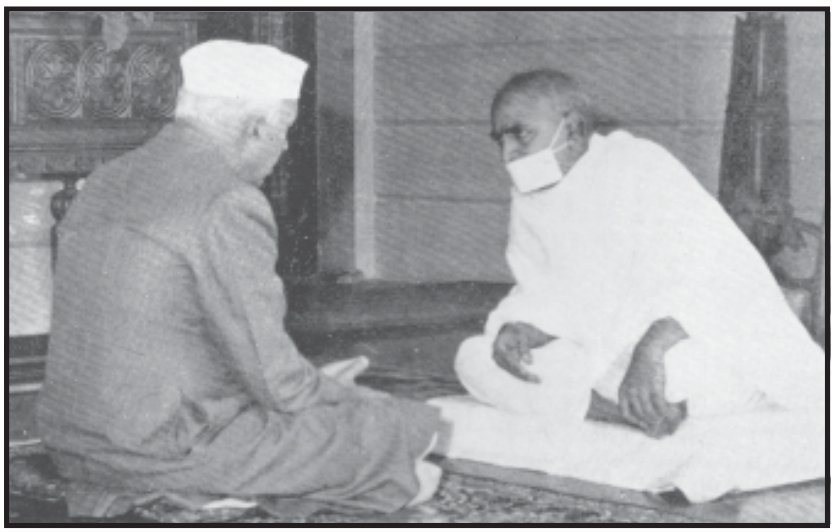

पं. जवाहरलाल नेहरू एवं अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी

अणुव्रत का प्रथम वार्षिक अधिवेशन दिल्ली में हुआ और दूसरा पंजाब में। अब तक हजारों व्यक्ति अणुव्रती बन चुके हैं।

प्रधानमंत्री – अणुव्रती कहां बने हैं? हमारे देश में बने हैं क्या?

आचार्यश्री – हम लोग पदयात्री हैं, इसलिए देश में ही पदयात्रा करते हुए काम कर रहे हैं। अणुव्रती बनने वाले लोग इसी देश के हैं। आपने अणुव्रत की आचार-संहिता देखी नहीं होगी?

प्रधानमंत्री – नहीं, अब तक नहीं देखी है। मेरी इच्छा है, मैं उसे देखूंगा।

आचार्यश्री – उसके बारे में आपके मूल्यवान सुझाव भी अपेक्षित रहेंगे। हम अणुव्रत के कार्य को व्यापक रूप में आगे बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं। दिल्ली के चातुर्मासिक प्रवास में अणुव्रत के बारे में साप्ताहिक विचार परिषदें आयोजित हुईं। उनमें आपके मंत्रिमण्डल के अनेक सदस्य उपस्थित हुए थे। गुलजारीलाल नन्दा, शंकरराव देव आदि ने अणुव्रत के बारे में अच्छे विचार रखे। नन्दाजी इस कार्य में बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं। अब हम यहां से राजस्थान जा रहे हैं। मैं चाहता हूं कि हमारे जाने के बाद भी दिल्ली में अणुव्रत का काम चलता रहे।

(उस दिन प्रधानमंत्री का जन्मदिन था। मध्याह्न तक उन्हें जन्मदिन की बधाई देने के लिए कई विशिष्ट व्यक्ति आ रहे थे। बातचीत के मध्य उनके सेक्रेटरी ने किसी नेता के आने की सूचना दी। प्रधानमंत्री ने एक बार उन्हें बिठाने का निर्देश दिया और वार्ता का क्रम आगे चलता रहा।)

वार्ता का एक दौर पूरा होने पर प्रधानमंत्री बोले – आचार्यश्री! क्षमा करें, कुछ लोग मिलने आए हुए हैं। वे प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं अभी दस मिनिट में आता हूं।

(प्रधानमंत्री उठे, गए और बहुत जल्दी लौट आए।)

आचार्यश्री – पण्डितजी! कांग्रेस जनों में पदलिप्सा कैसे जाग गई?

प्रधानमंत्री – आचार्यश्री! क्या बताऊं? जब राष्ट्रहित और पार्टीहित गौण होता है तब पदलिप्सा जागती है। अथवा, जब पद-प्रतिष्ठा प्रधान बनते हैं तब राष्ट्रहित विस्मृत हो जाता है।

आचार्यश्री – आपके अन्य कार्य का समय हो गया हो तो हम अपनी बात यहीं समाप्त कर दें?

प्रधानमंत्री – नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। अभी समय है, आप संकोच मत कीजिए। अणुव्रत आन्दोलन के बारे में मुझे थोड़ी जानकारी मिली है। समय मिलने पर मैं उसका साहित्य पढ़ूंगा। आपके साथ विचारों का सूत्र जुड़ा रहे, इस दृष्टि से मैं नन्दाजी से कहूंगा। उनकी इस विषय में रुचि है। वे आपके साथ सम्पर्क बनाए रखेंगे।

आचार्यश्री – अणुव्रत के प्रति आपकी जागरूकता रही तो हम देश की जनता के नैतिक स्तर को कुछ ऊपर उठा सकेंगे।

प्रधानमंत्री – आचार्यश्री! आप जो काम रहे हैं, बहुत अच्छा है। देश में और भी बहुत साधु हैं। आप उनके साथ मिलकर काम क्यों नहीं करते?

आचार्यश्री – पण्डितजी! आपका चिन्तन सही है। हमें किसी के साथ मिलकर काम करने में कोई आपत्ति नहीं है। पर, आप जानते हैं कि हम लोग पदयात्री हैं। हमारा कहीं कोई बैंक बेलेन्स नहीं है। जिन सन्तों के साथ मिलकर काम करना है, वे सब मठाधीश हैं। उनके साथ हमारा तालमेल कैसे बैठ पाएगा?

प्रधानमंत्री – आपने बिल्कुल ठीक कहा है। वे साधु पैसा रखते हैं, मोटरों में घूमते हैं और ठाटबाट से रहते हैं। उनके साथ काम हो सके, कम संभव लगता है। आप अपना काम स्वतंत्र रूप से कीजिए।

आचार्यश्री – वैचारिक और व्यवस्थागत तालमेल बैठ जाए तो किसी के भी साथ काम किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री – आचार्यजी! आपसे मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

(लगभग 41 मिनिट तक आचार्यश्री और प्रधानमंत्री का यह वार्तालाप सहज और सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।)

पाँच साल बाद...

आचार्यश्री – पांच वर्ष पहले जब हमारा मिलन हुआ था, मैंने आपको अणुव्रत की गतिविधि की जानकारी दी थी। आपने पूरी बात ध्यान से सुनी और कहा बहुत कम। आपने अब तक किसी प्रकार का सहयोग भी नहीं दिया। सहयोग का सम्बन्ध पैसे से नहीं है। आपको याद होगा कि यह आन्दोलन आर्थिक नहीं है और न ही मैं इसे राजनीति से जोड़ना चाहता हूं।

प्रधानमंत्री – मैं जानता हूं कि आपको पैसा नहीं चाहिए। आप इसे राजनीति से भी दूर रखना चाहते हैं। मैं ठहरा राजनीतिक व्यक्ति। फिर आप मुझसे कैसा सहयोग चाहते हैं?

आचार्यश्री – आप जितने राजनीतिक है उतने ही स्वतंत्र व्यक्ति हैं। हम आपके स्वतंत्र व्यक्तित्व का उपयोग करना चाहते हैं। आप इस विषय में मौन रहे, इसका क्या कारण है? क्या आप इसको साम्प्रदायिक आन्दोलन मानते हैं? अथवा हमारी वेशभूषा और मुंह पर बन्धी पट्टी हमारे बीच में दीवार है? इन्हें तो हम छोड़ नहीं सकते; क्योंकि इनके साथ हमारी आस्था जुड़ी हुई है। पर, अणुव्रत के असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा।

प्रधानमंत्री – आचार्यजी! मैं आपको इत्मीनान दिलाना चाहता हूं कि इन बातों का मेरे मन पर कोई प्रभाव नहीं है। अणुव्रत बहुत अच्छा है। असाम्प्रदायिक है। आप अच्छा काम कर रहे हैं। मैं सीधा आपके काम से नहीं जुड़ सका, इसका कारण मेरी व्यस्तता है। एक दिन में, दो हजार तो चिट्ठियां आती हैं। मिलने वालों का भी तांता लगा रहता है। ■

संस्कृति एवं मानव-मूल्यों का अर्थशास्त्र

● डॉ. राजेशकुमार व्यास ●

यह वैश्वीकरण का दौर है। इस दौर ने बहुत कुछ भौतिक उपलब्धियाँ हमें दी हैं; किन्तु सच यह भी है कि विविधता की हमारी संस्कृति का ह्रास भी किया है। सुदूर देशों की दूरियां सिमट गयी हैं। आप जो चाहें, वह वहां उपलब्ध हो जायेगा। आखिर मुद्रा हर ओर, हर छोर पर हावी जो है। अर्थशास्त्र का प्रमुख आधार भी तो मुद्रा ही हो गयी है। धनार्जन, धनार्जन और धर्नाजन। जीवन का सच मानो धनार्जन ही हो गया है। अर्थ के बगैर सब व्यर्थ! बात करें, अर्थशास्त्र की तो सिद्धान्त में तो जीवन के हर क्षेत्र से यह अपने को जुड़ा हुआ बताता है, परन्तु व्यवहार में इसकी दूरी आम जन से आप-हम सभी जानते हैं।

सापेक्ष अर्थशास्त्र को इसी नजरिए से देखे जाने की जरूरत है। यह समझा जाना जरूरी है कि कला-संस्कृति के सर्वाधिक निकट कोई शास्त्र है तो वह अर्थशास्त्र है। हम संगीत क्यों सुनते हैं, नृत्य और नाट्य में हमें रस क्यों आता है? चित्रकलाएं हमें क्यों लुभाती हैं? इस पर विचारेंगे तो पता चलेगा कि ये सब कलाएं जीवन में जो हमारा खालीपन है, उसे भरती हैं। मनुष्य में संवेदना, मानवीयता के संस्कारों का निर्माण कलाएं ही करती हैं और ठीक इसके उलट अर्थशास्त्र की हम बात करते हैं तो पाते हैं कि अर्थ का विचार संवेदनाओं को मारता है, मनुष्य को 'वस्तु' के रूप में अभिहित करता है।

दरअसल यह हमारा अर्थशास्त्र नहीं है। यह पाश्चात्य सोच का वह अर्थशास्त्र है जिसमें तमाम दूसरी निर्जीव वस्तुओं की मानिंद ही मनुष्य को भी उत्पादन की एक इकाई मानते हुए 'वस्तु' मान लिया गया है। ब्रिटिश अर्थशास्त्री अलफ्रेड मार्शल इसीलिये कहते हैं कि समाज में जो कुछ घट रहा है, उसके पीछे आर्थिक शक्तियां हुआ करती हैं। समाज को समझने के लिये और उसे बेहतर बनाने के लिये इसीलिये वे आर्थिक आधार को समझने की जरूरत पर जोर देते हैं।

बहरहाल, कभी लियोनेल रोबिंसन ने आधुनिक अर्थशास्त्र की जो परिभाषा दी है, उसे भी हम समझ लें। रोबिंसन कहते हैं कि अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानव स्वभाव का वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित साधनों और उनके प्रयोग के मध्य अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन करता है। यानी संसाधनों के वैकल्पिक उपयोगों के कारण ही अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता है। सवाल यह है कि इसमें मानव जीवन से जुड़े प्रश्न कहां हैं? अर्थशास्त्र का जीवन से जुड़ाव कहां है?

आचार्य महाप्रज्ञ से जब-तब भी संवाद होता, विचार का एक नया आलोक मिलता था। मुझे याद है, लाडनूं में कभी उनकी पहल पर ही महावीर के अर्थशास्त्र पर अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ था। तभी अर्थशास्त्र का एक नया शब्द-आलोक उन्होंने दिया—सापेक्ष अर्थशास्त्र। महाप्रज्ञ ऐसा ही करते थे। शास्त्रों का पारायण करते तथा उनको समकाल से जोड़ते और प्रायः हर बार समय के अनुरूप नवीन विषय का अर्थोन्मेष कर दिया करते। सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा इसी की परिणति है।

ऐसे ही एक दिन अर्थशास्त्र की कुछेक पुस्तकों को देखने लगा। लगा, अर्थशास्त्र वही नहीं है, जिसे मैंने समझा है। अर्थशास्त्र अर्थ के अध्ययन के साथ जीवन से जुड़ा शास्त्र भी है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मार्क्स की पूंजी, एडमस्मिथ लिखित 'वेल्थ ऑफ नेशंस', महात्मा गाँधी के अर्थ-दर्शन और तमाम दूसरी पुस्तकों से रू-ब-रू होते ही आचार्य महाप्रज्ञ रचित 'महावीर का अर्थशास्त्र' भी देख डाली। लगा, वर्तमान संदर्भ में अर्थशास्त्र की तमाम विचारधाराओं का सांगोपांग रूप कहीं है तो वह सापेक्ष अर्थशास्त्र में है। यहां अर्थशास्त्र अर्थ से परे मानव संस्कृति से जुड़ता है।

ऐसे समय में जब राजनीति के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय विषय अर्थशास्त्र ही है, तब यह जरूरी है कि इसके महत्व को आधुनिक समय की समस्याओं के संदर्भ में विश्वशांति, व्यक्तियों की संतुष्टि तथा समानता के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए। ख्यात अर्थशास्त्री प्रो. शुं पीटर ने अपने एक लेख 'अर्थशास्त्र का भविष्य' में इस बात को स्वीकार किया है कि सिद्धान्त रूप से आर्थिक विश्लेषण चाहे जितनी प्रगति कर ले परन्तु व्यवहार में उसे हमेशा शांति, सुख एवं कल्याण के लिए ही कार्य करना होगा। तभी इसका भविष्य उज्ज्वल होगा।' **सच भी यही है, यदि अर्थशास्त्र को केवल भौतिक साधनों**

में वृद्धि और अधिक से अधिक प्राप्ति से संतुष्टि के रूप में ही देखा जाता रहा तो अर्थशास्त्र विकास की बजाय विनाश का कारण भी बन सकता है।

सापेक्ष अर्थशास्त्र को इसी संदर्भ में समझे जाने की जरूरत है। वहां अर्थ की प्रधानता और अर्थ के आधिक्य से मानव कल्याण और जीवन स्तर में सुधार की बजाय मानव मूल्यों के विकास पर जोर दिया गया है। हालांकि कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी इसी पर जोर देता है, परन्तु महाप्रज्ञ ने अर्थशास्त्र की अपने तईं विवेचना करते हुए उसे समयानुकूल किया है। अर्थव्यवस्थाओं के संदर्भ में उसमें अपने तईं अहिंसा, शांति और विश्व कल्याण की बात कही है। अपने इस दर्शन में वे भारतीय दर्शन की उस गहराई में भी गये हैं जिसमें मनुष्य को ही श्रेष्ठतर बताते हुए आम जन की समानता तथा उसके मानव मूल्यों के विकास पर जोर दिया गया है।

गौर करें, अर्थव्यवस्था के अंतर्गत मुद्रा-व्यय का गणित है जबकि सापेक्ष अर्थशास्त्र के अंतर्गत आर्थिक समृद्धि और अहिंसा की समृद्धि, दोनों की समन्वित प्रणाली की अपेक्षा है। अर्थव्यवस्था का एक क्षेत्र दूसरे क्षेत्र पर निर्भर रहे तभी उसकी सार्थकता है। ऐसा यदि नहीं होता है तो विकृतियां अवश्यंभावी हैं। सापेक्ष का अर्थ है– निर्भर। आश्रित। तो सापेक्ष अर्थव्यवस्था वह जिसमें अर्थव्यवस्था मानव मूल्यों से संबद्ध हो। अर्थव्यवस्था ऐसी हो जो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को न केवल उसके आर्थिक अधिकारों की उपलब्धि करा सके बल्कि वह अन्य क्षेत्रों में भी मानव कल्याण का पोषण करने वाली हो। एक को साधने की अनंत चाह में किसी दूसरे के हित, मूल्य वहां तिरोहित नहीं हों।

यहां यह भी समझे जाने की जरूरत है कि अर्थशास्त्र उपयोगिता के आधार पर चलता है। जो उपयोगी है; वह सही है। यह वांछनीय है, परन्तु उपयोगी क्या है? महावीर ने कहा था–जहां संयम और समता है, वहीं अहिंसा है। अर्थशास्त्र का मुख्य ध्येय संयम और सुख ही होना चाहिए। उपयोगी यही है। महात्मा गांधी कहते थे कि सत्ता का केन्द्रीकरण और पूंजी का केन्द्रीकरण हिंसा को बढ़ावा देने वाला है। जहां जहां सत्ता केन्द्रित होती है, पूंजी केन्द्रित होती है वहां-वहां समस्याएं बढ़ती हैं। इसीलिये गाँधीजी ने ट्रस्टीशिप की बात कही। ट्रस्टीशिप माने, हम जो कर रहे हैं वह दूसरों के लिये कर रहे हैं, केवल अपने लिये नहीं।

महाप्रज्ञ का अर्थचिंतन इस संबंध में युग के अनुकूल है। वे संयम और शांति के साथ उन स्थितियों और परिस्थितियों पर भी जाते हैं, जिनके कारण आज का विश्व है। वे जिस अर्थशास्त्र की बात करते हैं उसमें साधन-शुद्धि केन्द्र में है। विश्व की आर्थिक मीमांसा के बहाने वे शस्त्रों पर होने वाले खर्च की ओर ध्यानाकर्षण करते हैं। लिखते हैं, **"शिक्षा और सुरक्षा के खर्चे में आकाश- पाताल का फर्क हो तो बात स्वतः समझ में आती है। विश्व में आधी से ज्यादा पूंजी सुरक्षा पर खर्च हो रही है। क्यों नहीं यह पूंजी गरीबी उन्मूलन और शांति स्थापना पर लगे; परन्तु शस्त्र उद्योग को पनपाने में लगी अर्थव्यवस्था के पोषक क्या इसे बर्दाश्त करेंगे?"**

महाप्रज्ञ जिस नये अर्थशास्त्र की सूझ देते हैं, उसमें तमाम वैश्विक समस्याओं का हल है। वहां अर्थ से उत्पन्न समस्याओं की बजाय मनुष्य के समान विकास का हित निहित है। मसलन, विश्व आज जिस भयावह समस्या–जलवायु परिववर्तन से जूझ रहा है, उसका हल भी वहां है। सापेक्ष अर्थशास्त्र के उनके चिंतन में खास तौर से महावीर के दर्शन के बहाने वस्तुओं के परिमाण की जो बात कही गयी है, उससे इस समस्या का हल हो सकता है।

अपनी बात को समझाने के लिये आचार्य महाप्रज्ञ फ्रांसीसी विचारक ज्यां बोद्रियो के कहे की याद दिलाते हैं, "पहले वस्तु आती है तो वह सुख देने वाली लगती है। अन्त में वह दुख देकर चली जाती है। पहले वह भली लगती है; किन्तु अंत में बुरी साबित होती है।" भारतीय दर्शन भी तो यही कहता है। वहां अति भोग के बाद की स्थिति को बताया है। प्रारम्भ में इक्षु का सेवन बड़ी मिठास देता है; किन्तु अंत में उसके छिलके में कोई रस नहीं रह जाता, वह नीरस हो जाता है।

सापेक्ष अर्थशास्त्र में व्यक्ति और विश्व-चिंतन का नया आकाश है। इस आकाश में ग्लोबल इकोनामी की नीति पर गंभीरता से विचार करने के लिये जोर दिया गया है। महाप्रज्ञ कहते हैं, "अर्थनीति विश्व शांति के लिये खतरा न बने, व्यक्ति की शांति के लिये खतरा न बने। व्यक्ति की शांति को खतरा होगा तो विश्व शांति खंडित होगी।" उनके कथन से सापेक्ष अर्थशास्त्र को गहरे समझा जा सकता है। सापेक्ष अर्थशास्त्र की उनकी सोच का आधार है शांति और अहिंसा। इस आधार के अंतर्गत वह अर्थशास्त्र के अंतर्गत आय के आधार पर निर्धारित उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग का जोरदार खंडन करते हैं और चेताते भी हैं कि यह जो वर्ग विभेद हुआ है उसी से अपराध और हिंसा को बढ़ावा मिला है। इसलिये कि वर्ग के हिसाब से व्यवस्था तो निर्धारित कर दी गयी परन्तु समाज की मनोवृति पर ध्यान ही नहीं दिया गया।

वर्ग के हिसाब से भले ही अर्थव्यवस्था के अंतर्गत गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालों को सुविधाएं प्रदान कर दी जाएं, मध्यम वर्ग के लिये भले ही आकर्षक योजनाएं लाकर उन्हें लुभाने के

प्रयास किये जाएं परन्तु संतुलन को इससे कभी भी स्थापित नहीं किया जा सकेगा। बल्कि अर्थव्यवस्था की खाई ऐसी गहरी होती चली जाएगी कि उसे कभी चाहकर भी पाटा नहीं जा सकेगा। वे कहते हैं– अर्थव्यवस्था ऐसी हो जिसमें एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का शोषण न कर सके और किसी पर अपनी व्यावसायिक या वैचारिक प्रभुसत्ता स्थापित न कर सके।'' इसीलिये वे आगे कहते हैं कि परिवर्तन का सूत्र है– व्यवस्था भी बदले, व्यक्ति का हृदय भी बदले। दोनों संयुक्त रूप से चलें। इसके लिये अर्थव्यवस्था ऐसी हो जिसमें सभी के लिये समान अवधारणाएं हों। महावीर के सापेक्षवादी दृष्टिकोण की याद दिलाते वे इसीलिये साधनों के विकेन्द्रीकरण पर जोर देते हैं।

तमाम जो अर्थव्यवस्थाएं हैं उनमें असीम प्राप्ति की लालसा स्पष्ट दिखाई देती है। असीम माने सभी को ज्यादा से ज्यादा मिले। प्रति व्यक्ति की आय बढ़े। परन्तु, इस असीम प्राप्ति के उलट महाप्रज्ञ व्यक्ति की मनोवृति पर जाते उसकी संतुष्टि पर जोर देते हैं; क्योंकि विश्व-शांति की कल्पना को इसी से साकार किया जा सकता है। वे कहते हैं, असीम प्राप्ति की लालसा अकारण भय पैदा करती है। उनके लिखे में आए दृष्टान्तों में एक कहानी आती है:

''किसी आदमी को भय बहुत लगता था। तांत्रिक के पास गया और कहा– भय बहुत लगता है, इसका कोई उपाय करें। तांत्रिक ने एक ताबीज बनाकर उसे दिया और कहा– इसे पहन लो। भय दूर हो जायेगा। सच में उसके तमाम भय दूर हो गये; परन्तु एक भय हमेशा लगा ही रहता। सो फिर से वह तांत्रिक के पास गया। बोला, महाराज बाकी सब तो भय दूर हो गये परन्तु अब सदा यह भय लगा रहता है कि आपका दिया यह ताबिज कहीं खो न जाए!'' लालसा की यही परिणति है।

महाप्रज्ञ के अर्थचिंतन में अपरिग्रह की बात है, परन्तु महत्वपूर्ण यह है कि वह अपरिग्रह गृहस्थ के लिये नहीं है। गृहस्थ के लिये मध्यम मार्ग बताते हुए उन्होंने महावीर के अनेकान्तवाद के सिद्धान्त की चर्चा की है। यानी गृहस्थ इच्छा का परिमाण करे। अर्थाजन हो परन्तु उसमें साधन-शुद्धि हो। सापेक्ष अर्थशास्त्र के अंतर्गत समय व स्थितियों के साथ ही व्यक्ति की भावनाओं, उसकी संवेदनाओं का भी गहराई से विवेचन किया गया है। **कोई भी अर्थव्यवस्था व्यक्ति को धनी और निर्धन तो बना सकती है, परन्तु सुखी या दुखी नहीं बना सकती। सुख और दुख का पैमाना तो व्यक्ति की मनोवृति है। इसीलिये महाप्रज्ञ व्यक्ति की मनोवृति को ध्यान में रखते हुए अर्थशास्त्र के अंतर्गत अर्थव्यवस्था पर विचार करने पर जोर देते हैं।**

सापेक्ष अर्थशास्त्र में नीतियों और रणनीतियों से संबंधित तमाम विकल्पों पर विचारते हुए विपक्षी दृष्टिकोणों पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया है। यही कारण है कि अर्थशास्त्र के नियमों, सिद्धान्तों के अंतर्गत विकास की दीर्घकालीन प्रेरणा वहां केवल पूंजी संग्रह नहीं होकर मानवीयता का विकास है। सहज मानवीय गुणों और वृत्तियों के अंतर्गत मनुष्य के सर्वांगीण विकास पर वहां जोर दिया गया है।

किसी स्थान विशेष की अर्थव्यवस्था का आकलन वहां रहने वाले व्यक्तियों के जीवन-स्तर से ही तो नहीं किया जा सकता, भारतीय दृष्टिकोण पर विचारें तो यह भी देखा जाना चाहिए कि बावजूद विषमताओं, बावजूद कठिनाईयों के क्या कुछ और आगे बढ़ने के लिये कैसे जीवन-मूल्य हमने हासिल किए हैं। किस प्रकार हम आकार-प्रकार की भिन्नता के बावजूद जी रहे हैं। कैसे आर्थिक विपन्नता के बावजूद उत्सवधर्मिता की हमारी संस्कृति कायम है। भौतिक वस्तुओं की, सुख-सुविधाओं की उपलब्धता आवश्यक है परन्तु; अर्थशास्त्र के उद्देश्यों की पूर्ति केवल इनके जरिए तो नहीं की जा सकती। आर्थिक स्तर में जीवन स्तर में वृद्धि एक पहलू है, परन्तु गुणवत्तापूर्ण अर्थव्यवस्था का प्रमुख ध्येय व्यक्तियों की मानसिकता होना चाहिये। यह देखा जाना चाहिये कि हमारी समझ कैसी है? यह भी कि हम कितने विचारसंपन्न हैं? यह भी कि प्रतिदिन जो परिवर्तन हमारे जीवन में हो रहे हैं उसमें हम अपनी जिम्मेदारियों को कितना और कैसे निभा रहे हैं।

लोकतंत्र की हमारी पद्धति पूर्णतः सामाजिक एवं आर्थिक विकास की पूर्ति के लिये समर्पित है; ऐसे में एक ऐसे अर्थशास्त्र की हमें आज जरूरत है जिसमें व्यक्ति व्यक्ति का लिहाज करे। केवल अपना हित ही व्यक्ति नहीं साधे दूसरों के हित के प्रति भी विचारे। अर्थव्यवस्था व्यक्तिसापेक्ष हो, युग सापेक्ष हो, वर्ग सापेक्ष हो और जीवन सापेक्ष हो। जीवन में स्वतंत्रता हो परन्तु उसकी स्वतंत्रता सापेक्ष हो। सापेक्षता का अर्थ है मानवीय पक्षों की अन्तः-संगठनशील, गतिशील संगति। इसी में जीवन की स्वाभाविकता का निर्वाह किया जा सकता है।

महाप्रज्ञ के चिंतन का स्मरण करते भवभूति का कथन याद आ रहा है :

'लौकिकानां हि साधूनां
अर्थं वागनुवर्तते,
ऋषिणां पुनराद्यानां वाचं
अर्थोऽनुधावति।'

यानी – लौकिक साधुओं की बात अर्थ के पीछे चलती है। प्राचीन ऋषियों की तो वाणी के पीछे अर्थ अपने आप दौड़ता था। महाप्रज्ञ प्राचीन ऋषि परम्परा के मनीषी ही तो हैं, सापेक्ष अर्थशास्त्र के उनके चिंतन को इसी परिप्रेक्ष्य में समझा जाना चाहिए।

3/39, गाँधीनगर, न्याय पथ,
जयपुर-302015

ध्यान से फलित होती है प्रामाणिकता

● प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल ●

ध्यान शब्द पर ध्यान केन्द्रित होते ही पहला प्रश्न उभरता है– ध्यान क्या है? किसे कहते हैं ध्यान? प्रेक्षा-ध्यान शिविर में विभिन्न वर्गों के लोग आते हैं। ध्यान में उनकी रुचि है। ध्यान रखने की तमन्ना है। पर, क्षण भर वे रुक जाते हैं। सोचने लगते हैं– किसे कहें ध्यान? कोई कहता है– एकाग्रता ध्यान है। दूसरे के अनुसार विचारशून्यता, आत्मा को परमात्मा से जोड़ना ध्यान है। मैं उनसे उलटकर सवाल करता हूं। एक व्यक्ति निशाना साधे हुए है, पूरी तरह से एकाग्र है, फायर करने वाला है, क्या यह ध्यान है? नहीं-नहीं, यह ध्यान नहीं, हिंसा है। एक व्यक्ति वासना में डूबा हुआ है, विचारशून्य है, क्या इसे ध्यान कहें? नहीं-नहीं यह भी ध्यान नहीं है, रागात्मक चित्त की स्थिति है। आत्मा को जानते हो? परमात्मा को पहचानते हो? कैसे करोगे परमात्मा में लीन आत्मा को? फिर प्रश्न किया शिवरार्थियों से–आखिर ध्यान है क्या?

ध्यान के संबंध में विभिन्न प्रकार की धारणाएं हैं; किन्तु अलग-अलग धारणा से ध्यान की सही समझ नहीं हो सकती।

ध्यान के साधन : ध्यान के चार साधन हैं। काया का ध्यान, वाणी का ध्यान, मन का ध्यान, चेतना का ध्यान। किसी भी ध्यान की स्थिति में ज्ञान–चेतना का मुख्य हाथ रहता है। काया की स्थिरता हो, किसी प्रकार की चंचलता नहीं हो, यह काय-गुप्ति का ध्यान है। वाक्-गुप्ति वाणी का ध्यान है, इसमें वाणी की चंचलता नहीं रहती। मनो-गुप्ति मन का ध्यान है– किसी भी विषय पर पूर्ण एकाग्रता मन का ध्यान है। चेतना का ध्यान : चेतना की पहचान ज्ञान से है। ज्ञान जब प्रियता, अप्रियता में बंट जाता है, तब वह ध्यान नहीं रहता। यदि उसे ध्यान कहें तो वह आर्त-रौद्र ध्यान हो सकता है। उससे बन्धन होता है। राग-द्वेष के बिना केवलज्ञान स्वरूप में स्थिर रहना ही चेतना का ध्यान है। मेरी समझ में प्रियता-अप्रियता के बिना केवल वर्तमान में स्थिर रहना प्रेक्षा-ध्यान है। ऐसा मैंने अनुभव से जाना है। निर्मल चेतना में

विवेक से ध्यान की उपसंपदा को स्वीकार करना चाहिए। तभी व्रत और ध्यान का समन्वय हो पाएगा।

रहना ही सही ध्यान है। अध्यात्म है, धर्म है, वीतराग-भाव है।

ध्यान और नैतिकता : ध्यान में तटस्थ भाव प्रकट होता है। तटस्थ भाव जिसके मानस में प्रकट होने लगता है वह व्यक्ति अनैतिक आचरण कैसे कर सकता है? नैतिकता शब्द नीति से बनता है। नीतियां देश, काल सापेक्ष होती हैं। वे समय के साथ बनती हैं, बदल भी जाती हैं। राजसत्ता अथवा धर्म और समाज के द्वारा नियम बनाये जाते हैं। इसके अनुसार चलना, व्यवहार करना नैतिकता कहलाती है। इसके विपरीत चलना अनैतिकता के घेरे में आती है। नैतिकता शब्द उलझा हुआ है। इसके अनेक मापदण्ड हैं। विश्व के विभिन्न अंचलों में नैतिकता के अनेक रूप उपलब्ध हैं। इसलिए नैतिकता की परिभाषा को शब्दों में बांधना सरल कार्य नहीं है।

अणुव्रत की आचार-संहिता नैतिकता की आचार-संहिता है। उसके नियमों के अनुसार वर्तन करें तो वह प्रामाणिकता है, नैतिकता है। उसके विपरीत आचरण करें, वह अनैतिकता, अप्रामाणिकता है। आचार्य तुलसी के विचारानुसार प्रामाणिकता ही नैतिकता है। प्रामाणिकता सत्य का व्यावहारिक रूप है और नैतिकता का आन्तरिक स्वरूप है। इसमें विश्वास रखने वाले का व्यवहार प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष, एकान्त में अथवा परिषद् में समान होता है।

ध्यानी व्यक्ति के जीवन में स्वयं प्रामाणिकता फलित होती है। वह किसी को धोखा नहीं दे सकता। ध्यान से उसमें आत्म-तुल्यता का भाव विकसित होता है। यह कैसे अप्रामाणिक व्यवहार कर सकता है? ध्यान से नैतिकता स्वयं उतर आती है। ध्यान अन्तरंग चेतना के रूपान्तरण की प्रक्रिया है। जबकि अणुव्रत बाहर से भीतर जाने की व्यवस्था है। व्रत विवेक-चेतना से स्वीकार किया जाता है, लेकिन समय की परिस्थिति उसमें बाधा उत्पन्न कर देती है। इसलिए अणुव्रती को ध्यान का अभ्यास कर अपनी चेतना को, आत्मा को निर्मल बनाना होता है, जिससे सहज रूप से अणुव्रत का सम्यक् पालन किया जा सके।

अनैतिकता संक्रामक : एक व्यक्ति मिलावट करता है, दूसरा व्यक्ति भी देखा-देखी उसका अनुकरण करने लगता

है। एक व्यक्ति झूठ बोलकर दूसरे व्यक्ति को धोखा देता है। दूसरा व्यक्ति भी ऐसा ही करने लगता है। यह संक्रामक रोग है। सब जगह फैलने लगता है। वर्तमान में ऐसी धारणा बन गई है कि झूठ के बिना व्यापार होता ही नहीं है। प्रत्येक क्षेत्र में ऐसा होने लगा है फिर वह राज्य कर्मचारियों का क्षेत्र हो, चिकित्सा का हो या सुरक्षा के किसी क्षेत्र में जाएं, जहां अनैतिकता, अप्रामाणिकता नहीं हो रही हो। चाहे वह धार्मिक क्षेत्र भी क्यों न हो। ऐसी स्थिति को देखकर आचार्य तुलसी के मन में चरित्र निर्माण के आंदोलन की भावना पैदा हुई। नाम रखा गया 'अणुव्रत', नैतिकता का आन्दोलन। उसमें पूजा, उपासना, सांप्रदायिकता को स्थान नहीं, केवल चरित्र और नैतिकता के संकल्प को स्वीकार करने की बात कहीं गयी। ऐसा कहा जा सकता है कि एक असांप्रदायिक धर्म, मात्र चरित्र का आंदोलन। नैतिकता की आचार-संहिता का आंदोलन।

कैसे बनें नैतिक? : नैतिक बनने के लिए पहले अपनी धारणा को बदलना होता है। नैतिकता से भी जीवन जीया जा सकता है, यह सोचना अथवा धारणा बना लेना आवश्यक है। नैतिकता से व्यापार हो ही नहीं सकता, नैतिकता प्रामाणिकता से जीवन जीया ही नहीं जा सकता, यह मिथ्या धारणा व्यक्ति को अनैतिक बनने की ओर प्रेरित करती है।

सही बात तो यह है कि ईमानदारी, प्रामाणिकता से अच्छा जीवन जीया जा सकता है, व्यापार भी किया जा सकता है। प्रारम्भ में कुछ कठिनाई आ सकती है। नैतिकता प्रामाणिकता का व्यापार-स्थल, प्रामाणिकता का ब्रांड बन जाये तो ग्राहक दो दिन का धैर्य रख कर उसी स्थान से सामान लेता है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। प्रामाणिकता की अवधारणा से व्यक्ति धन और यश दोनों कमा सकता है।

ध्यानी बनता है प्रामाणिक : ध्यान से चित्त निर्मल होता है, निर्मलता से उसके चित्त में करुणा और अनुकंपा प्रकट होती है। वह दूसरों के साथ क्रूरता, धोखा-धड़ी का कैसे व्यवहार कर सकता है? ध्यान से उसने जाना 'आय तुला पयासु'– सब आत्म-तुल्य हैं। वह दूसरों को कैसे धोखा दे सकता है? मिलावटी वस्तु कैसे दे सकता है? दूसरों की सम्पत्ति को कैसे हड़प सकता है? ध्यानी आत्म-निरीक्षण करने वाला होता है। वह स्वयं अपने भीतर आने वाले विजातीय तत्त्वों को स्वयं ध्यान के द्वारा दूर कर, अपने व्यवहार को श्रेष्ठ बना कर, दूसरों के लिए आदर्श बन सकता है। प्रामाणिकता से अपने जीवन व्यवहार और व्यापार का प्रवर्तन कर सकता है। इसीलिए व्रती बनने के साथ-साथ व्यक्ति को ध्यानी बनने अर्थात् ध्यान के अभ्यास का संकल्प करना चाहिए। विवेक से ध्यान की उपसंपदा को स्वीकार करना चाहिए। तभी व्रत और ध्यान का समन्वय हो पाएगा। ■

राष्ट्र चिन्तन

सब चाहते हैं पर मिलकर आगे नहीं बढ़ते

देश के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह कहते हैं– तीव्र प्रगति और विकास के हमारे प्रयासों का असर तभी हो सकता है जब हम सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार पर रोक लगाएं तथा शासन की प्रक्रिया में सुधार करें। भाजपा के शीर्षनेता लालकृष्ण अडवानी का मत है कि भ्रष्टाचार और सुशासन साथ-साथ नहीं चल सकते। उधर माकपा महासचिव प्रकाश करात भ्रष्टाचार के खिलाफ अथक संघर्ष पर जोर देते हैं। यानी-भ्रष्टाचार आज देश की प्रमुख समस्या है तथा आमजन उद्वेलित है, यह सभी राजनैतिक पार्टियां भली प्रकार जानती हैं।

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री बी.सी. खंडूरी ने एक प्रभावी लोकायुक्त की स्थापना के लिए उपुयक्त विधेयक तैयार कर यह दिखा दिया है कि अगर इरादा पक्का हो तो यह कार्य कठिन नहीं है। अगर उत्तराखंड में यह हो सकता है तो राष्ट्रीय-स्तर पर क्यों नहीं? जब सब चाहते हैं तो सभी राजनीतिक दल मतभेदों को दूर कर एक उद्देश्य के लिए काम क्यों नहीं कर सकते? लोकपाल बिल क्यों नहीं पास करते?

अध्यात्म के रास्ते दूर होगा भ्रष्टाचार : श्रीश्री रविशंकर

अंधेरी रात में दीये जलाने की जरूरत पड़ती है, और कार्तिक पूर्णमासी के दिन भी। यह प्रथा है। हुमस और उल्लास की ज्योति जब जल जाती है तो व्यक्ति अन्दर से जाग जाता है।.... कई मनीषियों का मत है कि साधु-संतों से भ्रष्टाचार मिटने वाला नहीं है। अध्यात्म का राजनीति में क्या काम? लेकिन मैं इससे सहमत नहीं हूं। अध्यात्म से ही दुराचार और भ्रष्टाचार मिटाये जा सकते हैं। अध्यात्म यानी सबको अपनाने की कला। कई जगह हड़ताल होती है। लोग मांगों के लिए आन्दोलन करते हैं। उनमें उत्साह होता है, यहां भी है। लेकिन यहां का उत्साह सात्विक है। हम लोगों को प्रेम से जोड़ते हैं। हम इकट्ठे हैं, आइये संकल्प लें– न रिश्वत लेंगे, न देंगे।

अन्ना-टीम में होंगे ५० साफ छवि के लोग

प्रख्यात समाज सेवी अन्ना हजारे ने कहा है कि साफ-सुथरी छवि वाले पचास लोगों को सम्मिलित कर 'इण्डिया अगेंस्ट करप्शन' की टीम का पुनर्गठन किया जायेगा। देभभर में नये चेहरों की तलाश शुरू कर दी गयी है।

क्या हम वास्तव में शिक्षित हो पाए हैं?

• सीताराम गुप्ता •

क्या हम वास्तव में शिक्षित हैं? एक शिक्षित समाज में यह प्रश्न पूछना या उठाना कुछ अटपटा-सा लग सकता है, लेकिन है यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न। हम में से कई मित्रों ने देश के चर्चित विश्वविद्यालयों अथवा अग्रणी शिक्षा संस्थानों में अध्ययन किया है। बड़ी-बड़ी डिग्रियां हासिल की हैं। कई उपयोगी कुशलताओं का विकास उन्होंने किया है, इसमें संदेह नहीं। लेकिन फिर भी प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या हम वास्तव में शिक्षित हैं? इस प्रश्न के साथ ही एक और प्रश्न उठता है और वो ये कि शिक्षा क्या है? क्या बी.ए., एम.ए., बी.एस-सी., एम. फिल., पीएच.डी., डी. लिट. बी.टेक., एम.टेक., एम.बी.बी.एस., एम.डी. अथवा अन्य डिप्लोमा-डिग्री प्राप्त कर लेना ही शिक्षा है? क्या इन कोर्सेज में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो जाना ही हमारी शैक्षिक योग्यता के स्तर को निर्धारित करने में सक्षम है?

प्रश्न उठता है कि क्यों आज का युवा एक अदद उच्चस्तरीय प्रोफेशनल डिग्री पाने के लिए अपने यौवन का एक स्वर्णिम भाग स्वाहा कर डालता है? क्यों माता-पिता अपने बच्चों को एक अच्छे विद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए लाखों रुपये और एक प्रोफेशनल कोर्स में प्रवेश दिलाने के लिए करोड़ों रुपये देने से भी पीछे नहीं हटते? क्यों लोग कर्ज लेकर भी उच्च शिक्षा पाने को लालायित रहते हैं? कुछ लोग स्कूल-कॉलेजों में औपचारिक शिक्षा तो नहीं प्राप्त कर पाते लेकिन अपने स्वाध्याय से

महान् व्यक्तियों के संपर्क में आकर, उनके श्रेष्ठ आचरण से प्रभावित होकर सही मार्ग पर अग्रसर होना ही वास्तविक शिक्षा है और इसके लिए किसी विद्यालय, विश्वविद्यालय या अन्य किसी बड़े शिक्षा-संस्थान में जाने की भी जरूरत नहीं।''

स्कूल-कॉलेजों में शिक्षा पाने वालों से कम भी नहीं होते। यदि व्यक्ति के संदर्भ में सर्वांगीण विकास की बात करें तो उसके भौतिक शरीर, मन और चेतना के विकास का नाम ही उसका सर्वांगीण विकास है। समाज की दृष्टि से समाज के हर वर्ग का पूर्ण विकास ही सर्वांगीण विकास है। हमारी अपनी इस धरती को क्षति पहुंचाए बिना, इसके वायुमंडल को दूषित किए बिना तथा प्रकृति के सौंदर्य को नष्ट किए बिना मनुष्य और समाज के विकास के लिए जो भी प्रयास हम कर रहे हैं, वह सब शिक्षा के अंतर्गत आते हैं।

क्या वर्तमान शिक्षा प्रणाली द्वारा इस उद्देश्य को प्राप्त किया जा रहा है? इसे समझने के लिए पहले दो शब्दों को जानना होगा और वे हैं शिक्षा और साक्षरता। शिक्षा को समझना थोड़ा मुश्किल है लेकिन साक्षरता को समझना अपेक्षाकृत सरल है। साक्षरता का अर्थ है मात्र अक्षर-ज्ञान। यानी किसी भाषा को पढ़ना, लिखना और जानना। हमारे यहां वे सभी लोग जो अंगूठा लगाने की बजाय किसी तरह गलत-सलत वर्तनी के साथ अपना नाम ही लिख पाते हैं, साक्षर वर्ग में आते हैं। तो क्या फिर वो लोग जो अच्छी तरह से लिख-पढ़ सकते हैं या जो उच्च डिग्रीधारी हैं वे ही शिक्षित वर्ग में आते हैं? वास्तव में उच्च डिग्रीधारी व्यक्ति को भी शिक्षित नहीं कहा जा सकता, यदि उसमें शिक्षा नामक तत्त्व का समावेश नहीं। अब प्रश्न उठता है कि क्या साक्षरता निरर्थक है? उसका शिक्षा से कोई संबंध नहीं है? नहीं, साक्षरता निरर्थक नहीं, लेकिन फिर भी यह शिक्षा नहीं है।

प्रायः ऐसी घटनाएं देखने-सुनने में आती हैं कि किसी नौकर से कोई चीज टूट गई या कुछ नुकसान हो गया तो मालिक द्वारा उसको अमानवीय यातनाएं दी गईं। पिछले दिनों ऐसे मामले भी प्रकाश में आए हैं कि ऐसी यातनाओं के कारण नौकर या नौकरानी की मृत्यु तक हो गई। माना कि एक टी-सैट या क्रिस्टल

का गिलास बहुत कीमती है लेकिन एक समृद्ध व्यक्ति के लिए ये क्या मायने रखता है और फिर क्या एक कप, प्लेट या गिलास की कीमत एक व्यक्ति की जान से ज्यादा महत्वपूर्ण हो सकती है? कदापि नहीं। फिर क्यों ऐसा होता है कि हम थोड़े से आर्थिक नुकसान के लिए किसी की जान लेने से भी नहीं हिचकिचाते? कारण स्पष्ट है, और वो है शिक्षा का अभाव।

पिछले दिनों एक समाचार देखने को मिला कि पाकिस्तान में एक महिला ने अपने नौकर की इस कदर पिटाई की कि उसकी मौत ही हो गई और इस पिटाई का कारण था नौकर द्वारा घर के पालतू कुत्ते को समय पर भोजन न देना। अब वह महिला कहां होगी यह बतलाने की जरूरत नहीं। अभी हाल ही की एक घटना है। नौकर ने चाय फर्श पर गिरा दी तो मालकिन ने उसे थप्पड़ जड़ दिया। अगले दिन सब्जी में नमक ज्यादा हो गया तो भी मालकिन ने नौकर की अच्छी खासी धुनाई कर डाली। बदले में एक दिन नौकर ने अपनी बुजुर्ग मालकिन, जो एक रिटायर्ड प्रिंसिपल थीं, की हत्या ही कर डाली। मक्तूला एक प्रिंसिपल थीं तो जाहिर है कि खूब पढ़ी-लिखी भी होंगी ही लेकिन क्या मात्र शैक्षिक डिग्रियों से जीवनप्रवाह सुचारुरूप से प्रवाहित हो सकता है? दान-धर्म के नाम पर हम लाखों रुपये खर्च करने से नहीं चूकते लेकिन जो लोग दिन-रात हमारी सेवा में संलग्न रहते हैं उनके प्रति हम प्रायः कठोर ही बने रहते हैं। क्या यही धार्मिकता है? क्या यही ज्ञानशीलता है? क्या इसमें शिक्षा का अभाव नहीं झलकता?

कहा गया है— **सा विद्या या विमुक्तये।** जो हमें मुक्त करे, वही विद्या है। मुक्ति से तात्पर्य है अज्ञान अथवा अशिक्षा से मुक्ति। नकारात्मक भावों से मुक्ति। मनुष्य का एक परम लक्ष्य होता है नकारात्मक भावों से मुक्त होकर आत्म-विकास करना। दूसरों के विकास में बाधा न बनते हुए स्वयं का विकास ही शिक्षा है। शिक्षा के लिए ज्ञान शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। शिक्षा या विद्या की तरह ज्ञान भी विषयों अथवा पदार्थों का नहीं होता। बाह्य जगत का ज्ञान तो सूचना मात्र है। वास्तविक ज्ञान तो स्वयं के जानने को कहा गया है। जो स्वयं को जानने की दिशा में अग्रसर हो गया वही सच्चा ज्ञानी और वही सच्चा शिक्षित भी। शिक्षा वास्तव में बाह्य परिवर्तन नहीं अपितु आंतरिक परिवर्तन है। शिक्षा मनुष्य का रूपांतरण है।

मनुष्य का रूपांतरण कैसे संभव है, इसके लिए महात्मा ज्योतिबा फुले के जीवन की एक वास्तविक घटना देखिए। महात्मा फुले एक महान् समाज-सुधारक और निर्भीक व्यक्ति थे। उन्होंने न केवल अपनी पत्नी सावित्रीबाई को पढ़ाया-लिखाया अपितु स्त्रियों के लिए पाठशाला भी खोली। समाज के कुछ लोगों को यह स्वीकार नहीं था। उन्होंने महात्मा ज्योतिबा फुले की हत्या करने के लिए कुछ लोगों को तैयार कर लिया। दो व्यक्ति ज्योतिबा फुले की हत्या के उद्देश्य से उनके घर पहुंचे। महात्मा फुले के यह पूछने पर कि उनकी कोई दुश्मनी नहीं है फिर भी वे क्यों उनकी जान लेना चाहते हैं, तो हत्यारों ने बताया कि वे यह सब पैसे के लिए कर रहे हैं। तब महात्मा फुले ने पत्नी से कहा, ''सावित्री, मेरे मरने के बाद भी शिक्षा और समाज-सुधार का काम जारी रखना।'' उसके बाद महात्माजी ने हत्यारों से कहा कि वे मरने के लिए तैयार हैं। साथ ही उन्होंने हत्यारों से पूछा, ''आपके बच्चे पाठशाला तो जाते होंगे? यदि नहीं जाते तो कल ही पाठशाला में उनका नाम लिखवा देना, ताकि बड़े होने पर वे कोई सही काम-धंधा कर सकें और पैसे के लिए किसी की हत्या करने की नौबत न आए।''

ज्योतिबा की बातों से उन लोगों का मन ही बदल गया। हत्या करना तो दूर, वे उनके शिष्य बन गए। एक तो बाद में पढ़-लिख कर वेद-शास्त्रों का प्रकांड पंडित बन गया। महान् व्यक्तियों के संपर्क में आकर, उनके श्रेष्ठ आचरण से प्रभावित होकर सही मार्ग पर अग्रसर होना ही वास्तविक शिक्षा है और इसके लिए किसी विद्यालय, विश्वविद्यालय या अन्य किसी बड़े शिक्षा-संस्थान में जाने की भी जरूरत नहीं।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम शिक्षा-संस्थानों की उपेक्षा करें अथवा पढ़ना-लिखना छोड़ दें। मनुष्य के बाह्य विकास एवं वास्तविक शिक्षा प्राप्ति के लिए साक्षरता तथा औपचारिक शिक्षा भी अनिवार्य है। अनौपचारिक शिक्षा तो हम बिना किसी प्रयास के भी प्राप्त करते रहते हैं लेकिन हमारी अनौपचारिक शिक्षा भी ऐसी हो जो हमारे आन्तरिक रूपांतरण में सहायक हो। इसके लिए भी हमें अपने लिए सही परिवेश, अच्छे मित्रों व सहयोगियों, अच्छी पुस्तकों तथा अच्छी आदतों के चुनाव की योग्यता विकसित करनी होगी। सही अर्थों में तभी हम शिक्षित होने की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं, अपना सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।

ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034

तकनीक और तकदीर के सिकन्दर : स्टीव जॉब्स

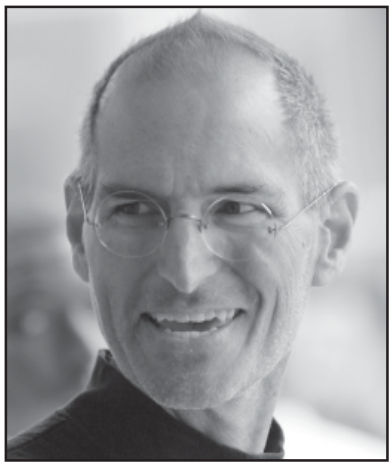

बचपन में अनाथ। पढ़ाई बीच में छोड़नी पड़ी। कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की कोई डिग्री भी नहीं ले पाए, फिर भी दुनिया को टेक्नालॉजी और डिजाइन का मिश्रण अपने हर आविष्कार में दिया। स्टीव के जीवन का एक-एक पल दुनिया को निरन्तर प्रेरणा देता रहेगा।

मोबाइल कम्प्यूटिंग क्रान्ति के प्रणेता, दुनिया की सूरत बदलने वाले, प्रौद्योगिकी क्षेत्र की अग्रणी कम्पनी एप्पल के सह-संस्थापक स्टीव जॉब्स का पिछली 7 अक्टूबर को अग्नाशय (पेंकियाज) के कैंसर से निधन हो गया। वे 56 वर्ष के थे। पर्सनल कम्प्यूटर व स्क्रीन पर मौजूदा छवियों को माउस से क्लिक कर नए सांस्कृतिक परिवर्तन का सूत्रपात करने का श्रेय उन्हीं को है। उन्होंने हाल ही में आईपाड, पोर्टेबल म्यूजिक प्लेयर (आई ट्यून्स), आई फोन व आई पेड टेबलेट दुनिया को दिये थे। एप्पल कम्पनी पूरी कृतज्ञता के साथ घोषणा करती है कि स्टीव की प्रतिभा, जुनून और ऊर्जा के कारण ही हमारे जीवन को बेहतर व समृद्ध बनाने वाले अनगिनत नयी-नयी बातें सम्भव हो सकीं। स्टीव की वजह से अब दुनिया बहुत बेहतर हो गयी है। उनकी पहचान महान् वैज्ञानिक आइन्स्टीन के रूप में भी होने लगी है।

सीरियायी मुस्लिम छात्र अब्दुल फतेह जॉन जंदाली और अमरीकन छात्रा जोआन शिबल के विवाह पूर्व 24 फरवरी, 1955 के दिन एक सन्तान पैदा हुयी। उन्होंने उसको अनाथालय में दे दिया। वहां से केलिफोर्निया निवासी अर्मीनियायी दम्पती पाल और क्लारा जॉब्स ने बालक को गोद ले लिया। बालक जॉब्स की स्कूली पढ़ाई केलिफोर्निया में ही हुयी। वे स्कूली समय के बाद हेवेट पैकार्ड कम्पनी की ओर से होने वाले लेक्चर में जाने लगे। वहीं पार्टटाइम नौकरी भी कर ली। फिर जॉब्स पोर्टलेण्ड के रीड कॉलेज में भर्ती हुए किन्तु फीस नहीं दे पाने के कारण पहले सेमेस्टर में ही पढ़ाई छोड़नी पड़ी; किन्तु कॉलेज की कैलीग्राफी कक्षाएं नहीं छोड़ीं। उस समय जॉब्स अपना खर्च चलाने के लिए कोक की खाली बोतलें बेचते तथा इस्कान मन्दिर में मुफ्त भोजन करते थे।

जॉब्स पहली बार 18 साल की उम्र सन् 1973 में अपने मित्र डेन कोट्टके के साथ भारत आये। उनका उद्देश्य कुछ आध्यात्मिक तो कुछ हिप्पीपना था। वे हनुमान भक्त नीम कटोरी बाबा की सत्संग के लिए आये थे, किन्तु बाबा पहले ही चल बसे थे। उन्होंने भारत में जो कुछ देखा, उससे वे प्रभावित कम परेशान ज्यादा हुए। यहां की गरीबी और भीड़भाड़ देखकर उनका मन अशान्त हो गया। भारत यात्रा में उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया, किन्तु भारत के साथ उनके मन के तार जुड़ नहीं पाये।

21 साल की उम्र (1976) में जॉब्स ने अपने पिता के गैराज से एप्पल कम्पनी की शुरूआत की। एप्पल-1 कम्प्यूटर बनाया ओर अगले ही वर्ष एप्पल-2 बनाया जो पहला पर्सनल कम्प्यूटर था, जिसपर रंगीन ग्राफिक्स की सुविधा थी। 30 वर्ष की उम्र (1985) में उन्हें कम्पनी छोड़नी पड़ी, लेकिन हार नहीं मानी और अगले ही वर्ष कम्प्यूटर सिस्टम बनाने वाली 'नेक्स्ट' कम्पनी की शुरूआत की। 1989 में पर्सनल कम्प्यूटर लान्च करने के बाद 1995 में एनीमेशन फिल्में बनानी शुरू कर दीं। 1997 में फिर एप्पल कम्पनी के सलाहकार के रूप में लौटे। घाटे में चल रही कम्पनी को लाभ में लाए और क्रमशः आई मैक (1999) आईपॉड (2001), आईट्यून्स (2008) तथा आई पेड (2010) तथा आईपेड-2 तथा आईफोन 4 एस आविष्कृत किये। क्रमशः वे एप्पल कम्पनी के चेयरमेन बन गये।

अमेरिका की स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी ने स्टीव जॉब्स को दीक्षान्त भाषण देने के लिए बुलाया। जॉब्स ने जो भाषण वहां दिया वह दुनिया भर के युवाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत बन गया। मेनेजमेंट व टेक्नालॉजी के छात्र 12 जून, 2005 को दिये गये जॉब्स के भाषण को हमेशा अपने साथ रखते हैं। जॉब्स ने जो कहा वह संक्षेप में इस प्रकार हैं :

भूख रखिये, नासमझ मित्र बने रहिए

दुनिया की एक श्रेष्ठ यूनिवर्सिटी से आपके उत्तीर्ण होने पर मैं आज आपके

साथ मौजूद रहते हुए स्वयं को सम्मानित महसूस कर रहा हूं। मैं स्नातक नहीं हो सका। पहली बार मैं किसी कॉलेज के दीक्षांत कार्यक्रम के इतने करीब आया हूं। आज मैं अपनी जिंदगी की तीन कहानियां आपको सुनाना चाहता हूं। बस यही, कोई बड़ी बात नहीं, सिर्फ तीन कहानियां :

पहली कहानी : कॉलेज छोड़ने और बिन्दुओं को जोड़ने के बारे में-

मैंने रीड कॉलेज 6 महीने में ही छोड़ दिया था, लेकिन इसकी तैयारी काफी पहले हो चुकी थी। मेरी कुवांरी मां कॉलेज की छात्रा ने मुझे किसी को गोद देने का फैसला किया; किन्तु जो मुझे गोद ले रहे थे वे ज्यादा पढ़े-लिखे (स्नातक) नहीं थे। यह ज्ञात होते ही मेरी मां ने गोद के कागजों पर दस्तखत करने से मना कर दिया। किन्तु; जब उन्होंने (केलिर्फोनिया के पाल और क्लारा जॉब्स ने) मुझे कॉलेज भेजने का विश्वास दिलाया तो मां तैयार हो गयी। मेरे लिए जो कॉलेज चुना गया वह स्टेनफोर्ड जैसा ही महंगा था। मां-बाप की सारी कमाई फीस में चली जाती थी। मैंने महसूस किया, इस पढ़ाई से कोई फायदा नहीं है, मैंने कॉलेज छोड़ने का निर्णय कर लिया। तब यह भयावह निर्णय था; किन्तु आज सोचता हूं वह एक अच्छा निर्णय था। यदि मैंने कॉलेज नहीं छोड़ा होता तो कैलिग्राफी की क्लासें नहीं की होतीं और पर्सनल कम्प्यूटर बनाने में सुन्दर टाइपोग्राफी शामिल नहीं होती।

रीड कॉलेज उस समय का सम्भवतः कैलीग्राफी का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान देता था। वहां मैंने सेरिफ और सेन सेरिफ टाइपफेस के बारे में जाना, यह भी जाना कि किन चीजों से टाइपोग्राफी बढ़िया होती है। यह सब इतना सुन्दर, ऐतिहासिक और कलात्मक था कि जिसे विज्ञान नहीं पकड़ सकता और मेरे लिए वह आकर्षण का विषय बन गया। दस साल बाद जब हम पहला मेकिन्टोश कम्प्यूटर डिजाइन कर रहे थे तब वह शिक्षा मेरे काम आई। कॉलेज में रहते हुए बिन्दुओं को सामने की ओर जोड़ना असंभव था। किन्तु दस साल बाद पलट कर देखता हूं तो तस्वीर बहुत साफ-साफ नजर आती है। मैं फिर कहूंगा आगे देखते हुए आप बिन्दुओं को नहीं जोड़ सकते, आप उन्हें पीछे देखते हुए जोड़ सकते हैं। आपको यह विश्वास करना ही होगा कि भविष्य में बिन्दु किस तरह जुड़ेंगे– आपके अपने साहस, भाग्य, जीवन-शैली, कर्म या किसी और पर। इस दृष्टिकोण ने मुझे कभी निराश नहीं किया, इसी विश्वास ने मेरा जीवन कुछ हटकर बनाया।

दूसरी कहानी : प्यार और घाटे के बारे में

मैं भाग्यशाली था। मैंने वह पाया जो जीवन के प्रारम्भ में मैं करना चाहता था। बोन और मैंने अपने माता-पिता के गैरेज में एप्पल की शुरूआत की। तब मैं 20 साल का था। हमने कड़ी मेहनत की। 10 साल में एप्पल दो बिलियन डालर और चार हजार कर्मचारियों वाली कम्पनी बन गई। हम अपनी सबसे खूबसूरत कृति 'मेकिंटोश' बाजार में उतार चुके थे। किन्तु; मैं तीस साल का ही हुआ था कि मुझे कम्पनी से निकाल दिया गया। सहज प्रश्न था– आप उस कम्पनी से कैसे निकाले जा सकते हो जिसको खुद आपने ही शुरू किया था? वस्तुतः, जब एप्पल बढ़ा, हमने एक ऐसे व्यक्ति को नौकरी पर रखा जिसको हमने बेहद योग्य समझा था। पहले साल सब ठीक रहा किन्तु अगले ही वर्ष भविष्य के बारे में हमारे दृष्टिकोण अलग होने लगे, बाहर गिरावट आने लगी। हमारे बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स ने उसका पक्ष लिया। मैं बाहर हो गया। मेरी युवा जिन्दगी का फोकस गुम हो गया। यह विनाशकारी था। अगले कुछ महीनों तक मैं तय नहीं कर पाया कि अब मुझे क्या करना है। मैं असफलता का एक प्रतीक था। मैंने सिलिकान वैली से भाग जाने का विचार भी किया, पर मैंने सब कुछ फिर से शुरू करने की ठान ली। तब मैंने महसूस नहीं किया था कि एप्पल से निकल जाना मेरी जिन्दगी की सबसे अच्छी घटना थी।

अब मेरी जिन्दगी का सबसे सक्रिय भाग शुरू हुआ। मैंने 'नेक्स्ट' और 'पिक्सर' नाम की कम्पनियां शुरू कीं। पिक्सर ने पहली कम्प्यूटर निर्मित एनीमेशन फीचर फिल्म 'टाय स्टोरी' बनाई। आज यह विश्व का सबसे सफल एनीमेशन स्टुडियो है। फिर एप्पल ने नेक्स्ट को खरीद लिया। मैं एप्पल में लौट आया। सच में यदि मुझे एप्पल से नहीं निकाला जाता तो यह सब नहीं होता। यह एक मरीज के लिए कड़वी दवाई थी। यह जिन्दगी आपके सिर पर एक ईंट से प्रहार करे तो भी भरोसा नहीं छोड़ें। पिक्सर की शुरुआत के साथ मैं एक अद्भुत महिला के प्रेम में पड़ा जो बाद में मेरी पत्नी बनी। लारेंस और मैं एक शानदार दम्पत्ति हैं।

बड़े काम करने का एक ही रास्ता है कि जो आप कर रहे हैं, उससे आपको प्यार हो। अगर वह आपको अभी तक नहीं मिला है तो खोजते रहिए। रुकिये

__बड़े__ काम करने का एक ही रास्ता है कि जो आप कर रहे हैं, उससे आपको प्यार हो। अगर यह आपको अभी तक नहीं मिला है, तो खोजते रहिए, संतुष्ट मत होइए।

__दुनिया__ का सबसे अमीर आदमी बनने से ज्यादा महत्त्वपूर्ण मेरे लिए यह है कि रात में सोते समय मैं यह कह सकूं कि आज मैंने कुछ बहुत बढ़िया काम किया है।

__यह__ बात सनकी, पागल और विद्रोहियों के लिए है जो परिस्थितियों को अलग नजरिये से देखते हैं। उन्हें कुछ भी समझा जाए, लेकिन हम उन्हें जीनियस मानते हैं। क्योंकि, जो लोग ऐसी सोच रखते हैं, वे ही दुनिया बदल सकते हैं।

मत। जब आपको वह मिलेगा तो तहेदिल से आपको यह पता चल जायेगा और बिल्कुल किसी महान् रिश्ते की तरह, जैसे-जैसे समय बीतेगा वह बेहतर से बेहतर होता जाएगा, इसलिये खोजते रहिए, रुकिये मत, जब तक वह आपको मिल नहीं जाए।

तीसरी कहानी : मौत के बारे में

जब मैं 17 वर्ष का था तो मैंने पढ़ा था– अगर आप हर दिन को अपने आखिरी दिन की तरह जीते हैं तो किसी दिन आप निश्चित रूप से सही साबित होंगे। इस बात ने मेरे ऊपर गहरा प्रभाव छोड़ा और तब से, यानी पिछले 33 साल से मैं रोज सुबह आइने में देखकर खुद से पूछता हूं– अगर आज मेरा आखिरी दिन होता तो क्या मैं वही करना चाहता जो आज करने वाला हूं? और, जब काफी दिनों तक इस सवाल का नकारात्मक उत्तर मिलता है तो मैं समझ जाता हूं कि मुझे कुछ बदलने की जरूरत है।

करीब एक साल पहले मैंने कैंसर की जांच कराई। मैंने सुबह 7:30 बजे स्कैन कराया और इसमें मेरे अग्नाशय पर गांठ होने का साफ पता चल गया। मैं इससे पहले कभी जानता तक नहीं था कि अग्नाशय क्या है? चिकित्सकों ने बताया कि मुझे एक तरीके का कैंसर है, जो लाइलाज है। मुझे यह मानकर चलना चाहिए कि मैं तीन से छः माह से ज्यादा जिंदा नहीं रहूंगा। मेरे चिकित्सक ने मुझे सलाह दी कि मैं घर जाऊं और अपने काम को एक क्रम में निपटाऊं, जो कि एक तरह से चिकित्सक का मरने के लिए तैयार हो जाने का संकेत होता है। यानी कि कोशिश करके जो भी तुमने सोचा था, वह सब अपने बच्चों को बता दो, जोकि तुम अगले 10 सालों में बताने वाले थे। इसका मतलब कि अब आगे कुछ भी नहीं, अलविदा कहने का वक्त आ गया है।

मैंने उस रोज कैंसर की जांच-प्रक्रिया (निदान) को पूरा जीया। देर शाम मेरी बायोप्सी हुई, जहां उन्होंने मेरे गले में नीचे पेट से होते हुए आंतों तक एक एंडोस्कोप डाला। अग्नाशय में एक सुई चुभोई और कुछ कोशिकाएं निकालीं। मैं बेहोश था, लेकिन मेरी पत्नी जो वहां मौजूद थी, उसने मुझे बताया कि चिकित्सकों ने मेरी कोशिकाओं को माइक्रोस्कोप से देखा और जांचकर वे चिल्लाने लगे कि मुझे बहुत ही दुर्लभ किस्म का अग्नाशय कैंसर है, जिसका सर्जरी से ही निदान सम्भव है। इसके बाद मेरी सर्जरी की गई और अब मैं स्वस्थ हूं।

यह वो वक्त था, जब मैंने मौत को सबसे नजदीक से देखा और उम्मीद करता हूं कि अगले कुछ दशकों में बस यही सबसे नजदीकी हो। उस दौर को जीकर अब मैं आपसे यह ज्यादा मजबूती से कह सकता हूं कि मुझे मौत लाभकारी लगी। लेकिन मृत्यु पूरी तरह से आध्यात्मिक अवधारणा है। दुनिया में कोई भी आदमी मरना नहीं चाहता। यहां तक कि जो लोग दिल में स्वर्ग की ख्वाहिश पाले रखते हैं, वे भी मरना नहीं चाहते। ऐसी नाटकीय बातों के लिए क्षमा चाहता हूं, पर हकीकत तो यहीं ठहरती है।

आपके पास समय बहुत कम है, इसलिए इसे किसी और की जिंदगी जीने के लिए बर्बाद मत करो। सिद्धांतों के भंवर में मत उलझो। किसी और के मत को अपनी भीतरी आवाज पर हावी मत होने दो। सबसे अहम अपने दिल और अन्तर्ज्ञान की सुनो और उसका अनुसरण करो।

जब मैं जवान था, 'द होल अर्थ' कैटलॉग का अद्भुत प्रकाशन हुआ करता था, जो मेरी पीढ़ी के लोगों में बाइबिल की तरह था। यह मेरे साथी स्टीवर्ट ब्रांड द्वारा तैयार किया गया था। यह 60 के अंतिम दशक में पर्सनल कम्प्यूटर और डेस्कटॉप पब्लिशिंग से पहले मौजूद था। यह आदर्शवादी, ज्ञान से भरपूर और विचारों से लबालब था। स्टीवर्ट और उसकी टीम ने इसके कई संस्करण निकाले और जब इसने अपना उद्देश्य लगभग पूरा कर लिया तब उन्होंने इसका आखिरी संस्करण निकाला। यह 70 के दशक के मध्य की बात है। आखिरी संस्करण के पिछले कवर पर उन्होंने एक देश की किसी सड़क पर सुबह के दृश्य का चित्र लगाया था। इसके नीचे लिखा गया था– 'स्टे हंग्री, बी फूलिश' (भूख रखिए, नासमझ बने रहिए) यह उनका आखिरी संदेश था। मैंने इन शब्दों को हमेशा खुद की इच्छाओं में शामिल रखा है। अब आप स्नातक हो गए हैं, तो मैं आपके लिए भी यही दुआ करता हूं– 'स्टे हंग्री, बी फूलिश।'

आप सभी का बहुत शुक्रिया!

- अणुव्रत डेस्क

हम में से जिन भी सौभाग्यशाली लोगों को स्टीव जॉब्स के साथ काम करने का मौका मिला है, उन सबके लिए यह बहुत ही गर्व की बात है। मुझे व्यक्तिगत तौर पर स्टीव की कमी बहुत खलेगी।

- बिल गेट्स,
माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक

मैं स्टीव से करीब तीस साल पहले मिला था। वे मेरे सहकर्मी रह चुके हैं, प्रतिद्वंद्वी और एक दोस्त भी। उनका ऐसे जाना हम सभी के लिए निजी क्षति की तरह है। उनकी जगह को कोई नहीं भर सकता।

- मार्क जकरबर्ग,
फेसबुक के संस्थापक

स्टीव, मेरे दोस्त और मार्गदर्शक बनने के लिए शुक्रिया! दुनिया को ये दिखाने के लिए शुक्रिया कि आप अगर कुछ बनाते हैं तो उससे दुनिया बदली जा सकती है। मुझे आपकी कमी हमेशा महसूस होगी।

- लैरी पेज,
गूगल के संस्थापक

स्टीव जॉब्स सच्चे अर्थों में एक महान् आविष्कारक थे। उन्होंने हमें संवाद और संपर्क के नवीनतम तरीके सिखाए। उनका इस तरह से जाना बहुत ही दुखदायी है।

- मनमोहन सिंह,
प्रधानमंत्री, भारत

कुछ क्षण स्वयं के साथ जीएं

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

सभी कलाएं हैं विकलाएं
पंडित सभी अपंडित हैं।
नहीं जानते कैसे जीना
केवल महिमा मंडित हैं।।

आचार्य तुलसी की व्यवहार बोध की इन पंक्तियों में स्वस्थ जीवन शैली का निदर्शन है। भोजन सभी करते हैं, पर भोजन कैसे करें? यह सब नहीं जानते। पानी भी सब पीते हैं, पर पानी कैसे पीएं? इस प्रविधि के ज्ञाता बहुत कम लोग होते हैं। सांस जीवन की अपरिहार्यता है, अतः सांस सभी लेते हैं, पर सम्यक् सांस कैसे लें यह कम ही लोग जानते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ का कथन है भोजन को पीएं। पानी को खाएं। बात बहुत अजीब है, पर है दिलचस्प और वैज्ञानिकता से भरपूर। भोजन को इतना चबाएं कि वह पानी जैसा पतला हो जाए, जिसे पीया जाए। पानी को गट-गट करते न पीएं बल्कि घूंट-घूंट कर पीएं। मुंह में पानी को चबाएं ताकि लार ग्रन्थियों के रसायन उसमें मिलें और पानी खाने लायक हो जाए। भोजन करते समय हमारा सूर्य स्वर चले और पानी पीते समय चन्द्र स्वर चले। क्या यह संभव है? मुझे लगता है असंभव कुछ भी नहीं होता। अभ्यास के द्वारा भोजन में सूर्यस्वर व पानी पीते वक्त चन्द्र स्वर का प्रयोग किया जा सकता है।

विधायक सोच का वातायन : जीवन सभी जीते हैं पर कैसे जीएं? इस कलात्मक तकनीक को जानने वाले विरले व्यक्ति होते हैं। जीवन कितना लम्बा है, यह महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि कितना सरस, सुन्दर, शान्त, शालीन, शिष्ट और सिलसिलेवार पवित्र जीवन जीया है, यह महत्वपूर्ण है। जब तक जीएं जिन्दादिली के साथ जीएं, ज्योतिर्मय अंगारे की तरह जीएं, न कि निस्तेज राख की तरह। मुहूर्त ज्वलित श्रेयः न धूमयितं चिरम्'' में प्राणवान नियोजित संकल्पित जीवन का चित्रण झलकता है।

शर्त और शिकायत दो जुड़वां बहने हैं। मुझे कोई नहीं पूछता, मेरा सम्मान नहीं किया। मेरे साथ किसी का अपनापन नहीं। मेरे मन मुताबिक कोई काम नहीं होता..... ऐसा बड़ा अजीब वाकया है जहाँ शिकायत औरों से, परिवार से, पड़ोस से, बेटे और बहुओं से हो सकती है। पर सच यह है कटु सोच हमारी ऊर्जा का क्षरण करती है। संभावनाओं को बन्द कर देती है, प्रगति पर ब्रेक लगाती है। यह नकारात्मक सोच जिधर से गुजरती है, वहाँ की डाली, टहनी, पत्ते, फूल और जल को विनाश का पैगाम देती है। नकारात्मक सोच परिवार के विघटन की जननी है, सभा-संस्थाओं को मनोमालिन्य की विकृति देती है। अतः दूर भगाएं दूषित सोच को एवं विधायक सोच के वातायन से झांकें, जहाँ से उन्मुक्त प्रकाश, खुली हवा और जीवनीशक्ति मिलती है।

जिंदगी का उजला पहलू :

जिंदगी की जंग में वे ही जीतते हैं, वे ही सृजनशील होते हैं, जो लीक से हटकर कुछ नया करते हैं। जिनके भावों, विचारों व व्यवहारों में विधेयात्मक अवधारणा होती है। विधायक स्वप्न होते हैं। विधायक योजना का प्रारूप होता है। चिन्तन निर्णय और क्रियान्विति में सकारात्मक सोच की सुगम सृष्टि होती है। एक भक्त ने भगवान की उपासना की। भगवान धरती पर आए। भक्त से कहा मैं तुम्हारी भक्ति से खुश हूँ, तुम वरदान मांगो। लेकिन तुम्हें जितना मिलेगा, उससे दुगुना तुम्हारे पड़ोसी को मिलेगा। भक्त असमंजस में पड़ गया। पड़ोसी को दुगुना मिले यह कैसे हो सकता है। अतः भक्त ने नकारात्मक दृष्टि को सम्मुख रखते हुए कहा, भगवान! आप मेरा एक हाथ तोड़ दें, एक पैर तोड़ दें, एक आंख फोड़ दें। भगवान ने कहा तथास्तु! इसी आवाज के साथ जहाँ भक्त की एक आंख, एक हाथ, एक पैर ध्वस्त हुआ, पड़ोसी भक्त की दोनों आंखें, दोनों हाथ और दोनों पैर टूट गये। आखिर मिला क्या? चाहता तो भगवान से श्रेष्ठ वरदान पा सकता था। मगर दूसरा मेरे से ज्यादा समृद्ध, ज्यादा शक्ति-सम्पन्न व ज्यादा बलवान हो जाए यह मंजूर नहीं था। इस ईर्ष्या के मद्देनजर खुद को भी उसने भारी मुसीबत में डाल दिया। यह प्रसंग आह्वान करता है कि हम नकारात्मक ऊर्जा को अपने पास कदापि न आने दें। आचार्य भिक्षु की तरह विरोध को विनोद में बदल लें। विपरीत को अनुकूल बनाने का प्रयास करें। स्वामीजी ने कहा भाई! मैंने तुम्हारा मुंह देखा है अतः मुझे तो स्वर्ग मिलेगा और तुमने मेरा मुंह देखा है अतः तुम जानो और तुम्हारा नरक। हालांकि किसी का मुंह देखने से न स्वर्ग मिलता है और न नरक। पर भिक्षु स्वामी की सकारात्मक बुलन्दी ने उस व्यक्ति को प्रभावित किये बगैर नहीं छोड़ा। भीखणजी के पास कोई आता तो मुक्का मार जाता, कोई एक व्यक्ति आया ढेला मार गया, पर भीखणजी बौखलाए नहीं, घबराए नहीं। अलबत्ता उन्होंने यही कहा यह मेरा भक्त बनेगा, इसलिए ठोक-बजाकर परख रहा है कि जिस व्यक्ति को गुरु बना रहा हूँ, उसमें गुरुत्व, गौरव और गरिमा कितनी गहन है। यह है पूज्यपाद आचार्य भिक्षु की मनस्विता की विशाल सोच, गहन दायरा और उन्मुक्त नजरिया, जिसने हर श्रद्धालु को आकृष्ट किया और सदा सर्वदा के लिए अपना बना लिया।

आत्मदर्शन : गुणवत्ता का जनक :

आदमी को पराई थाली में घी ज्यादा लगता है। व्यक्ति स्वयं को नहीं दूसरों को जानने में, देखने में रुचि ले रहा है। दूसरों के छिद्रों का अवलोकन उसका स्वभाव हो रहा है। यह बहिर्मुखी दृष्टिकोण एक बड़ी भ्रान्ति है। महावीर कहते हैं अन्तर्मुखी बनो, यदि शांति से जीना चाहते हो। आचार्य महाप्रज्ञ का कथन है ''रहें भीतर,

अणुव्रत पाक्षिक के लेखकों का सम्मान, उपलब्धियाँ

देवेन्द्र कुमार हिरण को संघ सेवा पुरस्कार

जैन विश्व भारती, लाडनूं के अध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया ने केलवा (राजस्थान) में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित सभा में घोषणा की कि जैन विश्व-भारती द्वारा प्रतिवर्ष दिया जाने वाला प्रतिष्ठित संघ सेवा पुरस्कार इस बार गंगापुर के देवेन्द्रकुमार हिरण को दिया जायेगा। श्री हिरण इससे पूर्व मेवाड़ अणुव्रत समिति, राजस्थान प्रदेश अणुव्रत समिति एवं अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली द्वारा चार बार सम्मानित हो चुके हैं। इसी प्रकार अन्य अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से भी वे अनेक बार सम्मानित हुए हैं। भगवान महावीर निर्वाण शताब्दी समारोह (1995) में भारत जैन महामण्डल (राजस्थान) द्वारा 'समाज सेवी' तथा अणुव्रत आन्दोलन के पचासवें वर्ष (1999) में उन्हें 'अणुव्रत सेवी' अलंकरण मिल चुका है।

डॉ. कृष्णकुमार रत्तू को शिरोमणि हिन्दी साहित्यकार सम्मान

चण्डीगढ़ : 19 अक्टूबर : पंजाब सरकार के शिक्षा मंत्री सेवासिंह सेखवा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेन्स में जानकारी देते हुए कहा कि वर्ष 2010-2011 का हिन्दी साहित्य का शिरोमणि साहित्यकार पुरस्कार प्रसिद्ध हिन्दी व पंजाबी के लेखक डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू को दिया गया है। डॉ. रत्तू को यह पुरस्कार उनकी जीवनपर्यन्त साहित्यिक उपलब्धियों तथा समूचे हिंदी लेखन को मद्देनजर रखते हुए दिया जा रहा है। वे राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक सम्मानों से भी सम्मानित हो चुके हैं।

उल्लेखनीय है कि पंजाब सरकार प्रतिवर्ष शिरोमणि साहित्य पुरस्कार हिन्दी के अलावा संस्कृत, पंजाबी तथा उर्दू में भी प्रदान करती है। पुरस्कार में ढाई लाख रुपये नकद, प्रशस्ति पत्र सहित दोशाला प्रदान किया जाता है।

सत्यनारायण 'सत्य' की पुस्तक का विमोचन

रायपुर (राजस्थान) : अणुव्रत लेखक मंच के सदस्य व अणुव्रत (पाक्षिक) के लेखक युवा कवि एवं बाल साहित्यकार सत्यनारायण 'सत्य' का सद्य प्रकाशित बाल-कहानी-संग्रह 'अनोखा फैसला' का विमोचन राजस्थान साहित्य अकादमी–उदयपुर एवं सलिला संस्थान–सलूम्बर द्वारा आयोजित राष्ट्रीय बाल साहित्यकार सम्मेलन, सलूम्बर (राजस्थान) में किया गया। पुस्तक लोकार्पण सलिला की संस्थापिका विमला भण्डारी, भारतीय बाल कल्याण संस्थान के निदेशक एवं बाल साहित्य समीक्षा के सम्पादक डॉ. राष्ट्रबंधु (कानपुर), बाल साहित्य सृजनपीठ के निदेशक व देवपुत्र (मासिक) के सम्पादक कृष्णकुमार अष्ठाना, सुप्रसिद्ध रचनाकार डॉ. भगवतीलाल व्यास के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। युवा रचनाकार 'सत्य' का इससे पूर्व एक बाल-काव्य-संग्रह 'दिन फिर आए छुट्टी वाले' भी प्रकाशित हो चुका है।

जिएं बाहर'' परमार्थ यात्रा का स्वर्णिम दीप-स्तंभ है। एक आधुनिक लड़की की आदतों से उसकी दादी नाराज हो गईं। माँ ने बेटी को समझाया बड़ों के साथ विनयपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। जाओ दादी के पास अपना अविनय खमाओ। लड़की दादी मां के पास गई और दादी के कान पकड़कर कहती है आप मुझे क्षमा करें, प्रसन्न हो जाएं। फिर मां ने पूछा क्या दादी से मिली। बेटी ने कहा हाँ-हाँ मैं दादी से मिली। दादी के कान पकड़कर उनसे क्षमा मांगी और प्रसन्न होने के लिए कह दिया।

यह एक व्यंग्य है माफी मांगने का। जीने का बेहतर तरीका है हम स्वयं को देखें, स्वयं को जानें। स्वयं की कमियों का अवलोकन करें और उन्हें दूर करने का प्रयास करें। आत्म-दर्शन गुणवत्ता का जनक है।

दुनिया में शक्तिशाली की पूजा होती है। शक्तिहीन को कोई नहीं पूछता। शक्ति-सम्पन्न, ज्ञान-सम्पन्न, चरित्र-सम्पन्न और संस्कार-सम्पन्न बनने के लिए लक्ष्य का निर्धारण हो। टाइम का मेनेजमेन्ट हो, दृढ़ इच्छा-शक्ति के साथ लक्ष्य की दिशा में गतिमान हो, अदम्य आत्म-विश्वास हो तो हर मंजिल कदमों में होती है। भागमभाग भरी जिंदगी जीने वालों को धन सुविधा दे सकता है, पर सुख नहीं दे सकता। धन सम्मान दिला सकता है, पद दिला सकता है, पर आत्म-प्रतिष्ठा नहीं। अतः वक्त का तकाजा है कि जीने का अंदाज बदलें, दृष्टि बदलें, भाव बदलें, विचार बदलें।

कुछ क्षण स्वयं के साथ जीएं। आत्मदर्शन के साथ दर्शन आनन्द का अनुभव करें। आत्म निरीक्षण करें। प्रयोग के साथ जिएं। बेशक दो प्रयोग दिनचर्या के साथ जोड़ दें। एक लम्बा श्वास लें, लम्बा श्वास छोड़ें यानि दीर्घ श्वास प्रेक्षा करें। दूसरा प्रयोग ज्योति केन्द्र पर सफेद रंग का ध्यान करें। 5 मिनट का यह प्रायोगिक दर्शन जीवन शैली को नया शिखर, नये मानक और नवोन्मेष दे सकता है। ■

समय की पहरेदारी : जीवन की रखवाली

● साध्वी स्वर्णरेखा ●

प्राची में लालिमा फूटते ही क्षितिज को चीरकर सूरज ऊपर चढ़ता है। सूर्य के आगमन के साथ ही मनुष्य अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करता है। पूरे दिन मशीन की तरह यांत्रिक जीवन व्यतीत करता है। एक के बाद एक कार्य करता चलता है। कार्य का प्रारम्भ कोई भी कर सकता है, कार्य को पूर्णता तक पहुंचाने वाला वीर पुरुष होता है तथा उपलब्धि के सांचे में ढालने वाला ही वीर, धीर समयज्ञ पुरुष कहलाता है।

समय नदी का प्रवाह है। वह कभी रुकता नहीं, बहता ही रहता है। समय का मूल्य समझकर उसका सही उपयोग करने वाला जीवन को सार्थक कर लेता है। समय के बुनियादी पत्थर से नव-निर्माण का सुनहरा भविष्य लिखने वाला ही इसके वास्तविक अर्थ को जान सकता है। जहां आंखों में तैरते स्वप्न पूरे होते हैं, सुरक्षित जीवन-मूल्यों को जीने का नया अहसास मिलता है, वही शिक्षा, रोजगार चिकित्सा आदि में उन्नति प्राप्त कर सकता है। समय का मूल्य अनेक महापुरुषों ने बताया, लेकिन उसकी उपेक्षा से आदमी न सुखी बना, न सुरक्षित बना, न स्वावलम्बी। जीवन की पहरेदारी करने वाले समय को गलत भावनाओं ने लील लिया। यदि मनुष्य समय के साथ चलता तो शाश्वत मूल्यों की मजबूत नींव नहीं हिलती, केवल आदर्श के नारे नहीं लगते। प्रेम, परस्परता, परोपकार की विकास यात्रा में प्रश्नचिह्न नहीं लगता। आज मनुष्य का विश्वास बदल गया। सौहार्द घायल हो गया। व्यक्ति सफलता के वृक्ष के पत्तों को तो सींच रहा है किन्तु समय के बीज को नहीं सींचता।

हम कितना जीते हैं, यह महत्त्वपूर्ण नहीं। हम किस प्रकार जीते हैं उसी से जीवन का अंकन किया जाता है। समय के मूल्य को पहचानने वाला ही सार्थक दिशाओं में सफलता की समीर ले सकता है। वर्षा ऋतु में किसान खेती करने के बजाय आलस में पड़ा रहे, व्यापार के सीजन में व्यापारी बाहर घूमने चला जाये, परीक्षा के दिनों में विद्यार्थी नींद में सोता रहे, युद्ध के समय सेनापति कर्त्तव्य से च्युत हो जाये, तो वे जीवन में प्रगति नहीं कर सकते। समय के मूल्य को पहचानने वाला ही वर्तमान में जी सकता है। पश्चिमी विचारक जॉन रस्किन अपनी मेज पर एक पत्थर का टुकड़ा रखते थे, जिस पर 'आज' लिखा रहता। किसी ने पूछा यह क्यों? रस्किन ने उत्तर दिया–वर्तमान मेरे हाथ से मक्खन की भांति निकल न जाए, यह मुझे याद दिलाता है कि अपने कार्य को आज ही करना; क्योंकि अतीत नष्ट है, भविष्य अजन्मा, केवल वर्तमान में जीने वाला ज्यादा सोचने के बजाय कुछ करने में सफल हो सकता है। अतीत की स्मृतियां चिंता को पैदा करती हैं तो वर्तमान का दर्शन स्वयं के जीवन को व्यवस्थित बना देता है। समय सबका सूत्रधार है। सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा कहलाते हैं, पालक विष्णु, संहारक के रूप में महेश का नाम आता है किन्तु समय ही व्यक्ति को जन्म देता है समय ही पालन-पोषण करता है। समय के साथ व्यक्ति अनेक इलाज कराने के बावजूद भी मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। समय ही संहारक है। समय ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश है।

भगवान् महावीर ने कहा–''समयं गोयम मा पमायए''–गौतम क्षण मात्र भी प्रमाद मत कर। प्रमाद का प्रहार समय की जड़ों को हिला देता है। प्रमाद तमोगुण है, जिससे आलस्य बढ़ता है और आलस्य से विस्मृति। विस्मृति दीमक के समान समस्त मस्तिष्कीय शक्ति को चट कर जाती है तथा जीवन को खोखला बना देती है। प्रमाद आत्मोन्नति में बाधा डालने वाला है। भतृहरि ने आलस्य को मनुष्य का शत्रु माना है। महात्मा बुद्ध ने कहा–*''प्रमादोमच्चुतोपदम्''* प्रमाद, विस्मरण मृत्यु ही हैं। समय का मूल्य आंकने वाला ही इस पर विजय प्राप्त कर सकता हैं। आज भारत के पास सब कुछ होकर भी वह सबसे पीछे है।

अनेक व्यक्ति अर्थाभाव में जीते हैं, जिन्दगी को भार मानते हैं। यदि जिन्दगी को उपहार बनाना है तो पुरुषार्थ को गले लगाना होगा। जीवन निर्माण का अवयव है–समय। समय अनमोल है। समय अर्थात् जीवन। समय का उपयोग तो जीवन का उपयोग है। संसार में तीन प्रकार के उत्तम पुरुष हैं–कर्म-उत्तम-पुरुष वासुदेव होते हैं, वे अपने पराक्रम से विजय पाकर संसार में कीर्ति की स्थापना करते हैं। भोग उत्तम-पुरुष

समय तो एक लहर के समान है जो सुप्त मन को तरंगित कर चंचल बना देती है, उसमें गति भर देती है। समय तो एक किरण सदृश है जो अज्ञान, अविश्वास की मनोकारा में ज्ञान, आत्मविश्वास एवं जागृति का आलोक भर नई स्फूर्ति, नई चेतना, नई ताजगी से मन में पुलक भर देती है। समय तो जीवन–स्पर्शी चेतना है जो व्यक्ति के अन्तःकरण को आलोकित करती है।

- चक्रवर्ती राजा, उससे बढ़कर भोग सामग्री वाला संसार में कोई दूसरा नहीं। धर्म उत्तम पुरुष तीर्थंकर होते हैं, स्व-पर-हितकारी होते हैं, ऐसी धर्म-साधना अन्य नहीं कर पाते। उनके समान कोई ज्ञानवान नहीं हैं। कर्म-उत्तम-पुरुष ने संसार में कीर्ति को प्राप्त किया। समय के साथ चलकर, भोग उत्तम पुरुष ने भी भाग्य के साथ समय को पहचाना किन्तु धर्म उत्तम पुरुष तो वही बन सकता है जिसने समय के साथ मित्रता स्थापित कर ली। समय का सदुपयोग ही धर्म-उत्तम- पुरुष के जीवन का पर्याय है।

भारतीय लोगों की दुर्बलता है–समय की अनियमितता। समय से एक घंटा लेट कार्य करना यहां के जन-मानस में घर बनाये हुए है। यदि चार बजे का समय दिया जाता है तो पांच बजे वह कार्य शुरू होता है। शादी में जाओ तो शादी लेट, एयरपोर्ट पर जाओ तो प्लेन लेट, रेलवे स्टेशन जाओ तो ट्रेन लेट, बस स्टैण्ड जाओ तो बस लेट।

एक बार पति-पत्नी में झगड़ा हो गया। पति गुस्से में आकर बोला–मुझे गुस्सा मत दिलाओ वरना मैं कुछ कर लूंगा। पत्नी भी गुस्से में बोली–मुझे परवाह नहीं जो करना है सो करो। पति ने कहा मैं सचमुच जा रहा हूं, ट्रेन के आगे कूदकर आत्महत्या कर लूंगा। पत्नी ने कहा मैं कब रोकती हूं। पति ने कहा मैं जाने के लिए कपड़े बदलता हूं तब तक तू चार परांठे बना दे। पत्नि ने कहा–मरने तो जा रहे हो। फिर भी पर रांठे की कह रहे हो। पति बोला–यदि ट्रेन लेट हो गई तो? मैं मरने जा रहा हूं, भूखा मरने नहीं।

दुनिया में जितने भी इंसान हैं, सभी को समय बराबर ही मिलता है। एक आदमी समय को पाकर आत्म-साक्षात्कार करता है, एक व्यक्ति उसी समय में गीता रच देता है, उसी समय में चोर-आतंक का नशा छा जाता है तो महापुरुष उसी समय में अपने जीवन के सृजन के साथ-साथ अनेक को सृजन-कला सिखा देते हैं।

न्यूटन ने एक पेड़ से टूटकर नीचे गिर रहे सेव को देखा, बहुमंजिली इमारत से गिरती गेंद को देखा, मन में उसी क्षण जिज्ञासा बढ़ी, इसी जिज्ञासा ने विश्व को गुरुत्वाकर्षण का महत्त्वपूर्ण सिद्धांत दे दिया। हीरा मूल्यवान होता पर उसकी कीमत जौहरी ही जानता है, उसी प्रकार समय की कीमत महापुरुष ही जान सकता हैं। महापुरुष हमारे आदर्श की पराकाष्ठा रहे हैं। वे समय के साथ चले तभी उनके आदर्श-मानक हमारे लिए आदरणीय एवं ग्रहणीय बने हुए हैं। नेपोलियन बोनापार्ट समय के बड़े पाबंद थे, वे अपने नियमित कार्य में एक सैकंड का भी विलम्ब नहीं करते और न ही अपने किसी कर्मचारी को लेट होने देते। एक बार उनका मंत्री दस मिनट लेट हो गया। नेपोलियन ने देरी का कारण पूछा। मंत्री ने उत्तर दिया–मेरी घड़ी संभवतः दस मिनिट लेट हो सकती है। बोनापार्ट ने कहा–या तो तुम अपनी घड़ी बदलो अन्यथा मैं तुम्हें बदल दूंगा। हाथों में बंधी घड़ी शोभा हो सकती है, किन्तु जब उसका ध्यान नहीं रखा जाता है तो वही भार बन जाती है।

समय तो एक लहर के समान है जो सुप्त मन को तरंगित कर चंचल बना देती है, उसमें गति भर देती है। समय तो एक किरण सदृश है जो अज्ञान, अविश्वास की मनोकारा में ज्ञान, आत्मविश्वास एवं जागृति का आलोक भर नई स्फूर्ति, नई चेतना, नई ताजगी से मन में पुलक भर देती है। समय तो जीवन-स्पर्शी चेतना है जो व्यक्ति के अन्तःकरण को आलोकित करती है। जवाहरलाल नेहरू से पूछा गया–आपकी सफलता का रहस्य क्या है? उन्होंने कहा– आज के कार्य को कल पर नहीं छोड़ना, क्योंकि कल पर तीन व्यक्ति ही विश्वास कर सकते हैं–जिसकी मौत के साथ मैत्री हो, जो मौत से पलायन करना जानता है या जिसे यह विश्वास है कि मैं अमर हूं, मरूंगा नहीं। ऐसा व्यक्ति इस दुनिया में संभवतः देखने को कम ही मिलेगा।

समय के पहिये की गतिशीलता के साथ व्यक्ति का भाग्य बदल जाता है, दुःख सुख में परिणत हो सकता है, जन्म-मरण की घड़ियां भी आ जाती हैं। यह समय का पहिया स्थिर नहीं रहता। जो दीया जलता है, कुछ समय तक लौ टिमटिमाती है, वह बुझ जाती है

लेकिन उसी दीये से उसी समय कोई जीवन बना लेता है तो कोई पतंगा आसक्ति में आकर झुलस भी जाता है। समय निकलने के बाद व्यक्ति के हाथ लगता है आधा-अधूरा ज्ञान, आधी-अधूरी समझ, आधी-अधूरी रोशनी, आधा-अधूरा सिद्धांत। समय ऐसी जड़ी-बूटी है जो तमाम रोगों का इलाज कर देती है। समय बाजार की खरीदफरोख्त की वस्तु नहीं, जिसे पकड़ कर रखा जा सके, उसके साथ व्यक्ति को ही चलना होगा। सूत्र सबके सिर पर सवार तो हो गया, लेकिन उसके पांव नहीं होने से उसमें गति नहीं आई आ पायी, अतः जरूरत है समय-प्रबंधन के पांव को मजबूत बनाने की। पांव तो जीवन के मकान की नींव हैं, इन पर महल बनाने वाला ही सफलता प्राप्त कर सकता है। ■

अपने समय का मेनेजमेंट करें, ताकि हमारा कीमती समय बर्बाद होने से बच सके। याद रखिये वक्त ने रुकना नहीं सीखा।

जो व्यक्ति अपने जीवन का एक घंटा भी व्यर्थ करने की हिम्मत रखता है, उसने इस जीवन की कीमत नहीं जानी है।

विफलताएं तभी आती हैं, जब हम अपने आदर्शों, उद्देश्यों और सिद्धांतों को भुला बैठते हैं।

हार-जीत

● मधुबाला शर्मा ●

हरे-भरे खेतों की मनमोहक कतारें तेजी से पीछे छोड़ती हुयी ऊबड़-खाबड़ 'गडार' पर सरकारी जीप हिचकोले खाती दौड़ रही थी। कुओं पर चलते चड़स, खेलते बच्चों की किलकारियां और देसी परिधान में लिपटी 'पाणत' करती महिलाएं धरती की सुहाग-चूनर पर चित्रित दृश्यों की भांति लाजवंती की आंखों के सामने से गुजर रही थीं। बालविकास परियोजना अधिकारी जीप में आगे थीं और वह अपनी दो-तीन सहकर्मियों के साथ पीछे की सीट पर बैठी उन रंग-बिरंगे दृश्यों का आनन्द ले रही थी। तभी जीप का कर्कश हॉर्न बज उठा। वह चौंक पड़ी। उसने देखा–एक ग्रामीण जोड़ा जीप द्वारा उड़ायी गयी धूल के गुबार में लिपटा गडार की एक ओर खड़ा है। गोरा-चिट्टा गांव का गबरू जवान और चमकीले काँच व सलमे-सितारों से जड़ी ओढ़नी का लम्बा घूंघट काढ़े उसकी सहयात्री। गोरी डर कर धरती पर धम्म से बैठ ही रही थी कि उसके ढोला ने हाथ का सहारा दे दिया।

लाजवंती को वह दृश्य अन्दर तक झकझोर गया। उसकी पलकें एकाएक बन्द हुयीं और वह तीन वर्ष पहले की घटनाओं में जा डूबी। इसी तरह का जोड़ा पहन कर वह भी जयप्रकाश के साथ ससुराल पहुंची थी। उसके किशोर मन में सखियों ने न जाने कितनी उमंगें और सपने संजो दिये थे। जिस रात का इन्तजार था, वह भी आखिर आयी। पर, यह क्या? पल-पल बाट जोहते एक पहर बीत जाने पर भी उस रात का अतिथि नहीं आया था।

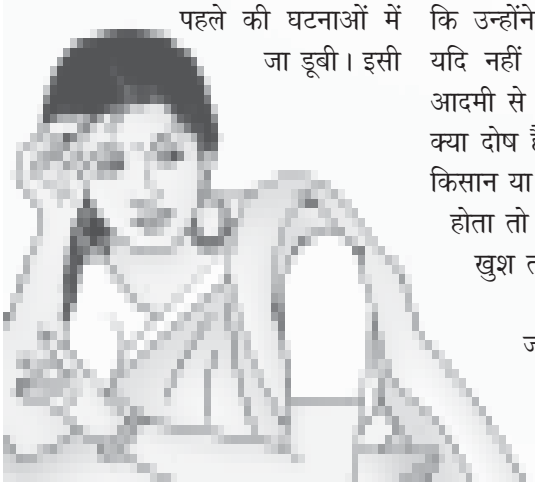

तभी किंवड़िया पर आहट हुयी। वह चौंक कर सिमटी और दरवाजे की ओर आंखें उठायीं। देखा– उसके दुबले-पतले भरतार ही थे। मन में न जाने कैसा-कैसा होने लगा। तभी उसने सुना, जयप्रकाश कह रहा था– ''यों बैठ कर किसका इंतजार कर रही हो? मैं तो तुम्हारा मुंह भी नहीं देखना चाहता! लाख मना करने पर भी मां-बाप ने तेरे जैसी अनपढ़ और निपट गंवार के साथ मुझे बांध दिया तो मैं क्या करूं? माफ कर मुझे, मैं नहीं बंधने वाला तेरे साथ! और, कहता हुआ वह तूफान की तरह किवाड़ों को धकेलता हुआ वापिस चला गया था।

उसकी आंखों से आंसू टपक पड़े। रात रोते ही निकली। सारे सपने धराशाही हो गये। अपने मां-बाप को कोसती रही कि उन्होंने मुझे क्यों नहीं पढ़ाया, और यदि नहीं पढ़ाया था तो इस पढ़े-लिखे आदमी से क्यों परणा दिया उसे? उसका क्या दोष है, आखिर? क्यों नहीं उसे भी किसान या कारीगर के बेटे से ब्याह दिया होता तो कम से कम वह उसको पाकर खुश तो होती.....!''

जीप अपनी रफ्तार से चली जा रही थी। बीच-बीच में लाजवंती पलकें उठाकर पीछे की ओर उड़ती हुयी धूल और भागती गडारों को देख लेती थी। बहुत दूर जाकर वे गडारें एक होती दिखायी देती थीं; पर तुरन्त एक तर्क का झटका-सा लगता और वे दूर हो जातीं। वह फिर विचारों में गहरे जा पहुंची–अपने प्रीतम से 'अनपढ़ गंवार' की उपाधि पाकर वह तो गहरी निराशा में डूब गयी थी। भला हो पड़ौस वाली बहिन जी का। बहिन जी ने तीन ही वर्षों में उसे न केवल पढ़ना-लिखना ही सिखाया अपितु आठवीं की परीक्षा भी पास करवा दी। यही नहीं, गांव की आंगनबाड़ी की देख-रेख का कार्य भी दिलवा दिया।

पिछले तीन सालों के तीन सावन और कजरारी-हरियाली तीजों को बड़ी बेरहमी से उसने धकिया दिया था, वैसे ही जैसे उसके गर्वीले प्रियतम ने पहली ही रात को उसे धकियाया था। आंगनबाड़ी का काम मिलने पर भी उसने पढ़ाई नहीं छोड़ी थी। उसका लक्ष्य था, कम से कम सैकण्डरी परीक्षा पास कर लेना।

सहसा जीप एक स्कूल के अहाते में आकर ठहर गयी। प्रधानाध्यापक ने जीप से उतरी संभ्रात महिलाओं का स्वागत किया और उन्हें एक कमरे में ले जाकर बिठाया। अतिथियों का सत्कार शुरू हुआ। एक युवक प्लास्टिक ट्रे में पानी के गिलास लेकर उपस्थित हुआ। युवक ने एक नजर आगन्तुक महिलाओं पर डाली तो वहां बैठी महिलाओं में उसे किसी परिचित की झलक दिखायी दी। प्रश्न कौंधा–कहीं वह तो नहीं?

पर, तुरन्त उसके मन में विचार आया– वह निपट गंवार इन पढ़ी-लिखी महिलाओं में कैसे हो सकती है? और, वह निश्शंक सबके आगे ट्रे ले जाकर पानी के गिलास देने लगा।

लाजवन्ती किसी कागज पर लिखे आंकड़ों के जोड़-बाकी लगा रही थी। उसकी आंखें नीचे गड़ी थीं। अतः युवक को उसके आगे ट्रे लेकर कुछ क्षण खड़े रहना पड़ा। तभी परियोजना अधिकारी ने कहा ''पहले पानी ले लो लाजवन्ती, देखती नहीं, यह कब से खड़ा है?''

उसने सिर उठाकर देखा, सामने जयप्रकाश खड़ा था। शाला का चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी। वह देखती रह गयी। उसका बढ़ा हुआ हाथ एकाएक रुक गया। उधर जयप्रकाश ने ज्यों ही 'लाजवंती' नाम सुना तो उसके हाथ लड़खड़ा गये। ट्रे छलकी और टन-टन-टन कर गिलासें फर्श पर आ गिरीं। मायूस हो वह नीचे झुका और गिलासें उठाने लगा। तभी लाजवंती ने कुर्सी छोड़ी और ''मैं ही उठा देती हूं.....'' कहते हुए गिलासें ट्रे में रख दीं और स्वयं उसके हाथ से ट्रे लेकर कमरे से बाहर आ गयी।

प्राधानाध्यापक जयप्रकाश से कुछ कहते उसके पहले ही वह अपने कुर्ते की बांहों से आंसू पोंछता हुआ पीछे के दरवाजे से बाहर निकल चुका था। कुछ ही क्षणों में यह सब घट गया था, पर किसी के भी कोई बात समझ में नहीं आ पायी थी। विचित्र-सी मनःस्थिति में भी लाजवंती के दिल में एक प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। उसने जयप्रकाश को मुंह लटकाये कमरे से पीछे जाते देख लिया था। एक बार तो उसके पैर भी उस ओर ही बढ़ गये; किन्तु जब देखा कि जयप्रकाश दूर बराण्डे में घुटनों में सिर दबाकर एक ओर जा बैठा है तो उसके पैर न जाने क्या सोचकर वापस मुड़ गये और वह पुनः सामान्य हो कमरे में आकर बैठ गई।

जीप जा चुकी थी। आश्वस्त होकर जयप्रकाश घर की ओर रवाना हुआ। आज उसके साथ जो घटना घटी थी उसकी उसे सपने में भी आशा नहीं थी। पर, यह सब हुआ कैसे? लाजवंती तो गांव की अनपढ़–और अब एकदम लकदक साड़ी में टीचर जैसी–वह सोचता चला जा रहा था कि उसके पैर रुक गये। एक घने नीम की छाँव में लाजवंती खड़ी थी, बिल्कुल उसके सामने। यह सामना भी अजीब था, अप्रत्याशित भी। दोनों एक-दूसरे की ओर अपलक देखते रहे। लाजो की आंखों में तो स्वाभिमान व विजय की आभा, और जैसे युगों का अछूता प्यार घुमड़ रहा था। जयप्रकाश पराजित अपराधी-सा ग्लानि- विगलित पलकें झुकाए जा रहा था। उसकी नजरों में कोटि-कोटि क्षमायाचनाएं और उस मानिनी-देवी के प्रति ऊँचा सम्मान था। उसके आंसू पुनः टपकने लगे, मानो उसका सोया हुआ प्रेम उजागर हो रहा था।

लाजवंती ने ही मौन तोड़ा– ''क्या, घर चलने के लिए नहीं कहेंगे?'' जयप्रकाश ने कहा, ''कितने दुःख दिये हैं, कितना तिरस्कार किया है, तुम्हारा? आज तो अपने आप से घृणा होने लगी है। मैं हार गया हूं–क्षमा कर दो मुझे–''

जयप्रकाश की आंखें ऊपर नहीं उठ रही थीं। उसके हाथ जुड़े थे। ज्योंही उसके मुंह से 'क्षमा'..... शब्द निकला, लाजवंती उसके पैरों की ओर झुकती हुई बोली, ''आप यह क्या कर रहे हैं? कैसी क्षमा? कैसी हार? स्वामी! आपके तिरस्कार ने ही तो मुझे नया प्रकाश दिया था। पराजय तो मेरी अशिक्षा और गंवारूपन की हुई है। जय के भागी तो आप स्वयं ही हैं, जिन्होंने मुझे जैसा चाहा, वैसा बना लिया है।''

''तुम कितनी महान् बन गयी हो लाजो! काश मैं भी मामा की बात मान कर सुखों के सपने देखने की अपेक्षा मन लगा कर पढ़ायी पूरी कर लेता! आज याद आता है सब। मामा ने अपने पास शहर में रखा, पढ़ाया, पर मैं हायर सैकण्डरी भी पास नहीं कर पाया। घर आया तो बाप-दादों से विरासत में मिले आरी-बसूला चिढ़ाने लगे। मैं घर का काम करना अपनी शान के खिलाफ समझता था। निराशा ने हाथ-पैर तो ढीले किये ही, दिमाग पर भी जंग लगा दी थी। हमेशा सोचता रहता था कि मामा की तरह कुर्सी पर बैठा हुआ अफसरी करूंगा; पर..... मैं भूल गया था कि मामा ने जिस कठिनाई में दिन गुजारे थे, वह साधारण नहीं थे। उसे फूलों की सेज बिछी-बिछायी नहीं मिल गयी थी। और, एक दिन पिताजी ने मुझे घर से निकल जाने को कहा तो यहां आ गया। हैडमास्टर जी पिताजी के दोस्त थे, उन्होंने चपरासी की नौकरी दे दी। रोटी मिलने लगी...'' बीते दिनों की दास्तान दोहराता हुआ जयप्रकाश गांव की गली के एक मकान में घुस कर बोला–''यह रही मेरी कोठरी।''

''केवल आपकी नहीं, हम दोनों की''– लाजवंती ने कहते हुए उस छोटे से कमरे में प्रवेश किया। उसकी आंखें इधर-उधर देखने लगीं। उसके आनन्द और उल्लास का पारावार नहीं था। एक ताक में किताबें देखकर उसने पुनः पूछा– ये किताबें? क्या हायर सैकण्डरी.....?

''नहीं की। हुयी ही नहीं, पर अब हो जाएगी–''

''वह कैसे?''

''क्योंकि तुम आ गयी हो।''

और, सचमुच दोनों ने जीवन की समस्याओं को मिलजुल कर सुलझाने का उसी क्षण व्रत ले लिया।

लाजवंती ने गंभीरता से कहा अज्ञान मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है, हमें सबसे पहले इसे ही दूर भगाना है।

स्वावलम्बी और मेहनती जीवन का फल मिला। दोनों अपनी-अपनी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए। देखते-देखते लाजवंती अपने विभाग में पर्यवेक्षक बन गयी तो जयप्रकाश को लिपिक पद मिल गया।

अब उनके लिए खुशियां ही खुशियां थीं। उन्होंने अपनी हार को जीत में बदल दिया था। ■

बाल कहानी

राजा शेरसिंह का न्याय

● सत्यनारायण भटनागर ●

राजा शेरसिंह परेशान और दुःखी थे। उनके राज्य में ऐसा कभी नहीं हुआ। अब वे सुन रहे हैं कि मिठाइयों में मिलावट है। उन्होंने स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हाथी सिंह को बुलाया और पूछा– ''क्या बात है, लोग बीमार पड़ रहे हैं, आप क्या कर रहे हैं?'' डॉ. हाथी सिंह ने विनम्रतापूर्वक कहा–'' राजन! त्यौहारों का मौसम है। मिठाइयों की बड़ी मांग है। इसलिए नकली मावा आ रहा है। सड़ा-खराब मावा भी उपयोग में लिया जा रहा है। इसमें मुनाफा ज्यादा है, हलवाई मान नहीं रहे हैं।'' शेरसिंह गुर्राए– ''फिर आप क्या कर रहे है, उन्हें पकड़ो और बन्द कर दो, यह नहीं चलेगा।''

डॉ. हाथीसिंह कुछ कहते इसके पूर्व ही गृहमंत्री गेंडासिंह आ गए। बोले–''महाराज! मिलावटी मावा और पनीर पकड़ा है, जब्त भी किया है, जांच को भेजा है, जांच की रिपोर्ट का इन्तजार कर रहे हैं, रिपोर्ट आते ही कठोर कार्यवाही करेंगे।''

राजा शेरसिंह संतुष्ट नहीं हुए। बोले–''ऐसा चलेगा? क्या तब तक लोग बीमार होते रहेंगे? हम तमाशा देखते रहेंगे? यह तो ठीक नहीं है, आप जाइये, कुछ कीजिए।''

डॉ. हाथीसिंह और गृहमंत्री गेंडासिंह उदास हो कर चले गए।

राजा शेरसिंह ने विचार किया और बिल्ली मौसी को बुलाया, कहा– ''जाओ, शूकर हलवाई के यहां से दो किलो मावे की मिठाई ले आओ। देखो मौसी, ठीक से सूंघ कर लाना। जो सड़ी हुई और खराब मिठाई हो वही लाना। सुना है, वह गरीब लोगों को मिठाई कुछ कम कीमत में बेच रहा है। उसे पता नहीं चलना चाहिए कि मिठाई हमने मंगाई है।''

बिल्ली मौसी बोली– ''जो आज्ञा महाराज! मैं जाँच कर सड़ी-गली मिलावटी मावे की मिठाई लेकर ही आऊँगी।''

शेरसिंह ने शूकर हलवाई को सपरिवार भोजन का निमंत्रण भेजा, कहलाया– ''त्यौहार के इस अवसर पर मिष्ठान्न-उत्सव का आयोजन है। आनन्द मानने के लिए नियत समय पर पधारिए।''

शूकर हलवाई ने निमंत्रण को सर माथे पर लिया। सबको बताया, ''महाराज शेरसिंह जी हमारी दुकान की मिठाई से प्रसन्न हैं, हमें भोजन के लिए बुलाया है।''

ठीक समय कर बन-ठन पर शूकर जी प्रसन्न मुद्रा में राजा शेरसिंह के निवास पर पहुंचे। महाराज शेरसिंह ने मुस्कराकर स्वागत किया और कहा–''हमने त्यौहार के उपलक्ष्य में मिष्ठान्न-उत्सव मनाने का निर्णय लिया है। हम चम्पकवन के हलवाईयों को इस अवसर पर भोजन के लिए बुला रहे हैं।'' कुछ देर रुक कर फिर बोले–''शूकर जी! आजकल मिठाईयों में नकली, सड़ा मावा उपयोग में आने की शिकायतें मिल रही हैं। आपकी दुकान पर तो अच्छा माल मिल रहा है न?''

हलवाई शूकर प्रसन्न हो बोले–''महाराज! हमारी दुकान पर तो एकदम सौ प्रतिशत शुद्ध माल बिक रहा है। जांच-परख कर ही मिठाई तैयार करवाता हूं। आप स्वयं हमारी मिठाईयों का स्वाद चखें।''

महाराज शेरसिंह ने कहा–''आप ठीक कहते हैं। इसलिए आज की दावत के लिए हमने आपकी दुकान से ही मिठाई मंगाई है। आप उसी मिठाई का आनंद लीजिए।'' इसके बाद महाराज शेरसिंह ने ताली बजाई और बिल्ली मौसी से मिठाई लाने को कहा।

बिल्ली मौसी को मिठाई लाते देख हलवाई शूकर घबरा गया। उसे याद आया, आज बिल्ली मौसी को नकली मावे की व खराब मावे की मिठाई उसने ही बेची थी।

बिल्ली मौसी मुस्कराई और मिठाई का थाल हलवाई शूकर के सामने रख दिया। ठण्ड के मौसम में भी शूकर को पसीना आ गया। वह घबरा गया। उसके परिवार के सदस्य यह देख हक्के-बक्के रह गए।

शेरसिंह ने कहा– यह मिठाई आपके और आपके परिवार के लिए ही है, आनंद लीजिए।

शूकर ने थोड़ी-सी मिठाई खाई और बोला – ''महाराज! मेरा स्वास्थ्य खराब है। मैं और मिठाई नहीं खा पाऊँगा।''

शेरसिंह गुर्राए– यह मिठाई तो आपको व आपके परिवार को ही खाना है। मैं डॉ. हाथी सिंह को बुलाकर आपका इलाज करा देता हूं।

हलवाई ने कहा– ''महाराज, माफ करें। यह मिठाई मैं व परिवार वाले नहीं खा सकते, हम मर जाएंगे।''

शेरसिंह दहाड़ा– ''आप क्यों नहीं खा सकते? आप नहीं खाएंगे तो मैं आपको परिवार सहित खा जाऊंगा।''

हलवाई शूकर घबरा गया। बोला, महाराज! यह नकली मावे से बनी है और यह सड़े मावे से। त्यौहार में सब चल जाता है। आप क्षमा करें। अब भविष्य में ऐसा कभी नहीं करूंगा। आप जो दण्ड देना चाहे दे दीजिए।''

महाराज शेरसिंह ने सिपाहियों को बुलाया। कहा– ''इन्हें जेल में बन्द कर दो। इनकी दुकान की मिठाइयां जमीन में गड़वा दो। चम्पक वन में घोषणा करवा दो कि किसी भी वस्तु में मिलावट पाये जाने पर कठोर दण्ड दिया जाएगा।''

तभी गृहमंत्री यह सब सुनकर भागे-भागे आए। हलवाई को हथकड़ी में देख चक्कर खा गए। शेरसिंह ने कहा– ''जंगल में प्रकृति के कानून चलेंगे। मिलावट करने वालों के लिए यहां कोई स्थान नहीं है। मंत्री जी, आप सावधान हो जाइए। जो मिलावटी मिठाई बनाए उसे ही वह मिठाई जबरन खिलाइए। यही न्याय है। चम्पक वन के छोटे गरीब पशु पक्षियों का शोषण नहीं होना चाहिए।''

सब लोग राजा शेरसिंह के न्याय की प्रशंसा करने लगे। ■

झांकी हिन्दुस्तान की

फिर वही भगदड़ – १६ मरे

गायत्री महाकुंभ में भगदड़ में १६ श्रद्धालुओं के हताहत होने की घटना से यही पता चलता है कि ऐसी त्रासदियों से हम कुछ नहीं सीखते। अभी इसी साल शबरीमाला में मकरज्योति का दर्शन करने पहुंचे १०२ श्रद्धालु मौत के मुंह में समा गए थे। पिछले वर्ष मार्च में उत्तरप्रदेश के प्रतापगढ़ में कृपालुजी महाराज आश्रम में प्रसाद वितरण के दौरान मची भगदड़ ने ६३ लोगों की जान ले ली थी। हिमाचल प्रदेश के नैनादेवी मंदिर और जोधपुर के चामुंडा देवी मंदिर में क्रमशः १६२ और २४६ लोगों की मृत्यु की घटनाएं भी अभी बहुत पुरानी नहीं हुई हैं। इसके अलावा महाराष्ट्र में सातारा जिले के मांधरदेवी मंदिर में जनवरी २००५ में ३०० से ऊपर और २००३ के नासिक कुंभ मेले में ४० लोगों की मौत धार्मिक अवसरों पर भगदड़ की इस सदी की अन्य बड़ी घटनाएं हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हर ऐसी घटना को शोक की तात्कालिक अभिव्यक्ति के बाद भुला दिया जाता है। कभी उन नाकामियों की समीक्षा नहीं की जाती, जिनकी वजह से श्रद्धा एवं उत्सव के अवसर दुख एवं विषाद के मौकों में तब्दील हो जाते है। सबसे दुखद यह कि धर्म के नाम पर जुटने वाली भीड़ भगदड़ का शिकार होती है। धर्मस्थलों पर तो कम से कम मानव सभ्यता व शालीनता का अनुशासन कायम रहना चाहिए, लेकिन अनुशासन और भीड़ प्रबंधन के बारे में न तो भीड़ जुटाने वाले ज्यादा सोचते हैं और न भीड़ में शामिल होने वाले लोग सोचते हैं। ऐसी भगदड़ दरअसल सोच-विचार और संवेदना के अभाव को भी उजागर करती है।

आधी जनता पानी नहीं जहर पी रही है

केन्द्र सरकार के पेयजल आपूर्ति विभाग (डी.डी. डब्ल्यू. एस.) की ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि राजस्थान के ४८ प्रतिशत जल स्रोतों का पानी पीने योग्य नहीं है। हाल ही में प्रदेश के विभिन्न हलाकों से एकत्र १ लाख ६.५ हजार २४७ नमूनों की जाँच करने पर पाया गया कि ५५८८१ नमूनों का पानी दूषित था। कहीं नाइट्रेट की मात्राा अधिक पायी गयी तो अनेक भागों में फ्लोराइड अधिक मात्रा में पाया गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा तय मानकों के अनुसार पानी में नाइट्रेट की मात्रा ४५ पी.पी.एम. (ग्राम प्रति दस लाख लीटर) और क्लोराइड की मात्रा १५ पी.पी.एम. होनी चाहिए। किन्तु नमूनों की जाँच में पाया गया कि अनेक क्षेत्रों में यह मात्रा १०० पी. पी.एम. तक है।

अहिंसा खूब भायेगी

अहिंसा सारी दुनिया में, अमन के गुल खिलाएगी,
दुनिया, देखना एक दिन, लड़ाई भूल जाएगी।

दया मिसमार कर देगी, अणुबम के जखीरे को,
मिसाईल देखना करुणा के घर में धूल खाएगी।

जरूरत हो तुम्हें जितनी, वो अपने पास रख लेना,
बकाया दान करने से, किसी की भूख जाएगी।

हमारा लक्ष्य हिंसा को, अहिंसा में बदलना है,
ये पापन पुण्य की बाँहों में, झूल-झूल जाएगी।

तपस्या, साधना, संयम, अहिंसा साथ हैं आने,
तो फिर कैसे भलाई की चमेली सूख जाएगी?

हमेशा काम आया है, हमेशा काम आएगा,
भला इन्सान से इन्सानियत क्या छूट पाएगी?

खिलेगी हर बरस कलियाँ, अहिंसा के बगीचे में,
ऐ तितली! तेरी खातिर भी ये शबनम गुल खिलाएगी।

जो जीवन दे नहीं सकता, वो क्यों जीवन किसी का ले,
जो लेगा फूल-सा जीवन, तो काया शूल खाएगी।

हमें नैतिक पतन नुकसान देता जा रहा भारी,
अगर रोका नहीं तो, ब्याज के संग मूल खाएगी।

धरम, ईमान बसता है जहां पर संत ज्ञानी हों,
बिना दरवेश के दुनिया भी नेकी भूल जाएगी।

हुआ है देश दुनिया में, अहिंसा का असर भारी,
अहिंसा खूब भायी है, अहिंसा खूब भाएगी।

ये मजहब की मेहरबानी, तू हिन्दू मैं मुसलमाँ हूँ,
अगर इन्सान रब कर दे, तो छाती फूल जाएगी।

● अब्दुल जब्बार ●
नूर निकेतन, कुंभा नगर बाजार, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

पाठक - दृष्टि

अक्टूबर (प्रथम) अंक सामने है। साधुवाद! अणुव्रत का डेढ़ दशक से रचना सहयोगी होने के नाते इसका विकसित सुरुचिपूर्ण सम्पादन-संयोजन एवं प्रस्तुति देखकर विशेष प्रसन्नता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं चिंतन पर केन्द्रित यह अंक पठनीय, सारगर्भित एवं ज्ञानदायी है। अंक के आलेख, कविताएं तलस्पर्शी एवं संवेदनात्मक हैं। यद्यपि अणुव्रत विशेष प्रतिबद्ध पत्रिका है किन्तु इसका मूल स्वर लोकहित एवं मानवतावाद है। विश्वास है, आपके सम्पादन में इसे उत्तरोत्तर व्यापक फलक प्राप्त होता रहेगा। कृपया इसको अधिकाधिक वैविध्य प्रदान करते रहें।

- शंकर सुलतानपुरी
'साहित्य वाटिका' 13/362 इंदिरा नगर,
लखनऊ-226016

16-31 अक्टूबर 2011 का 'अणुव्रत' अंक मिला, धन्यवाद। आपको 'अणुव्रत' जैसी सुप्रतिष्ठित पत्रिका का संपादक बनने पर हार्दिक बधाई! आशा है, आपके संपादकत्व में अणुव्रत को नये क्षितिज स्पर्श करने का सुअवसर मिलेगा। समाज में इस पत्रिका की अपनी अलग ही पहचान है।

इस अंक के संपादकीय में प्रकाश-पर्व दीपावली का स्वागत करते हुए भीतरी अंधेरे को दूर करने की बात कहीं गयी है, वहीं अणुव्रत के प्रेरणा-स्रोत युगपुरुष आचार्य तुलसी के जन्मदिन 28 अक्टूबर को 'अणुव्रत-दिवस' के रूप में मनाने का आह्वान भी किया है। महापुरुषों की पहचान यह भी है कि हम उनके जन्मदिन को श्रद्धापूर्वक मनाते हैं। आचार्य तुलसी के जन्मदिन को मनाने के पीछे अणुव्रतों की पालना करने की, 'अणुव्रत-संहिता' के अनुकूल आचरण करने की अनुकरणीय प्रेरणा है।

आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण तथा मुनि राकेशकुमार के आलेखों से इस अंक की शोभा बढ़ी है। मुनि सुखलालजी एक प्रखर वक्ता व सुधी लेखक हैं, उन्होंने आचार्यश्री के विचारों को साक्षात्कार-रूप में प्रस्तुत करने का श्लाघ्य प्रयास किया।

दीवाली-पर्व भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। इस संदर्भ में डॉ. अनामिका प्रकाश का 'ज्योति-पर्व' और विभा प्रकाश श्रीवास्तव का 'दीपक तुम्हें प्रणाम' ज्ञानवर्धक लेख हैं। 'माटी के दीप' जनमानस को आलोकित करते हैं।

- प्रो. निजामउद्दीन
ग्राम एवं पोस्ट : बालैनी (मेरठ) 250626

जीवन का एक सुखी दिन

● श्रीलाल शुक्ल ●

आजादी के बाद भारतीय समाज में फैले भ्रष्टाचार, अन्तर्विरोध, पाखण्ड और विसंगतियों का अपनी पैनी कलम से पर्दाफाश करने वाले हिन्दी के मूर्धन्य लेखक-उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल का 28 अक्टूबर, 2011 को लखनऊ में निधन हो गया। प्रख्यात कृति 'रागदरबारी' के रचनाकार श्रीशुक्ल को हाल ही में ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था। यहां प्रस्तुत है, उनकी एक लघु रम्य रचना। विनम्र श्रद्धांजलि! **सं.**

सवेरे नहा-धोकर मैंने लांड्री से धुलकर आयी हुई कमीज और पतलून पहनने को निकाली और ताज्जुब के साथ देखा, उनका कोई भी बटन टूटा नहीं है। तभी एक कोने में रखे हुए जूतों पर निगाह पड़ी, पुरानी आदत के मुताबिक आज के दिन नौकर ने उन पर काली पॉलिश, लालवाले ब्रुश से नहीं की थी। जूते पर सही ब्रुश का प्रयोग हुआ था। मन-ही-मन मैंने कहा, यह मेरे जीवन का एक सुखी दिन होगा।

कॉलेज जाने के लिए बस पर चढ़ा और एक रुपये का नोट कंडक्टर के हाथ में दे दिया। जितनी रेजगारी मिलनी थी, उसने वह पूरी-की-पूरी वापस कर दी। टिकट की पुश्त पर इकन्नी का प्रोनोट नहीं लिखा। सीट पर मेरी बगल में कोई महिला नहीं बैठी थी, इसलिए फिल्मी रोमांस की कमजोरी से फुर्सत पाकर मैं आराम से पैर फैलाकर बैठ गया। मेरे पड़ोस में एक साहब आज का अखबार पढ़ रहे थे। मुझे उनकी ओर ताकता हुआ पाकर उन्होंने ऊपरवाला पन्ना मेरी ओर बढ़ा दिया। अखबार में मैंने देखा, न उस दिन किसी विदेशी ने हिंदुस्तान को तरक्की की सनद दी थी, न प्रधानमंत्री की कोई स्पीच ही आयी थी। अब मैं इत्मीनान से बिना ऊबे हुए अखबार पढ़ने लगा।

रेलवे-क्रॉसिंग पर रेलवे के प्वाइंटमैन ने बस को आता हुआ देखकर भी फाटक खुला रहने दिया। बस बिना रुके हुए ऐसी आसानी से फाटक पार कर गयी मानो ऐसा रोज ही हुआ करता हो। कॉलेज के पास बस के रुकते ही मैं बिना किसी को धकेले, बिना किसी के घुटनों से टकराए, बिना 'थैंक्यू' व 'सॉरी' कहे नीचे उतर आया। स्टैंड पर एक चाटवाला मुझे मिला तो जरूर, पर उसने न तो मेरी ओर देखा ही और न मुझे फुसलाने वाली आवाज में 'गरमागरम चाट' की आवाज ही लगाई।

दिनभर कॉलेज में बड़ा सुख रहा। लड़कों को यूरोप-यात्रा पर एक सीधा-सादा लेख पढ़ाया। दूसरे दर्जे में सदाचार की महिमा समझाई। न तो उन्हें कोई प्रेम-गीत ही पढ़ाना पड़ा, न किसी हास्य-व्यंग्यपूर्ण उक्ति का अर्थ समझाना पड़ा। खाली घंटे में मेरी कोई भी छात्रा अपनी किसी भाव-प्रधान कहानी या कविता में संशोधन कराने नहीं आयी। चापलूस छात्रों ने मेरी किसी असफल रचना की प्रशंसा नहीं की। किसी लेक्चरर ने विद्यार्थियों के सामने मुझे 'अमां यार' कहकर नहीं पुकारा। मेरे एक प्रतिद्वंद्वी लेक्चरर के कमरे से कुछ विद्यार्थी क्रांति के नारे लगाते बाहर निकल आए। स्टाफ-रूम में प्रिंसिपल के बारे में खूब गंदे-गंदे किस्से, बिना अपनी ओर से कुछ कहे ही, फोकट में सुनने को मिल गये।

सिनेमा से बाहर आने पर कई रिक्शेवालों ने मिलकर मुझ पर हमला नहीं किया। रिक्शा करने पर मजबूर हुए बिना ही मैं पैदल वापस लौट आया। रात में सुनसान सड़क पर मेरे पैदल चलने पर भी कोई साइकिलवाला मुझसे नहीं टकराया, किसी मोटरवाले ने मुझे गाली नहीं दी, किसी पुलिसवाले ने मेरा चालान नहीं किया।

शाम को घर वापस आने के पहले एक मित्र एक बड़े रेस्तरां में चाय पिलाने ले गये, पर बातें उन्होंने मुझे ही करने दीं। खुद ज्यादातर चुप रहे। रेस्तरां के सामने रिक्शेवाले को पैसे देने के लिए मैंने अपनी जेबें टटोलीं, मेरी जेब में दस रुपये का नोट निकला, पर मित्र की जेब से पहले ही एक अठन्नी निकल आयी। रेस्तरां के भीतर भी मुझे कोई उलझन नहीं हुई। वेटर का हुलिया बड़े लंबे-चौड़े रौबदार बुजुर्ग का न था। वह दुबला-पतला था और नौसिखिया-सा दिखता था। पड़ौस की मेजों पर न कुछ मसखरे नौजवान थे, न फैशनेबल लड़कियां थीं, न हंसी के ठहाके थे, न कोई मुझे घूर रहा था। न कोई मेरे बारे में कानाफूसी कर रहा था। रेस्तरां में भीड़ न थी पर इतने लोग थे कि काउन्टर के पीछे से मैनेजर सिर्फ हमीं को नहीं औरों को भी देख रहा था। हमारे चलने से पहले पास की मेज पर दो गंभीर चेहरे वाले आदमी आ गये और जब मैंने आपसी बातचीत में 'एक्जिस्टेंशिएलिज्म' का अनावश्यक जिक्र किया, तब उन लोगों ने निगाह उठाकर मेरी ओर देखा था। रेस्तरां के बाहर आने पर मेरा एक परिचित बीमा-एजेंट सड़क के दूसरी ओर जाता हुआ दीख पड़ा, पर उसने मुझे देखा नहीं। इसके बाद अचानक ही मुझे तीन परिचित आदमी मिल गये। उन्होंने नमस्कार किया और उसका जबाव पाया। मेरे मित्र या कोई परिचित आदमी नहीं मिला।

घर वापस आकर मैंने श्रीमतीजी से सिनेमा चलने का प्रस्ताव किया पर उन्होंने क्षमा मांगी और कहा कि उन्हें लेडीज क्लब जाना है। इसलिए मैं पूर्व निश्चय के अनुसार अपने एक मित्र के साथ सिनेमा

देखने चला गया। सिनेमा का टिकट खिड़की पर ही मिला और असली कीमत पर मिला। पंखे के नीचे सीट मिल गयी। सिनेमा शुरू होने के पहले साबुन, तेल और वनस्पति घी के विज्ञापनवाली फिल्में नहीं दिखाई गईं। पास की सीट से किसी ने सिगरेट के धुएं की फूंक मेरे मुंह पर नहीं मारी। पीछे बैठने वालों में किसी ने अपने पैर मेरी सीट पर नहीं टेके। अंधेरे में किसी ने मेरा अंगूठा नहीं कुचला। हीरो की मुसीबत पर किसी पड़ौसी ने सिसकारी नहीं भरी। हिन्दी की फिल्म थी, फिर भी वह अठारह रील पूरी करने के पहले ही खत्म हो गयी। सिनेमा से बाहर आने पर कई रिक्शेवालों ने मिलकर मुझ पर हमला नहीं किया। रिक्शा करने पर मजबूर हुए बिना ही मैं पैदल वापस लौट आया। रात में सुनसान सड़क पर मेरे पैदल चलने पर भी कोई साइकिलवाला मुझसे नहीं टकराया, किसी मोटरवाले ने मुझे गाली नहीं दी, किसी पुलिसवाले ने मेरा चालान नहीं किया।

घर आकर खाना खाने बैठा तो उस वक्त रुपये की कमी पर कोई घरेलू बातचीत नहीं हुई। नौकर पर गुस्सा नहीं आया। बातचीत के दौरान मैं श्रीमती से साहित्य चर्चा करता रहा, यानी अपने साथ के साहित्यकारों को कोसता रहा। वे दिलचस्पी से मेरी बातें सुनती रहीं और मेरे टुच्चेपन को नहीं भांप पाईं।

घर के चारों ओर शान्ति थी। किसी भी कमरे में बिना मतलब बल्ब नहीं जल रहा था, न बिना वजह किसी नल का पानी बह रहा था, न दरवाजे पर कोई मेहमान पुकार रहा था, न रसोई घर में किसी प्लेट के टूटने की आवाज हो रही थी, न रेडियो पर कोई कवि सम्मेलन आ रहा था, न पड़ोस में लाउडस्पीकर लगाकर कीर्तन हो रहा था। और सबसे बड़ी बात यह कि कल आने वाला दिन इतवार था, उस दिन मेरे सभी उत्साही मित्र कहीं शहर से दूर पिकनिक पर चले जाने वाले थे।

(साभार)

ईटीवी हैड जगदीशचन्द्र को आचार्य तुलसी सम्मान-2011

केलवा, 6 नवम्बर : अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा है कि मीडियाकर्मियों को कभी किसी तरह के प्रलोभन में नहीं आना चाहिए और न ही किसी से भयभीत होना चाहिए। वे निर्भीक होकर समाज और देश की उन्नति में अपनी शक्ति लगाएं। आचार्यश्री ने उक्त विचार ''आचार्य तुलसी-महाप्रज्ञ विचार मंच'' की ओर से आयोजित आचार्य तुलसी सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। आचार्य तुलसी सम्मान ईटीवी में हिन्दी और उर्दू के हैड जगदीशचन्द्र को गुजरात की राज्यपाल डॉ. कमला ने प्रदान किया। अध्यक्षता राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष दीपेन्द्रसिंह शेखावत ने की।

आचार्यश्री ने यह भी कहा कि पत्रकारिता में भौतिकता के साथ आध्यात्मिकता पर भी ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करना होगा। गुरुदेव तुलसी ने जन-जन को नैतिकता और जीवन जीने के सूत्र से अवगत कराने की दृष्टि से अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात तथा आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से अपना संदेश प्रसारित किया था। अब भी अहिंसा यात्रा पर कार्य चल रहा है।

गुजरात की राज्यपाल डॉ. कमला ने जगदीशचन्द्र को सम्मानित किए जाने पर बधाई देते हुए कहा कि यह रचनात्मक पत्रकारिता का सम्मान है। आचार्य महाश्रमण ने अहिंसा यात्रा को अनवरत रूप से गति प्रदान कर रखी है। साथ ही वे अनुकंपा और नैतिकता का संदेश निरन्तर प्रसारित कर रह हैं। इससे पूर्व विधानसभा अध्यक्ष दीपेन्द्रसिंह शेखावत ने कहा कि अणुव्रत ऐसी जीवनशैली है जो इंसान को इंसान बनाती है। इंसान को इंसान बनाने से बड़ा धर्म कोई नहीं हो सकता।

ईटीवी चैनल के हैड जगदीशचन्द्र ने कहा कि ईटीवी आम आदमी की कठिनाई दूर करने के लिए सरकार को गरीब आदमी की झोंपड़ी तक पहुंचाने में मदद कर रहा है।

समारोह में विख्यात पत्रकार नंदकिशोर नौटियाल, विश्वनाथ सचदेव व संजय पुगलिया ने भी अपने वक्तव्यों में ईटीवी द्वारा पत्रकारिता की पुरानी परपंराओं को तोड़ते हुए एक नया मॉडल तैयार कर चैनल को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा अर्जित करने पर बधाई दी।

इसी क्रम में मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा कि आचार्य तुलसी की ओर से प्रदत्त मार्ग पर चलने से देश विकास की तरफ बढ़ेगा। व्यक्ति को कर्म में विश्वास करना चाहिए। इसका फल स्वतः ही मिल जाएगा। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के प्रारंभ में संघीय गायिका मीनाक्षी भूतोड़िया ने गीत का संगान किया। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और झारखण्ड के राज्यपाल के संदेश का वाचन व्यवस्था समिति के महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी ने किया। प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत समारोह संयोजक राजकुमार पुगलिया ने किया। समारोह में क्षेत्रीय विधायक, सांसद व अनेक गणमान्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

The dream of Social and National Reconstruction is Entirely Dependent on Individual Reform. The Main Plank of the Philosophy of Anuvrat is Building Individual Character.

– Acharya Tulsi

With Best Compliments from:

Suresh Dugar 9829078180

Mahesh 9829078080

jm JINESHWAR MARBLES

Manufacturers & Stockists:

Marble Slabs Tiles in Doongari, white Albeta, Chak Doongari (Genuine Makrana Quality)

Borawar Road, **Makrana** - 341505
Fax : 01588-240499(O)

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का 98वां जन्मदिवस : 'अणुव्रत दिवस' समारोह

अणुव्रत को अधिक सशक्त बनाने की जरूरत : आचार्य महाश्रमण

केलवा, २८ अक्टूबर। कार्तिक शुक्ला द्वितीया। आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में अणुव्रत प्रवर्तक गणाधिपति गुरुदेव तुलसी के ९८वें जन्मदिवस का 'अणुव्रत दिवस' के रूप में समायोजन। प्रातःकालीन कार्यक्रम का प्रारंभ समणीवृन्द द्वारा प्रस्तुत 'तुलसी अष्टकम्' से हुआ। कार्यक्रम में मुनि सुखलाल, मुनि प्रसन्नकुमार, मुनि तन्मयकुमार, मुनि जंबूकुमार(मिंजूर), समण सिद्धप्रज्ञ, समणी कुसुमप्रज्ञा, चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी, महामंत्री सुरेन्द्र कोठारी, डॉ. महेन्द्र कर्णावट, कन्यामंडल एवं युवती मंडल, केलवा ने गीत, वक्तव्य आदि के माध्यम से गुरुदेव तुलसी को अपनी भावांजलि अर्पित की। मुनि धर्मरुचि ने तुलसी वाङ्मय के अन्तर्गत प्रकाशित और स्वयं द्वारा संपादित प्रवचन पाथेय के २२-३० तक के भाग आचार्यवर को उपहृत किए।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने अपने वक्तव्य में कहा--'गुरुदेव तुलसी ने अपने जीवन में अनेक विरोधों व संघर्षों को सहन किया। उनके जैसी सहनशक्ति हम सबके भीतर आए। हम उनके द्वारा प्रदत्त सूत्रों को अपनाकर अपने जीवन को आलोकित करें।'

मंत्री मुनि सुमेरमल ने अपने अभिभाषण में कहा--'गुरुदेव तुलसी ने अपने जीवन में अनेक नई रेखाएं खींचीं और समन्वय का सिद्धान्त जनता के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने धर्मसंघ को नये-नये आयाम दिए, जिनके द्वारा संघ आज जन-जन का पथदर्शन कर रहा है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा--'गुरुदेव तुलसी अध्यात्मपुरुष थे। उन्होंने नए-नए इतिहास रचे। उनमें महानता के बीज बचपन से ही निहित थे। एक सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी उनके विचार असाम्प्रदायिक थे। अणुव्रत आन्दोलन मानव जाति को उनके द्वारा दिया गया महान् अवदान है। इतने वर्षों के बाद भी उस आन्दोलन की प्रासंगिकता कम नहीं हुई, बल्कि बढ़ती जा रही है। अपेक्षा है, आचार्य तुलसी जन्म-शताब्दी के अवसर पर अणुव्रत का पुनर्जन्म हो।'

आचार्य तुलसी का एक अन्य महत्त्वपूर्ण अवदान है--समण श्रेणी, जिसके आज इकतीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। उसका कर्तृत्व गुरुदेव तुलसी के कर्तृत्व से प्रभावित है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा--'मैंने गुरुदेव तुलसी को देखा। देखा तो बहुत से लोगों ने है, किन्तु मैं तो उन व्यक्तियों में से हूं, जो उनके अत्यन्त निकट रहनेवाले थे। मैं दो रूपों में उनके निकट रहा। एक तो मैं उनकी परिचर्या में नियुक्त था। मुझे गुरुदेव तुलसी ने स्वयं फरमाया था कि तुम मेरे निकट रहा करो और पंचमी का पात्र तुम रखा करो। इस तरह मैं उनकी परिचर्या से जुड़ गया।

मैं सेवा की दृष्टि से उनके निकट रहा और बहुधा उनके पास बैठता था। पास में सोता तो कभी-कभी रात में भी उठकर मुझे उनकी सेवा का मौका मिलता। कभी-कभी मैं स्वयं जागकर गुरुदेव के पास बैठ जाता, उन्हें आगम पाठ सुनाता, कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाता।

दूसरा मेरा नैकट्य इस रूप में था कि उन्होंने मुझे संघ के अंतरंग कार्यों से भी जोड़ दिया था। मैं यह इसलिए बता रहा हूं कि संघ की अंतरंग व्यवस्था के साथ मुझे उन्होंने बहुत पहले ही जोड़ लिया था। विशेषकर युवाचार्य महाप्रज्ञ और फिर आचार्य महाप्रज्ञ के सहयोगी के रूप में मुझे मनोनीत किया, स्थापित किया। वत्सलता की दृष्टि से भी वह एक बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व था। प्रेम और वात्सल्य जैसे उनकी आंखों से टपकता था।

गुरुदेव तुलसी का एक महत्त्वपूर्ण अवदान है अणुव्रत आन्दोलन। अभी साध्वीप्रमुखाजी ने जो बात कही, वह पूरी तो हमें जंची नहीं है। उन्होंने कहा कि अणुव्रत का पुनर्जन्म होना चाहिए। पुनर्जन्म तो उसका होना चाहिए जो पहले पूरा मर जाए। अणुव्रत तो मरा नहीं है, अभी जीवित है, फिर उसके पुनर्जन्म की बात कहां तक ठीक है। इसलिए पुनर्जन्म नहीं, अणुव्रत को और अधिक बलवान, सशक्त बनाने की जरूरत है। अणुव्रत आन्दोलन तो चल ही रहा है, उसे और ज्यादा गतिमान बनाने की जरूरत जरूर महसूस होती है।

गुरुदेव तुलसी की जन्म शताब्दी के संदर्भ में अनेक योजनाएं बन रही हैं। किन्तु मुख्य रूप से करणीय कार्यों की दृष्टि से दो बातें मेरे मस्तिष्क में काफी स्पष्ट हुई हैं--

पहली बात महाव्रती व्यक्तियों का विकास हो। इसमें चिंतन और प्रयास इस बात का हो कि गुरुदेव के जन्म-शताब्दी वर्ष में सौ मुनि-दीक्षाएं हो जाएं। सौ भाई-बहिन साधु-साध्वी बनें। मान लीजिए कि सौ में कुछ कमी रह जाती है तो पूर्व के अभी ये जो दो वर्ष हैं, हम इसमें हुई दीक्षाओं को भी उसमें जोड़ लेंगे। अगर हम सौ का लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं तो यह एक बड़ी उपलब्धि होगी।

दूसरी बात--जन्म शताब्दी वर्ष में अणुव्रत का काम विशेष रूप से चले। गुरुदेव महाप्रज्ञ ने जीवन के अन्तिम दिन और अन्तिम रात्रि में अणुव्रत की बात हमारे साथ की थी। वे हम लोगों से कहा करते थे कि अणुव्रत को हमें और अधिक तेजस्वी बनाना है। मैं यह सोचता हूं और निर्णय करता हूं कि शताब्दी वर्ष में नये-नये व्यक्तियों को अणुव्रती बनाने और अणुव्रत के साथ जोड़ने का कार्य करना है। यह कार्य सभाओं, सेमिनारों, गोष्ठियों, प्रादेशिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों आदि रूपों में हो सकता है। इससे अणुव्रत आन्दोलन और ज्यादा बलवान बनकर उभरेगा, इसका और ज्यादा प्रचार-प्रसार हो सकेगा।

गुरुदेव तुलसी के प्रवचन साहित्य के इक्कीस भाग अब तक आ चुके थे। पट्ट पर स्थापित गुरुदेव की प्रवचनमाला की तीस पुस्तकों की ओर संकेत करते हुए पूज्यवर ने कहा--'इधर साहित्य, उधर साहित्य, आज इस अवसर पर उनका इतना साहित्य देखकर लगता है जैसे मैं साहित्य के बीच में बैठा हूं। गुरुदेव की व्याख्यान की अपनी विशिष्ट कला थी। उनके व्याख्यान में संगान भी होता था, कहानियां भी आती थीं, आरोह और अवरोह दोनों रहता था। उनके व्याख्यानों को पुस्तकाकार में गुंफित करने का कार्य महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसके संपादक मुनि धर्मरुचि नियम-कानून के वेत्ता हैं। इन्होंने गुरुदेव के प्रवचनों का जो संपादन किया, उसमें से कुछ पुस्तकों को मैंने देखा है। गुरुदेव तुलसी का व्याख्यान साहित्य बहुत लाभदायी हो सकता है। अभी आई पुस्तकों को मैंने देखा। पूरी समीक्षा तो पुस्तक पढ़ने के बाद ही की जा सकती है। किन्तु अनुमान है कि अच्छा संपादन हुआ है।

प्रेक्षाध्यान अच्छी प्रविधि है, यह विश्व के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचे : डॉ. नतालिया

महाश्रमण द्वार का लोकार्पण

२६ अक्टूबर। आचार्य महाश्रमण की मंगल सन्निधि में आज प्रातः राजमार्ग के सन्निकट केलवा के प्रवेश मार्ग पर पूज्यवर के चतुर्मास के उपलक्ष्य में संपतलाल ख्यालीलाल मादरेचा परिवार की ओर से निर्मित 'महाश्रमण द्वार' का लोकार्पण किया गया। आचार्यवर प्रातःकालीन भ्रमण और घरों में चरणस्पर्श के पश्चात वहां पधारे। केलवा के सरपंच दिग्विजयसिंहजी राठौड़ ने केलवा के वरिष्ठ नागरिकों और मादरेचा परिवार के साथ आचार्यवर से मंगलपाठ सुनकर द्वार को लोकार्पित किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में केलवा राजपरिवार से संबद्ध हरिसिंहजी राठौड़ और संपतलाल मादरेचा ने इस प्रसंग में अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्यश्री ने कहा--'द्वार का लोकार्पण हुआ है। मादरेचा परिवार इससे जुड़ा हुआ है। सम्पतजी मादरेचा अपने ढंग के अच्छे श्रावक हैं। ये खूब अच्छा काम करें। द्वार पर आने वाले लोग अच्छी प्रेरणा प्राप्त करें, यह अपेक्षा है।'

दुःखमुक्ति का मार्ग है संयम

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यश्री ने संबोधि के छठें अध्याय पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्त होकर दुःखों से छुटकारा पाने के लिए मोह की चेतना को त्यागना होगा। मोह की चेतना को अप्रभावी बनाने के लिए संयम और वैराग्य को धारण करना होगा।'

केलवा के स्वर्गीय श्रावक शेषमल कोठारी के स्मृतिग्रंथ के संदर्भ में मोहनलाल कोठारी, डॉ. यशवंत कोठारी, डॉ. ओकारसिंह राठौड़, प्रकाश धाकड़, लक्ष्मणसिंह कर्णावट, कुन्दनलाल कोठारी एवं श्रीमती पुष्पा कोठारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति की। परिजनों ने स्मृतिग्रंथ आचार्यवर को उपहृत किया।

आचार्य महाश्रमण ने इस संदर्भ में कहा--'कोठारी परिवार ने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का प्रयास किया है। परिवार के लोग उनकी विशेषताओं को आत्मसात करने का प्रयास करें और पवित्र कार्यों की प्रेरणा प्राप्त करें।'

न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं एवं विधिवेत्ताओं का द्विदिवसीय सम्मेलन

आचार्य महाश्रमण की पावन सन्निधि में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा समायोजित न्यायाधीशों, अधिवक्ताओं एवं विधिवेत्ताओं का द्विदिवसीय सम्मेलन यहां प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में फोरम के प्रभारी मुनि रजनीशकुमार, बसंतीलाल बाबेल, श्रीमती रंजीता कावड़िया ने सम्मेलन के विषय 'पारिवारिक एवं सामाजिक विवादों का सामाजिक मंच द्वारा निस्तारण' पर अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा--'तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा समायोजित इस सम्मेलन का विषय बहुत महत्त्वपूर्ण है। लोकतंत्र में न्यायपालिका का अपना महत्त्व है और उसके प्रति मेरे मन में सम्मान की भावना भी है। समाज के अनेक व्यक्ति न्यायाधीश और अधिवक्ता के रूप में न्याय के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। समाज, परिवार और संस्थाओं में किन्हीं कारणों से विवाद की स्थितियां बन जाती हैं। प्रथम प्रयास तो यह हो कि वैसी स्थितियां उत्पन्न ही न हों और कदाचित उत्पन्न हो जाएं तो उसे आत्मीय भाव से परस्पर चिंतनपूर्वक सुलझाने का प्रयास होना चाहिए। न्यायालय जाने की अपेक्षा यदि अनौपचारिक रूप से विवादों को सुलझाया जा सके तो एक सुन्दर कार्य हो सकता है तथा समय व अर्थ की हानि से भी बचा जा सकता है। न्यायाधीश और अधिवक्ता प्रबुद्ध व्यक्ति होते हैं। सम्मेलन में इस विषय पर चिंतन हो कि अपनी बुद्धि से सामाजिक विषयों को अनौपचारिक रूप में कैसे सुलझा सकते हैं? यह सम्मेलन निष्पत्तिमूलक बने।' कार्यक्रम के अन्त में अधिवेशन के सहसंयोजक देवेन्द्र कच्छारा ने आभार व्यक्त किया।

इस द्विदिवसीय सम्मेलन में समाज के लगभग साठ न्यायाधीश और अधिवक्ता संभागी बने। संभागियों को पूज्यवर के पावन पाथेय के अतिरिक्त मुनि सुखलाल, मुनि उदितकुमार, शासन गौरव मुनि धनंजयकुमार और फोरम के प्रभारी मुनि रजनीशकुमार द्वारा प्रेरणा प्राप्त हुई। कोटा के सिविल जज प्रकाश पगारिया, बारां के जिला एवं सत्र न्यायाधीश कमलसिंह नाहर, राजसमन्द बार एसोसियेशन के अध्यक्ष मुकेश तलेसरा, सेवानिवृत्त न्यायाधीश सुन्दरलाल मेहता आदि ने भी संभागियों को प्रशिक्षण दिया।

आचार्य महाप्रज्ञ प्रेक्षा पुरस्कार

२६ अक्टूबर। आज मध्याह्न में वर्ष २०१० का आचार्य महाप्रज्ञ प्रेक्षा पुरस्कार रशियन महिला डॉ. नतालिया क्रिवोरोतोवा को प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है--मदनचन्द तोलाराम गोठी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा सन १९९९ से यह पुरस्कार प्रतिवर्ष प्रेक्षाध्यान के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति को दिया जाता है। पुरस्कार प्राप्तकर्ता डॉ. नतालिया पेशे से मनश्चिकित्सक है और सन २००५ से प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय शिविर में संभागी बन रही है। रशिया के कुरगन शहर में प्रेक्षाध्यान केन्द्र चलाती हुई प्रेक्षाध्यान के प्रचार-प्रसार हेतु सराहनीय प्रयास कर रही है। डॉ. नतालिया के सत्प्रयासों से कुरगन में सात सौ से अधिक व्यक्ति प्रेक्षाध्यान से लाभान्वित हुए हैं और वे भी प्रेक्षाध्यान के प्रचार-प्रसार के कार्य में सहयोगी बन रहे हैं।

ट्रस्ट की ओर से योगेन्द्र गोठी ने प्रशस्तिपत्र, प्रतीक-चिह्न और पुरस्कार की राशि एक लाख पचहत्तर हजार का चैक डॉ. नतालिया को समर्पित किया। डॉ. नतालिया ने अपने भाषण में भावपूर्ण स्वरों में कहा--'मेरे जीवन का यह बहुत महत्त्वपूर्ण दिन है। प्रेक्षाध्यान बहुत अच्छी प्रविधि है। मैं तो सोचती हूं कि यह विश्व के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचे, जिससे उनकी जीवनशैली स्वस्थ और प्रशस्त बन सके। यह पुरस्कार मुझे प्रेक्षाध्यान के लिए और अधिक कार्य करने की प्रेरणा देता रहेगा।' प्रेक्षा इंटरनेशनल ट्रस्ट के मुख्य न्यासी सुरेन्द्र चोरड़िया ने आचार्य महाप्रज्ञ की कृति 'जीवन की पोथी' का रशियन अनुवाद पूज्यवर को उपहृत किया। प्रेक्षाध्यान प्रभारी मुनि कुमार श्रमण ने रूस, यूक्रेन आदि देशों में चलने वाली प्रेक्षाध्यान की गतिविधियों की अवगति दी।

आचार्य महाश्रमण ने कहा--'आज डॉ. नतालिया को प्रेक्षा पुरस्कार दिया गया। मुझे ज्ञात हुआ कि यह प्रेक्षाध्यान का अभ्यास और उसके प्रचार-प्रसार का प्रयास कर रही हैं। भविष्य में ऐसा अभ्यास और प्रयास चलता रहे। दूसरे लोगों को भी प्रेक्षाध्यान करने और शिविर में संभागी बनने हेतु प्रेरित करती रहें, शुभाशंसा।' संचालन बजरंग जैन ने किया।

महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष की नॉर्थ-बंगाल संगठन-यात्रा

नई दिल्ली, 29 अक्टूबर। अणुव्रत महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा दिल्ली से प्रातः 6 बजे साध्वी यशोमती से मंगल पाठ सुनकर अणुव्रत लेखक अब्दुल जब्बार के साथ एयर पोर्ट पहुंचे। प्रातः 10 बजे सिलीगुड़ी जाने वाली फ्लाइट में श्री जब्बार से अणुव्रत के विषय में गहरी चर्चा हुयी। जब्बार की अणुव्रत अनुशास्ता एवं अणुव्रत आंदोलन के प्रति गहरी आस्था है। दोनों 12.15 बजे बागडोगरा एयर पोर्ट सिलीगुड़ी पहुंचे। वहां स्वागत के लिए अणुव्रत महासमिति के संगठन मंत्री मदनलाल मालू, परामर्शक मेघराज सेठिया, राकेश मालू, अरुण मिश्रा एवं करण जैन व अन्य कार्यकर्ताओं ने बाबूलाल गोलछा एवं अब्दुल जब्बार का सम्मान किया।

सिलीगुड़ी : तेरापंथ भवन पहुंच कर दिल्ली से साथ में लाया गया अणुव्रत प्रचार-प्रसार साहित्य राकेश मालू आदि कार्यकर्ताओं को प्रदान किया तथा अणुव्रत कार्यक्रमों पर विस्तार से चर्चा हुई। कार्यकर्ता-परिचय का भी क्रम रहा। तीन बजे वापिस स्थानीय तेयुप अध्यक्ष तोलाराम सेठिया से अणुव्रत कार्यक्रम पर चर्चा हुई। अणुव्रत समिति के मंत्री सुरेन्द्र घोड़ावत, उपाध्यक्ष प्रमोद दूगड़, जतन मालू जनसम्पर्क मंत्री की उपस्थिति में तेरापंथ भवन में सायं 6 बजे कार्यकर्ताओं की बैठक रखी गयी। बैठक में अमृत सांसद शुभकरण नौलखा, सभाध्यक्ष बाबूलाल लूणावत, तेयुप के बजरंग सेठिया, महिला मंडल से विमलादेवी भंसाली, अणुव्रत महासमिति के संगठन मंत्री मदन मालू इत्यादि ने अपने विचार रखे। महासमिति अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने अणुव्रत के संगठन को मजबूत बनाने पर विशेष जोर दिया। स्थानीय समिति के सहमंत्री अरुण मिश्रा ने आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने सायं 6.15 बजे तेरापंथ भवन सिलीगुड़ी के तृतीय माले पर सरदारशहर मित्र मंडल द्वारा आयोजित दीपावली मिलन समारोह में विशेष रूप से भाग लेकर सभी को दीपावली की शुभकामनाएं दीं।

जन-सम्पर्क के क्रम में जब विश्वंभरलाल अग्रवाल को अणुव्रत के बारे में बताया गया तो उन्होंने तत्काल कहा मैं तो बहुत समय से ही अणुव्रती हूं। अणुव्रत आचार संहिता के नियम मेरे जीवन में रचे-बसे हैं और उन्होंने विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी के रूप में अपना सहयोग प्रदान करने की स्वीकृति दी। दिन भर लोगों से मुलाकात करते हुए अणुव्रत कार्यक्रमों की जानकारी दी।

30 अक्टूबर : प्रातः 10 बजे दलकोला पहुंचकर साध्वी त्रिशलाकुमारी के सान्निध्य में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 98वां जन्मदिवस **'अणुव्रत चेतना दिवस'** के रूप में मनाया गया। अध्यक्षता बाबूलाल गोलछा ने की। मुख्य वक्ता नेपाल-बिहार तेरापंथ सभा के अध्यक्ष हंसराज बेताला थे। अणुव्रत महासमिति के संगठन मंत्री मदनलाल मालू भी उपस्थित थे।

प्रारंभ अमरादेवी कोठारी एवं अन्य बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। सभाध्यक्ष मालचंद जैन ने अतिथियों का स्वागत किया। महिला मंडल की बहनों ने गीत प्रस्तुत किया। गुलाब बाग से बाबूलाल डूंगरवाल, फारबिसगंज से प्रभा सेठिया, तारा दूगड़, किशनगंज से मुमुक्षु सायर कोठारी ने अपने विचार रखे। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष कर्ण जैन ने समसामयिक विचार रखे। साध्वी त्रिशलाकुमारी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा आज हम गुरुदेव तुलसी का 98वां जन्म दिवस 'अणुव्रत चेतना दिवस' के रूप में मना रहे हैं। आचार्य तुलसी ने समाज को अणुव्रत आंदोलन के रूप में महत्वपूर्ण आयाम दिया है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गोलछा विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्होंने कहा गुरुदेव तुलसी का जन्म-शताब्दी वर्ष है, अतः हमें अधिक से अधिक क्षेत्रों में अणुव्रत समितियों का गठन कर अणुव्रत की आवाज को हर तबके में पहुंचाना है। इस दौरान श्री गोलछा ने कई व्यक्तियों से मिलकर अणुव्रत पत्रिका योगक्षेमी योजना की जानकारी देते हुए स्वीकृति प्राप्त की। पूर्वी क्षेत्र बंगाल, बिहार, नेपाल से आये कार्यकर्तागण, जिनमें महिला मंडल, युवक परिषद् एवं तेरापंथी सभाओं के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों के साथ कार्यक्रम रखा गया। इस दौरान लगभग एक घंटे तक अणुव्रत को कैसे आगे बढ़ाया जाए इस पर विस्तार से वार्तालाप हुआ।

इस अवसर पर दलकोला में अणुव्रत समिति का गठन किया गया। बाबूलाल गोलछा ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष संजय गधैया को अणुव्रत साहित्य एवं कार्यक्रमों की सूची देकर कार्यभार संभालने हेतु शुभकामनाएं दीं। हंसराज बेताला ने गुरुदेव तुलसी के अवदानों की विस्तार से चर्चा करते हुए अणुव्रत की बात को दूसरों तक पहुंचाने की बात कही।

31 अक्टूबर : दिन भर सिलीगुड़ी के कार्यकर्ताओं एवं समाज के वरिष्ठ व्यक्तियों से मुलाकात कर अणुव्रत आंदोलन को कैसे आगे बढ़ाया जाय, इस पर चर्चा-परिचर्चा का क्रम रहा। सभाध्यक्ष बाबूलाल लूणावत का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

1 नवम्बर : सुबह 7 बजे रवाना होकर सभी कार्यकर्ताओं के साथ इस्लामपुर पहुंचे। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार, पूर्व सूचना के कारण सभी कार्यकर्ता महिला मंडल, युवक परिषद् एवं तेरापंथी सभा स्वागत के लिए तैयार थे। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की मंत्री नीलू श्रीमाल ने अणुव्रत गीत के संगान से किया। बाबूलाल गोलछा ने आगामी वर्ष में करने वाले कार्यों एवं समाज व देश को अणुव्रत से क्या अपेक्षाएं हैं, इसकी विस्तार से जानकारी दी। रतनलाल सिंघी ने जैन संस्कार विधि से नवनिर्वाचित अणुव्रत समिति इस्लामपुर के अध्यक्ष प्रमोद सिंघी को शपथ दिलाई। इस्लामपुर से वापिस सिलीगुड़ी आते समय किशनगंज में राजकरण दफ्तरी के यहां अणुव्रत के विषय में काफी चर्चा-वार्ता हुई एवं उन्होंने सक्रिय सहयोग देने का आश्वासन दिया।

बागडोगरा : किशनगंज से रवाना होकर बागडोगरा में कन्हैयालाल सेठिया 'जैन' से मुलाकात कर अणुव्रत पर चर्चा की। कन्हैयालालजी वरिष्ठ श्रावक एवं अणुव्रत के अच्छे कार्यकर्ता हैं। अन्य समाज में भी इनकी गहरी प्रतिष्ठा है। इन्होंने अणुव्रत कार्य को बढ़ाने का संकल्प दोहराते हुए अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना में सहयोगी के रूप में स्वीकृति दी।

2 नवम्बर : चार दिवसीय प्रवास में अणुव्रत समिति सिलीगुडी के अध्यक्ष रणजीत मालू व उनकी टीम का पूर्ण सहयोग मिला। इसके अलावा अणुव्रत महासमिति के संगठन मंत्री मदनलाल मालू एवं परामर्शक मेघराज सेठिया के निर्देशन में निर्धारित कार्यक्रम रखे गये। विशेष कार्यकर्ता राकेश मालू ने बिना किसी पद पर होते हुए भी अपना पूर्ण सहयोग दिया। राकेश मालू का हर क्षेत्र में विशेष एवं सराहनीय श्रम रहा। यात्रा समापन से पहले आदरणीय रामावतार अग्रवाल से मिलना हुआ, उन्होंने अपने विचार रखते हुए कहा कि यदि नशामुक्ति के कार्य में अणुव्रत महासमिति व अणुव्रत समितियां सफल रहती हैं तो समाज के लिए बहुत अच्छा एवं बड़ा कार्य होगा। विशेष अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना में सहयोगी बनते हुए उन्होंने कहा कि मैं व्यक्ति विशेष को नहीं जानता, मेरा सहयोग अणुव्रत के प्रति हमेशा रहेगा। श्री मेघराज सेठिया के यहां सभी कार्यकर्ताओं के साथ अल्पाहार के बाद अब्दुल जब्बार के साथ राजधानी ट्रेन से दिल्ली के लिए रवाना हुए।

स्वस्थ समाज रचना का आधार

गुवाहाटी, 28 अक्टूबर। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 98वां जन्मदिवस अणुव्रत दिवस के रूप में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए साध्वी निर्वाणश्री ने कहा स्वस्थ समाज रचना का आधार है अणुव्रत। उपासनात्मक धर्म और आचरण के धर्म की दूरी को पाटते हुए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत धर्म का प्रवर्तन किया। अणुव्रत का आचरण करने से जीवन की शुद्धि होती है। साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभा ने कहा अनैतिकता के सघन कुहासे में अणुव्रत प्रखर सूर्य के रूप में उदित हुआ। आज अणुव्रत की प्रासंगिकता और अधिक वृद्धिंगत हुई है।

मुख्य वक्ता असम साहित्य सभा के कोषाध्यक्ष किशोर जैन काला ने कहा आचार्य तुलसी जैन समाज के ही नहीं भारत के ऐसे विलक्षण महापुरुष थे जिन्होंने मानव उत्थान का महायज्ञ शुरू किया। आचार्य तुलसी का जन्मशताब्दी वर्ष निकट है, उस मौके पर उनके जीवनलक्षी साहित्य का प्रादेशिक भाषा में व्यापक प्रचार होना अपेक्षित है। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वी मुदितप्रभा द्वारा तुलसी अष्टकम् के संगान से हुआ। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के मंत्री निर्मल सामसुखा, सभा के कोषाध्यक्ष रायचंद पटावरी, तेयुप मंत्री जयंत सुराणा, महिला मंडल की मंत्री विद्या कुंडलिया ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। गुलाबबाग से समागत जूही संचेती ने मधुर गीत एवं मंजू भंसाली ने मुक्तकों से श्रद्धा अर्पित की। अणुव्रत समिति की ओर से हनुमानमल सुराणा ने मुख्य वक्ता का सम्मान किया। संचालन सहसचिव सौरभ बोथरा ने किया।

मैसूर में अणुव्रत दिवस

मैसूर, 28 अक्टूबर। मानवता के मसीहा अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के 98वें जन्मोत्सव ''अणुव्रत दिवस'' पर मैसूर महिला मंडल व कन्या मंडल की बहनों के तत्वावधान में अनाथ आश्रम में कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर जरूरतमंद बच्चों को नोटबुक्स, पेन, पेन्सिल, रबर, टिफिन, कपड़े, मिठाई इत्यादि बांटे गये। किरण दक, मंजू पीतलिया, निर्मला मेहर, सुधा नौलखा, इन्द्रा कोठारी, मीनाक्षी नौलखा, संगीता पीतलिया, पिस्ता दक, इन्दु पीतलिया ने प्रायोजक के रूप में महिला मंडल का सहयोग किया। महिला मंडल की अध्यक्ष ललिता पीतलिया ने कहा आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर मानव कल्याण का महान कार्य किया। आज हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हमें जरूरतमंदों की मदद के लिए अपनी सामर्थ्य अनुसार हर संभव कोशिश करनी चाहिए।

आचार्य तुलसी का 98वां जन्मदिवस

रतनगढ़, 28 अक्टूबर। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 98वां जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में गोलछा ज्ञान मंदिर में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रारंभ विमलादेवी बोथरा द्वारा मंगलाचरण से हुआ। साध्वी मंजूलता, साध्वी शशिरेखा, साध्वी कान्तप्रभा ने विचार रखे। कन्या मंडल एवं महिला मंडल की बहिनों ने संगीत की सस्वर लहरियों द्वारा अपने आराध्य की आराधना की। कुलदीप व्यास ने कहा अणुव्रत, जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान आदर्श भारत के लिए शिक्षा प्रदान करने वाले नवीन प्रेरणात्मक कार्यक्रम हैं। अणुव्रत से जुड़कर मैंने अपने जीवन में परिवर्तन किया है। इस अवसर पर कवि सीताराम महर्षि, एनटीटी कॉलेज सरदारशहर के प्रिंसिपल भगवानदास सोनी, महावीर प्रसाद, वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी ने अणुव्रत पर विचार रखे। साध्वी जयप्रभा ने कहा अणुव्रत आधि-व्याधि, उपाधि को मिटाकर समाधि तक पहुंचाने का अमोघ उपाय है। कार्यक्रम में शांतिलाल शर्मा, राजेन्द्रसिंह बीदावत, विनोद कुमार वर्मा, संजय कुमार, नारायण प्रसाद, महेश कुमार सहित महिला मंडल, कन्या मंडल व युवक परिषद् के कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शीतलयशा ने किया। आभार ज्ञापन महावीर प्रसाद ने किया।

जयपुर में अणुव्रत दिवस

जयपुर, 28 अक्टूबर। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक गणाधिपति तुलसी का 98वां जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' का आयोजन साध्वी रामकुमारी के सान्निध्य में श्यामनगर स्थित भिक्षु-साधना केन्द्र में आस्था और निष्ठा के साथ मनाया गया। कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण के बाद महिला मंडल सी-स्कीम की बहिनों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। अमृत-सांसद प्रेम बोथरा ने आचार्य तुलसी द्वारा किये गये महिला-उत्थान के क्षेत्र में योगादान का स्मरण किया। सुरेन्द्र सेठिया, सुशीला नखत ने अपने वक्तव्य में अणुव्रत के सामाजिक योगदान और आचार्य तुलसी के समग्र सामाजिक अवदान का स्मरण किया।

इस अवसर पर 'तुलसी सिंपोजियम' नामक एक रोचक और प्रेरणास्पद प्रस्तुति साध्वी विनयप्रभा, आत्मप्रभा, सुविधिप्रभा व सिद्धियशा ने सामूहिक रूप से प्रस्तुत कर आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रभावी ढंग से प्रकाश डाला। अणुव्रत प्रवक्ता जी.एल. नाहर ने अणुव्रत आंदोलन और आचार्य तुलसी को अविभाज्य बताते हुए तुलसी के प्रति स्मरणांजलि प्रस्तुत की। अणुव्रत समिति जयपुर के अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने आचार्य तुलसी के योगदान को सार्वकालिक बताते हुए अणुव्रत आंदोलन की दीपशिखा को सतत दीपित रखने का संकल्प दोहराया। अणुव्रत समिति के परामर्शक कर्नल एन.के. शर्मा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति की सहमंत्री सरोज बैंगानी ने किया।

बाढ़ (बिहार) में अणुव्रत दिवस

बाढ़, 28 अक्टूबर। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 98वां जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत समिति और शिक्षक संसद संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। प्रोफेसर कॉलोनी ढ़ेलवा गोसांई बाढ़ के अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र परिसर में समारोह का शुभारंभ पं. उमानंद ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. साधुशरण सिंह सुमन ने की। पं. उमानंद ने आचार्य तुलसी के बहुआयामी व्यक्तित्व की विस्तार से चर्चा की। 'अणुव्रत सेवी' प्रो. साधुशरण सिंह सुमन ने नशामुक्ति अभियान, पर्यावरण संरक्षण, दहेज उनमूलन, साम्प्रदायिक सद्‌भाव इत्यादि पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ. आलेहसन आजाद, प्रो. एम.पी. सिन्हा, डॉ. नवीन कुमार, प्रो. विजय प्रकाश, प्रो. जीतेन्द्र, सोनू कुमार सिंह, मधुलिका सुमन, रीन्टूराज सतीश कुमार ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में नशामुक्ति संकल्प, बिना दहेज शादी करने का संकल्प, अपने-अपने निजी आवासों में कम से कम 10-10 फलदार वृक्ष लगाने तथा पानी-बिजली की बर्बादी रोकने का संकल्प लिया गया। संयोजन पुरुषोत्तम कुमार यादव ने तथा आभार ज्ञापन सोनू कुमार गुप्ता ने किया। इस अवसर पर अणुव्रत गीत प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी। स्वागत भाषण दीपक पांडेय ने तथा आभार ज्ञापन रामजी शर्मा ने किया।

अणुव्रत संगोष्ठी

कटक। अणुव्रत समिति द्वारा तेरापंथ भवन में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के 98वें जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' पर अणुव्रत संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अणुव्रत समिति की सदस्याओं ने अणुव्रत गीत का संगान किया। समिति के अध्यक्ष सुनील कोठारी ने अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सभी आगंतुकों का भावभीना स्वागत किया। अणुव्रत महासमिति की संगठन मंत्री अमृत सांसद पुष्पा सिंघी ने नैतिक मूल्यों की मशाल प्रज्ज्वलित करने वाले संत तुलसी की पंक्ति ''सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा'' को उद्धृत किया तथा स्थानीय समिति द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। मुख्य अतिथि मंगलचंद चौपड़ा ने अणुव्रत के संकल्पों को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। सभा के मंत्री माणिकचंद पुगलिया ने अणुव्रत आंदोलन एवं आचार्य तुलसी के संदर्भ में विचार रखे। सायर सिंघी, पानमल नाहटा, मुकेश सेठिया, दीपक सिंघी, मधु कुंडलिया ने अपने विचार रखे। पुष्पा सिंघी का स्थानीय समिति के अध्यक्ष सुनील कोठारी ने साहित्य द्वारा सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन शान्तिलाल लोढ़ा ने एवं आभार ज्ञापन राजकुमार पुगलिया ने किया।

तुलसी मानवता के मसीहा थे

सूरत, 31 अक्टूबर। साध्वी कुंथुश्री के सान्निध्य में तेरापंथ भवन सिटीलाइट में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 98वां जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में उल्लासपूर्वक मनाया गया। साध्वी कुंथुश्री ने कहा गुरुदेव तुलसी बीसवीं सदी के शिखर पुरुष थे, नैतिक क्रांति के अग्रदूत व मानवता के मसीहा थे। उन्होंने राष्ट्र के उन्नयन हेतु अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। वे युगपुरुष थे। युग को नया मोड़ देने के लिए उन्होंने अनेक अवदान दिये। आचार्य तुलसी के अवदानों का अंशमात्र भी जीवन में उतर जाए तो उनका जन्मदिवस मनाना सार्थक होगा।

साध्वी कंचनरेखा ने कहा गुरुदेव तुलसी तेजस्वी आचार्य थे। इस अवसर पर साध्वी सुमंगलाश्री, साध्वी सुलभयशा, बालचंद बेताला, मधु देरासरिया, मीठालाल भोगर, निराली मोदी, जीतभाई मेहता, विजयकांत खटेड़ ने गीतिका एवं भाषण के द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। मंगलाचरण रेवतमल पुगलिया ने एवं संयोजन अर्जुन मेड़तवाल ने किया।

अणुव्रत दिवस पर प्रमाण-पत्र वितरण

सिकंदराबाद, 29 अक्टूबर। मुनि जिनेशकुमार के सान्निध्य में एस.एस. जैन स्कूल ताड़बन्ध में अणुव्रत महासमिति कार्यसमिति की सदस्या निर्मला बैद के तत्वावधान में ''अणुव्रत दिवस'' पर अणुव्रत परीक्षा प्रमाण-पत्र वितरण समारोह रखा गया। साथ ही आगामी अणुव्रत परीक्षाओं हेतु तैयारी करवायी गयी। निर्मला बैद ने बच्चों को नशा नहीं करना, अवैध तरीकों से पास नहीं होना, हिंसा व तोड़-फोड़मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लेना, हरे-भरे वृक्ष नहीं काटना, पर्यावरण की सुरक्षा करना इत्यादि अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्प करवाये। सभी ने खड़े होकर संकल्प व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि पार्षद स्टेंडिंग कमेटी की सदस्य रंजना गोयल ने कहा बच्चे छोटी उम्र में ही यह सब सीख लें तो जीवन प्रकाशमय, उज्जवल, चरित्र-सम्पन्न बन जाता है। विद्यालय की प्रिंसिपल गायत्री, अध्यापिका अन्जु, वन्दना ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर अणुव्रत परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। स्कूल की लायब्रेरी हेतु पुस्तकें एवं जरूरतमंद बच्चों के लिए सामग्री हनुमान जितेन्द्र बैद की तरफ से दी गयी। विद्यालय द्वारा अतिथियों का सम्मान किया गया।

अणुव्रत दिवस पर रैली

असाड़ा, 28 अक्टूबर। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का 98वां जन्मदिवस 'अणुव्रत दिवस' के रूप में तीन चरणों में मनाया गया। प्रथम चरण में प्रातः अणुव्रत रैली का आयोजन किया गया। रैली में महिला मंडल, कन्या मंडल, सभा के कार्यकर्ताओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। इसमें अनेक वक्ताओं ने अपने विचार रखे। द्वितीय चरण में साध्वी गुलाब कंवर, साध्वी हेमरेखा और अन्य साध्वीवृंद ने गीत, भाषण के द्वारा अपनी अभिव्यक्ति दी। धनराज भंसाली तथा त्रिलोकचंद, जसराज और सभाध्यक्ष इन्द्रमल भंसाली ने अपने विचार रखे। तृतीय चरण में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें महिला मंडल, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम मुमुक्षु बहन भागवंती तथा रौनक, द्वितीय हर्षा और तृतीय साक्षी रही। विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया।

तुलसी एक महासूर्य थे

गोविन्दगढ़। साध्वी उज्जवलकुमारी के सान्निध्य में 'अणुव्रत दिवस' मनाया गया। साध्वीश्री ने मंगलाचरण से शुभारंभ करते हुए कहा गुरुदेव तुलसी एक युगपुरुष थे, युग निर्माता थे। उन्होंने अपनी कर्म-चेतना, पुरुषार्थ से युग को प्रभावित किया। वे एक ऐसे अलौकिक दीप थे जिन्होंने अपनी सतत साधना से असंख्य बुझे दीपों को स्नेहदान देकर ज्योतित किया। विरोधों की तेज आंधियां और संघर्षों के तूफान उनको कभी कंपा नहीं सके।

साध्वी सूरजप्रभा ने गुरुदेव तुलसी के जीवन को उजागर करते हुए कहा आचार्य तुलसी शांति के दूत थे तो क्रांति पुरुष भी थे। उन्होंने मार्मिक विचारों के साथ सुमधुर भजन प्रस्तुत किया। साध्वी डॉ. लावण्ययशा ने कहा आचार्य तुलसी एक ऐसे महासूर्य थे जिनकी तेजस्वी किरणें आज भी समूचे विश्व को आलोकिक कर रही हैं।

कार्यक्रम में नन्हें-मुन्ने बच्चों ने रोचक झांकियां प्रस्तुत कीं। हर्षिता जैन और संस्कृति जैन ने सुंदर श्लोकों का संगान किया। उमा सिंगला, श्रुति जैन, रामनिवास जैन, रमेश, पंकज ने अपने विचार रखे। संचालन प्रवीण जैन ने किया।

आचार्य तुलसी युगपुरुष थे

उदासर। साध्वी पानकुमारी 'प्रथम' ने अणुव्रत दिवस पर कहा--राष्ट्र संत आचार्य तुलसी नैतिक मूल्यों के संवाहक थे। एक युग पुरुष थे। उन्होंने अपनी प्रज्ञा से नित नए सपने देखे। विश्व को उन्नत जीवन शैली के आयाम दिए।

साध्वी परमयशा ने कहा--सदियों, सहस्त्राब्दियों बाद तुलसी जैसे संघ-सुमेरू आते हैं। युग को उजाला देते हैं। इस अवसर पर साध्वी राजकुमारी, साध्वी विनम्रयशा, साध्वी मुक्तिप्रभा एवं साध्वी परमयशा ने प्रकाश-पुंज तुलसी को अध्यात्म का हिमालय बताया। कन्या मंडल, विजयलक्ष्मी, संगीता देवी, गुलाबी देवी, मिलन बोथरा, प्रकाश महनोत, सभाध्यक्ष आनन्दमल महनोत ने आचार्य तुलसी के ज्योतिर्मय जीवन दर्शन की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने सुमधुर कविता का संगान किया।

अणुव्रत पत्रिका योगक्षेमी योजना

अणुव्रत पत्रिका योगक्षेमी योजना *के अंतर्गत प्रकाशन एवं प्रसार अभियान के तहत यह विशेष योजना प्रारंभ की गयी है। इसके अंतर्गत एकमुश्त राशि 5100 रु. देकर सदस्य बनने वाले को अणुव्रत पाक्षिक पत्रिका आगामी 15 वर्षों तक निरंतर भेजी जायेगी। इसके अलावा अणुव्रत पत्रिका में सदस्य का नाम एवं पता फोटो सहित प्रकाशित किया जायेगा।*

सहयोगी

मनोज कुमार जैन
जैन बर्तन स्टोर
मेन चौक
पोस्ट – रायकोट 141109
लुधियाना (पंजाब)

नरेश कुमार धावा
सुपुत्र : श्री बृजलाल धावा
कटरो चौक वाली गली
पोस्ट – शेरपुर 148025
जिला–संगरूर (पंजाब)

अनिल कुमार जैन
द्वारा : श्री चिन्तराम जैन
मेन रोड
पोस्ट – धारसुल 125106
जिला–फतेयबाद (हरियाणा)
मो. : 09466820805

शिक्षा एवं मानवीय मूल्य सेमिनार

गुवाहाटी। अणुव्रत समिति गुवाहाटी द्वारा 'शिक्षा एवं मानवीय मूल्य' विषयक सेमिनार का आयोजन साध्वी निर्वाणश्री के सान्निध्य में किया गया। इसमें 26 शिक्षकों ने विभिन्न स्कूलों का प्रतिनिधित्व किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंजू भंसाली एवं मुन्नी डोसी द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। समिति के मंत्री निर्मल श्यामसुखा ने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए कहा वर्तमान में शिक्षा के गिरते मानवीय मूल्यों को अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान द्वारा कैसे ऊपर उठाया जाये।

साध्वी डॉ. योगक्षेमप्रभा ने शिक्षा में जो खामियां हैं, उनको स्पष्ट किया और विद्यार्थियों में सर्वांगीण विकास के लिए भावनात्मक एवं मानसिक प्रशिक्षण पर बल दिया। विद्यार्थियों में नैतिकता का विकास कैसे संभव हो, इसकी विस्तृत व्याख्या की। शिक्षकों एवं समाज-बंधुओं को बताया कि हम अपने आपको अच्छे रूप में प्रस्तुत करके ही आने वाली पीढ़ी को संस्कारी बना सकते हैं।

साध्वी निर्वाणश्री ने कहा शिक्षा में अनुशासन का विकास कैसे संभव हो एवं अपने व्यक्तित्व को हम मानवीय मूल्यों द्वारा कैसे निखारें, इसकी विस्तृत व्याख्या अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान में की गई है। जीवन विज्ञान के प्रयोग बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

कपूरचंद पाटनी ने शिक्षा के क्षत्र में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच सदाचार के विकास पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों ने भी अपने विचार रखे एवं सभी ने एक स्वर में कहा कि समय-समय पर ऐसे उपक्रम हों तो उनसे विद्यार्थी, शिक्षक एवं विद्यालय परिवार लाभान्वित हो सकता है। संचालन अर्पणा बैंगाणी ने एवं धन्यवाद ज्ञापन बजरंग डोसी ने किया। कार्यक्रम की सफलता में अणुव्रत समिति अध्यक्ष निर्मल चोरड़िया, हनुमानमल सुराणा, कमल सुराणा, पवन जम्मड़ का सराहनीय श्रम रहा।

अणुव्रत-जीवन विज्ञान कार्यक्रम

सायरा, 14 अक्टूबर। साध्वी लब्धिप्रभा के सान्निध्य में अणुव्रत समिति सायरा द्वारा रा.उ.मा.वि. सायरा में अणुव्रत, जीवन विज्ञान परीक्षा पारितोषिक वितरण कार्यक्रम रखा गया। जिसमें सहायक मुकेश त्रिवेदी ने सभी साध्वीवृंद एवं ग्रामीणों का स्वागत किया। बाबूलाल कावड़िया ने सभा को संबोधित किया। परीक्षा प्रभारी राजेन्द्र कुमार गोरवाड़ा ने बताया कि विगत बीस वर्षों से चार-पांच विद्यालयों में अणुव्रत एवं जीवन विज्ञान की परीक्षाएं आयोजित होती हैं। जिनमें प्रतिवर्ष लगभग 500 विद्यार्थी परीक्षा में भाग लेते हैं। साध्वीश्री ने मधुर गीतिका का संगान किया। उन्होंने छात्रों को संस्कारित होने के लिए प्रेरणा दी तथा कहानी के माध्यम से व्यसनमुक्त जीवन जीने के लिए प्रेरित किया तथा परीक्षा में नकल नहीं करने के लिए सामूहिक संकल्प करवाया। बाबूलाल कावड़िया, राजेन्द्र कुमार गोरवाड़ा, मुकेश त्रिवेदी ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले छात्रों को पारितोषिक एवं समस्त उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। सभी शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। संचालन परीक्षा प्रभारी राजेन्द्र कुमार गोरवाड़ा ने एवं आभार ज्ञापन मीठालाल भोगर तथा जसराज जैन ने किया।

सी.आर.पी.एफ. में प्रेक्षाध्यान

सिकंदराबाद, 22 अक्टूबर। अणुव्रत समिति सिकंदराबाद द्वारा मुनि जिनेशकुमार की प्रेरणा से निर्मला बैद ने प्रेक्षाध्यान व अणुव्रत का आंशिक शिविर संयोजित किया। शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ।

अणुव्रत समिति की उपाध्यक्ष निर्मला बैद ने अणुव्रत के नियम एवं प्रेक्षाध्यान की जानकारी दी। दीर्घश्वांस प्रेक्षा, ज्योतिकेन्द्र प्रेक्षा, अन्तर्यात्रा के प्रयोग करवाये व उनसे होने वाले शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व भावनात्मक लाभ के बारे में बताया। सम्पूर्ण कायोत्सर्ग व योगासन करवाये। एसिसटेंट काण्डेंट मि. थामस, इन्दिरा ने अपने विचार व्यक्त किये। प्रश्नोत्तर का भी क्रम चला। पूरे शिविर में डी.आई.जी. वेंकटेश, कमाण्डेंट, पूरे भारत से आये ट्रेनर्स ने भाग लिया। हनुमान जिनेन्द्र बैद की तरफ से अणुव्रत का साहित्य डी.आई.जी. को भेंट किया गया। कार्यक्रम में लगभग 300 व्यक्तियों ने भाग लिया।

दिल्ली नगर निगम द्वारा अमृत महोत्सव का ऐतिहासिक कार्यक्रम
१० लाख विद्यार्थियों एवं २१ हजार शिक्षाकों ने लिया नशामुक्ति का संकल्प

दिल्ली। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अंतर्गत दिल्ली नगर निगम द्वारा संचालित 1729 विद्यालयों में नशामुक्ति दिवस मनाया गया। दिल्ली नगर निगम शिक्षा समिति के चेयरमैन महेन्द्र नागपाल ने विद्यालयों में नशामुक्ति की सामग्री के साथ-साथ एक विशेष परिपत्र जारी किया। जिसमें उन्होंने लिखा "अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के 50वें वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित अमृत महोत्सव के अवसर पर देश के कोने-कोने में नशामुक्ति का अभियान चलाया जा रहा है। दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग ने मुनिश्री राकेशकुमार की प्रेरणा से उस अभियान को आगे बढ़ाने के लिए 4 नवंबर को निगम के सभी स्कूलों में नशामुक्ति दिवस मनाने का निर्णय लिया है। सभी प्रधानाध्यापक प्रार्थना सभा में उस दिन नशामुक्ति की प्रेरणा दें और बच्चों को नशा नहीं करने का संकल्प कराएं।"

4 नवम्बर को मुनि राकेशकुमार का विशेष प्रवचन निगम विद्यालय तुर्कमान गेट पर हुआ, जहां 3 निगम विद्यालयों के विद्यार्थी एकत्रित हुए। मुनि राकेशकुमार ने नशामुक्ति की चर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। मुनिश्री की प्रेरणा से शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने खड़े होकर नशा नहीं करने का संकल्प लिया।

उत्साहित बालकों द्वारा संकल्प-ग्रहण

मुनि राकेशकुमार, महासमिति के अध्यक्ष एवं महामंत्री, शाला प्रधान, शिक्षकगण एवं कार्यकर्ता

इस अवसर पर मुनि सुधाकर, जिला शिक्षा अधिकारी, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा, महामंत्री सम्पत सामसुखा, पदमचंद जैन, महेन्द्र मेहता ने भी अपने विचार रखे।

महेन्द्र नागपाल ने 4 नवम्बर को जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा अमृत महोत्सव के अवसर पर नशामुक्ति का कार्यक्रम स्वस्थ राष्ट्र निर्माण का सशक्त आधार है। जिसमें 10 लाख विद्यार्थियों व 21 हजार शिक्षकों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया। भविष्य में भी मुनिश्री की प्रेरणा से समय-समय पर नशामुक्ति के लिए बच्चों को प्रेरित करते रहेंगे।

राष्ट्र-स्तरीय अणुव्रत गीत-गायन प्रतियोगिता सम्पन्न

अच्छे संस्कारों से ही बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव : शीला दीक्षित

दिल्ली, 3 नवम्बर। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास द्वारा आयोजित 12वीं अणुव्रत नैतिक गीतगायन प्रतियोगिता के अंतर्गत अध्यात्म साधना केन्द्र, महरौली छत्तरपुर, नई दिल्ली, में राष्ट्रीयस्तरीय गीतगायन प्रतियोगिता में उपस्थित विद्याथियों को सम्बोधित करते हुए मुनि जयकुमार ने कहा अणुव्रत आन्दोलन ने बच्चों के निर्माण हेतु अनेक आयाम प्रस्तुत किए हैं। अणुव्रत का उद्देश्य है अच्छे व्यक्तिव का निर्माण क्योंकि यदि बच्चों को अच्छे व्यक्ति के रूप में तैयार नहीं किया गया तो देश का ही नहीं वरन् संपूर्ण मानवता का भविष्य भी खतरे में पड़ जाएगा। बच्चों का चारित्रिक विकास सर्वोपरि है।

मुख्य अतिथि दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने कहा अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास द्वारा पूरे देश में बच्चों में अणुव्रत के माध्यम से जो नैतिक मूल्यों का संदेश दिया जा रहा है, यह प्रयास बहुत सराहनीय है। प्रतियोगिताओं के माध्यम से अणुव्रत के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम है इसके लिए उन्होंने अणुव्रत न्यास के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने विद्यार्थियों के साथ-साथ बड़ों का भी आह्वान किया कि वे नशीलें पदार्थों से दूर रहें और सम्पूर्ण समाज को नशा मुक्त बनाने का प्रयास करें।

गीतगायन प्रतियोगिता में एकल गायन (कनिष्ठ वर्ग) में सुमेरमल जैन पब्लिक स्कूल, जनकपुरी को प्रथम, स्टैनफोर्ड सी. सै. स्कूल,उज्जैन को द्वितीय तथा एकल गायन (वरिष्ठ वर्ग) में जवाहर नवोदय विद्यालय, राजसमंद को प्रथम, तिलक नगर विद्या मंदिर, डोम्बिवली व रेनबों इंग्लिश सी.से. स्कूल, जनकपुरी को द्वितीय स्थान मिला।

समूह गायन (कनिष्ठ वर्ग) में प्रथम स्थान सैन्ट्रल पब्लिक स्कूल, उदयपुर, द्वितीय स्थान हंसराज मॉडल स्कूल, पंजाबी बाग ने प्राप्त किया। समूह गायन (वरिष्ठ वर्ग) में स्टैनफोर्ड सी. से. स्कूल, उज्जैन ने प्रथम व बक्शी स्प्रिंगडेल्स सी.से. स्कूल, कोटा व डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, अशोक विहार ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। उत्कृष्ट अनुशासन पुरस्कार आन्ध्रप्रदेश राज्य ने जीता। प्रतियोगिता विजेताओं को श्रीमती शीला दीक्षित ने पुरस्कार वितरित किये।

विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय मंत्री श्रीमती कृष्णा तीरथ ने कहा कि समाज में व्याप्त बुराईयों से लड़ने का हम सभी को भरसक प्रयास करना चाहिए। उन्होंने भ्रूण हत्या को रोकने का आह्वान करते हुए कहा कि यह एक ऐसी बुराई है जिसको जन जागरण के द्वारा नष्ट किया जा सकता है। इस अवसर पर न्यास द्वारा सम्पादित दो पुस्तकों ''आचार्य महाप्रज्ञ की मानवता को देन'' व टूटते परिवारों का बच्चों पर प्रभाव'' पुस्तकों का शीला दीक्षित व कृष्णा तीरथ ने लोकार्पण किया।

समारोह में वरिष्ठ पत्रकार वैदप्रताप वैदिक, मनोहर अग्रवाल ने भी विचार व्यक्त किये।

प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा ने उपस्थित सभी शिक्षकों विद्यार्थियों, अणुव्रत कार्यकर्ताओं का हार्दिक स्वागत किया एवं अणुव्रत आंदोलन को जन-जन पहुँचाने में सभी से अपने अमूल्य समय देने की बात कही। उन्होंने कहा कि आचार्य तुलसी का संदेश मानवता के उत्थान का संदेश है। इसको विश्व व्यापक बनाने की आवश्यकता है इसके लिए उन्होंने जीवन दानी कार्यकर्ताओं का आगे आने के लिए कहा।

गीतगायन प्रतियोगिता के राष्ट्रीय संयोजक विजयवर्धन डागा ने कहा कि पूरे देश में चरित्र निर्माण व नैतिक मूल्यों पर आधारित अणुव्रत आन्दोलन के कार्य को अणुव्रत न्यास संपादित कर रहा है जिसमें न्यास को आशातीत सफलता मिल रही है। संयुक्त प्रबन्ध न्यासी सुशील कुमार जैन ने कहा कि अणुव्रत चरित्र निर्माण की अमूल्य निधि है। अणुव्रत के माध्यम से हम अपना नैतिक विकास कर सकते हैं एवं इससे समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर किया जा सकता है। इस अवसर पर पूर्व प्रबंध न्यासी के. एल. जैन, पूर्व संयुक्त प्रबंध न्यासी व सम्पतमल नाहाटा ने मार्गदर्शन किया।

न्यासी शांति कुमार जैन ने कहा कि चरित्र निर्माण में अणुव्रत गीत-गायन एक अनुपम माध्यम है। इसके माध्यम से बच्चे अणुव्रत के दर्शन को समझने का प्रयास करते हैं। इस अवसर पर उन्होंने समारोह में उपस्थित होने के लिए सभी अतिथियों व विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन प्रतियोगिता के राष्ट्रीय सहसंयोजक विमल गुनेचा, व वरिष्ठ प्रशिक्षक रमेश काण्डपाल ने किया।